मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

शाबर मन्त्र-संग्रह

भाग-१

मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति । गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र । ईश्वरो वाचा ।
मेरी भक्ति । गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र । ईश्वरो वाचा ।

शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति । गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र । ईश्वरो वाचा ।
मेरी भक्ति । गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र । ईश्वरो वाचा ।

(नवाँ भाग)

सम्पादक

श्री ऋतशील शर्मा, एम० ए०

प्रकाशक

पं॰ देवीदत्त शुक्ल स्मारक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
प्रयाग—6

• **प्रकाशक**
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग,
प्रयाग-राज-२११००६ (उ०प्र०)

• **दूसरा संस्करण**

माघ पूर्णिमा, २०५६ वि० - २० फरवरी, २०००

• मूल्य 64०० रु०

• सर्वाधिकार सुरक्षित

• **मुद्रक**
इण्डियन आफसेट प्रिंटर्स 136, विवेकानन्द मार्ग
इलाहाबाद दूरभाष : 2402859

दो शब्द

'शाबर-मन्त्र-संग्रह' प्रकाशित करने का हमारा मुख्य उद्देश्य यह था कि 'शाबर - मन्त्र - विद्या' पर शोधात्मक एवं प्रामाणिक साहित्य जिज्ञासुओं को उपलब्ध हो। हमारे लिए यह अत्यन्त सन्तोष की बात है कि आज 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' का नवाँ भाग प्रकाशित हो रहा है। उ. प्र., बिहार, म. प्र., राजस्थान, महा - राष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, बङ्गाल, गुजरात, पञ्जाब आदि प्रायः सभी प्रदेशों में प्रचलित 'शाबर मन्त्र' अब तक प्रकाशित ९ भागों में संग्रहीत हो चुके हैं। 'दसवें भाग' के लिए भी कुछ सामग्री मिल चुकी है। शीघ्र ही उसका कार्य भी प्रारम्भ होगा।

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ९ के लिए आदरणीय श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह जी ने हमें विशेष सहयोग दिया है। उन्होंने हमारे पास बहुत परिश्रम से 'वृहत् शाबर-मन्त्र-संग्रह' तैयार करके भेजा। हम उनके हृदय से आभारी हैं।

'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग १० के लिए भी श्रीयुत शाह जी ने बहुत उपयोगी सामग्री भेजी है, जिसमें आपने 'शाबर-यन्त्र-विद्या' पर विस्तार से प्रकाश डाला है। श्रीयुत भूपेन्द्रदत्त जी ने भी 'शाबर-यन्त्र-विद्या' सम्बन्धी कुछ अच्छे प्रयोग भेजे हैं, जिन्हें हम दसवें भाग में प्रकाशित कर रहे हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि श्री शाह जी जैसे अनेक लेखक बन्धुओं ने निःस्वार्थ परिश्रम किया है। सभी लेखकों, प्रस्तुत-कर्त्ताओं का एक-मात्र उद्देश्य यही है कि 'शाबर - मन्त्र - विद्या' का प्रामाणिक साहित्य जन-साधारण के समक्ष प्रस्तुत हो और 'शाबर-मन्त्र-विद्या' का विकास हो। जामनगर (गुजरात) से श्री शाह जी ने अभी अपने एक पत्र द्वारा हमें सूचित किया है कि श्रीकादिर बापू जी ने 'इस्लामी

शाबर - मन्त्र - विद्या' पर विस्तार से लिखने का आश्वासन दिया है। यही नहीं, श्री शाह जी व उनके कुछ सहयोगी मित्र - गण 'शाबर टोटकों' पर भी शोध-कार्य कर रहे हैं।

अस्तु ! निःसन्देह यह ईश्वर की अनुकम्पा है, जो आज 'शाबर-मन्त्र-विद्या' का विशाल प्रामाणिक साहित्य हमारे लिए उपलब्ध हो रहा है। सभी बन्धुओं का यह कर्तव्य है कि उनके पास 'शाबर-मन्त्र-विद्या' - विषयक जो भी जानकारी हो, उसे प्रकाशनार्थ भेजें। हमें विश्वास है कि इस प्रकार धीरे-धीरे 'शाबर-मन्त्र-विद्या' का शोध-पूर्ण स्वरूप प्रस्तुत होगा और पूरे समाज का कल्याण होगा। अगले 'दसवें भाग' में अभी तक प्रकाशित सभी मन्त्रों की विस्तृत सूची क्रम - वार प्रकाशित होगी, जिससे उक्त बातों की सत्यता स्वतः सिद्ध हो जाएगी और 'शाबर-मन्त्र-विद्या' के शोध का कार्य विधि-वत् प्रारम्भ होगा।

'चण्डी-कार्यालय', अलोपी देवी मार्ग
प्रयाग-राज (उ. प्र.)–२११००६

व्रतशील शर्मा

अनुक्रम

दो शब्द ... ३

१ अनुभूत शाबर मन्त्र ... १२

❀ श्री धर्मवीर शास्त्री, बहादुरगढ़, रोहतक (हरियाणा)

[१ भूतादि भगाने का अनुभूत मन्त्र, २ मन्त्र चौकी नाहरसिंह की]

२ शिव-शाबर ... १३

❀ पं. रामशङ्कर उपाध्याय, रैका, आथर, बक्सर (बिहार)

[१ सर्प-विष-हरण मन्त्र, २ रक्षा-मन्त्र, ३ नजर, भूत एवं रोग-निवारण मन्त्र]

३ शाबर मन्त्र के प्रयोग ... १५

❀ पं. ओङ्कारप्रसाद शुक्ल, जैतहरी, शहडोल (म. प्र.)

[१ झाड़ - फूँक के मन्त्र, २ बिच्छू झाड़ने हेतु मन्त्र, ३ सर्प - विष झाड़ने का मन्त्र, ४ नजर झाड़ने का मन्त्र]

४ छत्तीसगढ़ के अनुभूत शाबर मन्त्र ... १७

❀ श्री रामकृष्ण कुमार, एस. ई. सी. एल. कोरबा (म. प्र.)

[१ टोना झारने के मन्त्र, २ टोना लगाने का मन्त्र, ३ भूत - प्रेत बाँधने के मन्त्र, ४ बैरी - नाशन मन्त्र, ५ शत्रु-स्तम्भन मन्त्र, ६ शत्रु - पीड़ा - कारक मन्त्र, ७ गर्भ-स्तम्भन मन्त्र, ८ टोना झारने का मन्त्र]

५ महा-काली शाबर मन्त्र ... २२

❀ श्री रामकृष्ण कुमार, कोरबा (म. प्र.)

६ शाबर मन्त्र-जाल ... २६

॥ श्री बचुभाई जोशी, जाम मानवड़ (गुजरात)

[१ प्रवास में सुविधा पाने के लिए, २ आधा-शीशी-निवारण, ३ नेत्र - रोग का शमन, ४ अर्श-रोग का निवारण]

७ असावरी देवी का शाबर मन्त्र ... २८

॥ श्री सुधीरकुमार, चकिया, बेगूसराय (बिहार)

८ भोपा बाबा की कृपा से प्राप्त शाबर मन्त्र ३०

॥ श्री अशोककुमार वर्मा, सीतारामपुरी दीदा-मोरी, जयपुर

[१ कीलनी, २ बन्ध, ३ मशान - कीलन, ४ कीलनी, ५ कार्य - सिद्धि, ६ शरीर - रक्षा, ७ रक्षा, ८ इत्र-मोहिनी]

९ किसान बन्धुओं के लिए मन्त्र व टोटके ३३

॥ श्री अनिल गोविन्द बोकील, गोंधलेनगर, हडपसर, पुणे

[१ उत्तम खेती के लिए मन्त्र, २ विघ्नों का निवारण, ३ गाय की चोरी होने पर, ४ सर्प-भय का निवारण, ५ चोर-भय का निवारण, ६ धन - धान्य की समृद्धि के लिए, ७ पागल कुत्ते का विष-निवारण, ८ नाथ-पन्थीय टोटके]

१० जिज्ञासु के पत्र (१३ प्रश्न-उत्तर) ... ३७

११ शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ८ (शुद्धि-पत्र)··· ३९

१२ शाबर-मन्त्र-संग्रह ... ४०

॥ पं. रामशरण शर्मा, २०९ मकतूलपुरी, रुड़की, हरिद्वार

[१ शाबर-मन्त्रों के प्रकाशन की सार्थकता, २ शङ्का-

समाधान, ३ चमत्कारी महा - काली सिद्ध अनुभूत मन्त्र, ४ सङ्कट - निवारक काली - मन्त्र, ५ गुप्त त्रिकाल-दर्शी देवी-मन्त्र]

१३ नाथ-पन्थीय तत्त्व-ज्ञान ... ४६

❋ श्री अनिलगोविन्द बोकील, हडपसर, पुणे (महा-राष्ट्र)

१४ सिद्ध शाबर मन्त्र ... ५१

❋ पं. रामशङ्कर उपाध्याय, रैका, आथर, बक्सर (बिहार)

[१ यात्रा की सफलता के लिए, २ यात्रा के गन्तव्य स्थान में सुविधा के लिए, ३ कार्य की सफलता के लिए, ४ भण्डार अक्षय करने के लिए, ५ गृह - रक्षा के लिए, ६ भूत-प्रेत से रक्षा के लिए, ७ कारा-मुक्ति के लिए]

१५ श्रीहनुमत जञ्जीरा ... ५४

❋ नाथजी दीपकनाथ मनसुखनाथ मालिया हटीना जूनागढ़

१६ बृहत् शाबर-मन्त्र-संग्रह ... ५६

❋ श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह, जामनगर (गुजरात)

[१ शिशु-रोग-निवारक 'श्रीराम-रक्षा-झारा' २ महमदा पीर के चढ़ाव का मन्त्र, ३ मुहम्मदा पीर साधने का मन्त्र, ४ मुहम्मदा पीर का हाजरात का मन्त्र, ५ हजरत या हाजरात का इस्लामी शाबर तेल-दर्शन मन्त्र, ६ पीर विरहना का मन्त्र-प्रयोग, ७ विरहना पीर का संरक्षण-मन्त्र, ८ 'संरक्षण' या 'सम्वर्धन' हेतु सर्व-कार्य-साधक जञ्जीरा, ९ सर्व-कार्य - सिद्धि हेतु सर्व - कार्य - साधक जञ्जीरा, १० ऋद्धि-सिद्धि का मन्त्र, ११ वीर-सिद्धि का मन्त्र, १२ नाहरसिंह वीर का मन्त्र, १३ श्रीज्वाली - मुखी

देवी का मन्त्र, १४ श्रीनील - वर्णी काली का मन्त्र, १५ श्रीकाली का चेटक मन्त्र, १६ नौकरी या जीविका प्राप्त करने का मन्त्र, १७ व्यापार - वर्धक मन्त्र, १८ व्यापार - मन्दी को दूर करने का मन्त्र, १९ व्यापार के बन्धन को दूर करने का मन्त्र, २० मोहिनी मन्त्र, २१ मोहिनी तिलक - मन्त्र, २२ तैल से मोहन वशीकरण, २३ गुड़ मोहन या आकर्षण, २४ लौंग से मोहन और वशीकरण, २५ सुपारी द्वारा वशीकरण, २६ पान द्वारा वशीकरण, २७ स्व-भोजन द्वारा वशीकरण, २८ भूतनाथ का वशीकरण मन्त्र, २९ प्रेत - वशीकरण मन्त्र, ३० खाने-पीने की वस्तुओं से वशीकरण, ३१ विवाह के प्रयोग (क) मनो-वाञ्छित पति-प्राप्ति के प्रयोग, (ख) कन्या की शादी में रुकावट को दूर करने का मन्त्र, ३२ शत्रु को पछाड़ने के मूठि का मन्त्र, ३३ पानी के ऊपर चलने का मन्त्र, ३४ गुरु - दर्शन का मन्त्र, ३५ मुकदमों में विजय - प्राप्ति का मन्त्र, ३६ रोग - आपत्ति - निवारक मन्त्र, ३७ सर्व-विघ्न-हरण मन्त्र, ३८ क्रोध-शान्ति-मन्त्र, ३९ दैवी-प्रकोप की शान्ति के लिए मन्त्र, ४० गृह-बाधा-निवारक मन्त्र, ४१ ग्रह-दोष-निवारक मन्त्र, ४२ सर्व-सुरक्षा-मन्त्र, ४३ वन-वासी सुरक्षा-मन्त्र, ४४ किए-कराए को उतारने का मन्त्र, ४५ कु-कृत्या - शान्ति - मन्त्र, ४६ अभिचार - कर्म से मुक्ति - प्राप्ति का मन्त्र, ४७ रोग - निवारक शाबर-मन्त्र, ४८ नजर उतारने का मन्त्र, ४९ नजर बाँधने का मन्त्र, ५० सर्व-टोना-रोग-निवारक मन्त्र, ५१ जादू - प्रभाव दूर करने का मन्त्र, ५२ गर्भ गिराने, अण्ड - वृद्धि, साँप भगाने का मन्त्र, ५३ कखराई, अदीठ, कनफेर, बद, कण्ठ-माला, दाढ़ - शूल, डहरु, ताप - तिल्ली झारने का मन्त्र, ५४ डमरु पसली - वायु झारने का मन्त्र,

५५ जानुवा पसली और डमरु बाई का मन्त्र, ५६ पसली डबका मन्त्र, ५७ नहरुवा मिटाने का मन्त्र, ५८ गठिया अथवा वात - वेदना - निवारण, ५९ शूल-रोग-नाशक मन्त्र, ६० सर्व - शूल - नाशक मन्त्र, ६१ सर्व - ज्वर - नाशक मन्त्र ˙ ६२ भूत-ज्वर-नाशक मन्त्र, ६३ स्वयं ज्वर - ग्रस्त के लिए करने का मन्त्र, ६४ ज्वर - निवारण का विशेष मन्त्र, ६५ ज्वर-निवारण के दो विशेष मन्त्र ६६ दन्त-पीड़ा झारने का मन्त्र, ६७ डाढ़ के दर्द का मन्त्र, ६८ दाँत की व्यथा झारने का मन्त्र, ६९ दाँतों का दर्द दूर करने का मन्त्र, ७० डाढ़ की पीड़ा का मन्त्र, ७१ नेत्र-रोग-निवारक प्रयोग, आँख का फूला काटने का मन्त्र, उठी आँख झारने का मन्त्र, नेत्र-पीड़ा-हारक मन्त्र, नेत्र-पीड़ा-निवारक मन्त्र, ७२ मस्तक-पीड़ा-निवारक मन्त्र, ७३ शिर-शूल-निवारक मन्त्र, ७४ आधा - शीशी का मन्त्र, ७५ अध-कपारी-नाशक मन्त्र, ७६ कर्ण-पीड़ा-निवारक मन्त्र, ७७ कण्ठ-वेल-निवारण मन्त्र, ७८ कखलाई - निवारक मन्त्र, ७९ कमर - पीड़ा - निवारक मन्त्र, ८० पीलिया या सुखडा रोग - निवारण मन्त्र, ८१ शिशु - रोग (पेट-पीड़ा, ज्वर, दस्त और खाँसी) निवारक मन्त्र, ८२ नकसीर रोकने का मन्त्र, ८३ दाद झारने का मन्त्र, ८४ ममरखी झारने का मन्त्र, ८५ पेट के दर्द को मिटाने का मन्त्र, ८६ घाव की पीड़ा मिटाने का मन्त्र, ८७ अदीठ का मन्त्र, ८८ 'वाला' अथवा 'बाला' का मन्त्र, ८९ निनाई का मन्त्र, ९० रतौंधी झारने का मन्त्र, ९१ थनैली झारने का मन्त्र, ९२ रजो-दोष-निवारण मन्त्र, ९३ सिया का मन्त्र, ९४ बवासीर मिटाने का मन्त्र, ९५ मृगी का मन्त्र, ९६ मद्य वाय का मन्त्र, ९७ रोधन वायु का मन्त्र, ९८ हूक झारने का मन्त्र, ९९ सब प्रकार के जहर

को उतारने का मन्त्र, १०० सर्प का विष उतारने का मन्त्र, १०१ सर्प खोलने का मन्त्र, १०२ सर्प को भगाने का मन्त्र, १०३ सर्प-विष को झारने का मन्त्र, १०४ बिच्छू काटे का मन्त्र, १०५ बिच्छू झाड़ने का मन्त्र, १०६ बिच्छू झारने का मन्त्र, १०७ पागल कुत्ते का विष झारने का मन्त्र, १०८ भूत - प्रेतादिक को दूर करने का मन्त्र, प्रेतिनी या चुड़ैल भगाने का मन्त्र, १०९ डायन की नजर झारने का मन्त्र, ११० डाकिनी साधने का मन्त्र, १११ अग्नि-स्तम्भन-मन्त्र, ११२ अग्नि को शीतल करने का मन्त्र, ११३ अगिया वैताल का मन्त्र या अग्नि प्रगट करने का मन्त्र]

१७ शाबर-मन्त्र-साधना-प्रयोग ... १४२

❀ पं. भूपेन्द्रदत्त शर्मा, नदी मार्ग, मुजफ्फरपुर (उ. प्र.)

[शाबर मन्त्रों की सीमा, शास्त्रों में 'शाबर - मन्त्र-साधना' के प्रमाण, एक स्पष्टीकरण, 'शाबर मन्त्र' जाग्रत करने की विशेष विधि, १ हनुमान के अखाड़े का वीर मन्त्र, २ विद्या - प्राप्ति - मन्त्र, ३ कर्णेश्वरी मन्त्र, ४ सर्व - कार्य - साधक काली-मन्त्र, ५ डमरु-वादन - मन्त्र, ६ कारण अघोर मन्त्र, ७ भूत-प्रेत-झाड़ा-मन्त्र, ८ ज्वर - नाशक मन्त्र, ९ अग्नि-शमन-मन्त्र, १० दूध-वृद्धि-मन्त्र, ११ भूतादि को मारने का मन्त्र, १२ गुप्त बात जानने का मन्त्र, १३ मन्त्र, १४ मन्त्र, १५ हनुमान का शाबरी मन्त्र, १६ शत्रु को पीड़ित करना, १७ कठिन कार्य पूरा करने के लिए, १८ अङ्क-आकर्षण मन्त्र, १९ शत्रु-मारण मन्त्र, २० जोड़-तोड़ का शाबरी मन्त्र, २१ सर्व-कार्य-सिद्धि हेतु महा-काल भैरव मन्त्र]

१८ भूत-प्रेत-टोना झारने के मन्त्र ... १५२

❀ श्री अरुणकुमार मिश्र, मलसा, गाजीपुर (उ. प्र.)

[१ पृथ्वी तथा देह बाँधने का मन्त्र, २ आसन बाँधने का मन्त्र, ३ बाधा जानने का मन्त्र, ४ भूत बकराने का मन्त्र, ५ भूत बाँधने का मन्त्र, ६ सकल-कष्ट-निवारण-मन्त्र, ७ डायन-भूत-ब्रह्म आदि को झारने का मन्त्र, ८ टोना झारने का मन्त्र, ९ भगवती काली की कृपा-प्राप्ति का मन्त्र]

१९ कुछ अन्य असावरी शाबर मन्त्र ... १५५

❀ श्री सुधीरकुमार, चकिया, बेगूसराय (बिहार)

[१ गाठ हाँकने का मन्त्र, २ भूत पकड़ने का असावरी शाबर मन्त्र]

२० शाबर-विद्वेषण मन्त्र ... १५७

❀ श्री महावीरप्रसाद पोद्दार, वारा पलासी, दुमका (बिहार)

२१ जिज्ञासाएँ ... १५९

२२ नजर, बुखार में राम-बाण : शाबर ... १६०

❀ श्री कृष्णप्रताप सिंह, वाड्रफनगर, सरगुजा (म. प्र.)

अनुभूत शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री धर्मवीर शास्त्री
भगवती भवन, ग्राम- कसार, पो.-बहादुरगढ़, रोहतक (हरियाणा)

१. भूतादि भगाने का अनुभूत मन्त्र

ॐ गुरु जी ! काला भैरू क्या करे ? मरा मसान सेवे । मरा मसान से के क्या करे ? लाम्ग को - लपट को, काचे को - कलवे को । झाँप को - झपट को, भूत को - प्रेत को ! जिन्द को - डाकन को, ताल को - बेताल को । पेट की पीड़ा, माथे की मथवा—३६ रोग को दफा करे । श्री-नाथ जी का चकरु घेर घाले । हनूमान का पर्चा । छोड़ डङ्कनी पूत पराया । शब्द साँचा, पिण्ड काचा । चलो मन्त्र, ईश्वर वाचा ।

विधि : उक्त मन्त्र महात्मा लक्ष्मण गिरि का बताया हुआ है और मेरे द्वारा अनुभूत है। शनिवार की रात्रि को १२ बजे, श्मशान में, दीपक जला कर उस पर फूल-बताशे-धूप इत्यादि के द्वारा भगवान् भैरवनाथ की पूजा करे। फिर उक्त मन्त्र का मात्र २१ बार जप करे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। मन्त्र में वर्णित कार्यों के लिए प्रयोग करे।

२. मन्त्र चौकी नाहरसिंह की

ॐ नमो नारसिंह, नारी का जाया । याद किया, सो जल्दी आया । पाँच पान का बीड़ा, मद्य की धार । चल-चल नाहरसिंह, कहाँ लगाई एती बार ? देसुँ केसर कूकडो मुर्गा की ताज । देसुँ मध की धार । आरोधा आया नहीं, कहाँ लगाई एती वार ? देसुं नारसिंह तो तेरा किया अमुक का घट-पिण्ड बाँध, मेरे हाथ दीया । मारता का हाथ बाँध,

 (शेष पृष्ठ १४ पर)

शिव-साबर

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' पं. रामशङ्कर उपाध्याय
ग्राम रैका, पो. आथर, जि. बक्सर (बिहार)

१. सर्प-विष-हरण मन्त्र

गौरा खेती, शिव की बारी। महादेव तेरी रखवारी। दाव चलावे, दाव बाँधे। पाव चलावे, पाव बाँधे। तलवार चलावे, धार बाँधे। अखाड चलावे, जवान बाँधे।

मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। दोहाई नरसिंह, दोहाई गौरा पार्वती की, लाख दोहाई, हो गुरु बङ्गाली !

विधि : सिद्ध योग में १०८ बार उक्त मन्त्र का जप कर, धूप से हवन कर, सिद्ध कर ले। आवश्यकता होने पर मन्त्र पढ़ते हुए नीम की टहनी या हाथ से ही झारे।

२. रक्षा-मन्त्र

ऐठक बाँधो, बैठक बाँधो, बाँधो भौंर लिलारी। चार कोन पृथ्वी बाँधो, दुखिया के दुख बाँधो, बाँधो दसो दुआरी। काली कमल मेघाली, रात सरफा टोना, चोरहीं बघा बराइं चार, जल बराईं, थल बराईं, बराइं आपन काया। निमुठ हाथ धरती बाँधो, ओ आदित्य की दाया। लोहा की कोठरी, बज्जर दुआर। ओह में राखी, कारणी के पिण्ड प्राण। ईश्वर महादेव, गौरा पार्वती की दुहाई। सत्-गुरु के बन्दे पाँव, हे गुरु प्रताप तुम्हार।

विधि : पर्व-योग में उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर हवन कर दे। सिद्ध हो जायगा। तब रोगी (दैहिक, दैविक, भौतिक) को झारे, शीघ्र लाभ होगा।

३. नजर, भूत एवं रोग-निवारण मन्त्र

गुरु सार, गुरु सार। गुरु तन्त्र - मन्त्र, गुरु अलख निरञ्जन। गुरु बिना होम-जाप ना कीजै, श्याम दिया ना दीजै। गुरु बनाए बड़ा भगत के, गुरु-सेवा ना चूको। गुरु के होखे पाँव-पनहिया, पँवि लागल जाऊँ। जहाँ गुरु मोरे, तहाँ करो तरुवर छाँव। गुरु के होखे फूल पहाड़, गुरु मोर देले विद्या-भण्डार। असी कोस, चौरासी डाइन। मारो डाइन, फारो पेट। मोरा गुन से नाहीं भेंट। तोर गुन राई - छाई, मोर गुन एह बेरा से फेल खाई। यहाँ के विद्या ना, कामरू - कामाच्छा के विद्या, नैना जोगिनी के सीख। सत्-गुरु के बन्दे पाँव, हे गुरु! सीख तोहार।

विधि : उक्त मन्त्र को पहले कण्ठस्थ कर सिद्ध पर्व में हवन करे। मन्त्र सिद्ध होगा। तब मन्त्र से अभिमन्त्रित विभूति लगा दे।

(पृष्ठ १२ का शेष)

बोलता की जीभ बाँध। झाँकता का नैन बाँध, हीयाबू का ककड़ो बाँध। बोटी-बोटी बाँध, पकड़ लटी पछाड़ मार! मेरा पग तले ला पछाड़। चलता देसुँ केसर कूकड़ो, उतरता देसुँ मध की धार। इतना दे जब उतर जो खोल जो घोर धार हमारा। उतारा उतर जो और उतारा उतरे, तो नारसिंह तू सहीची डाल। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि : मुर्गा का केसर और गुग्गल दोनों को पीसकर चने प्रमाण गोली बनाए और पूजन के समय आग पर रखे। बताशे, पान के ५ बीड़े, लौंग, गरी, इलायची, सुपारी, दीपक के आगे नैवेद्य के रूप में रखे। १०७ बार उक्त मन्त्र का जप करे। ऐसा ७ दिन करे। होली-दीवाली-ग्रहण में भी जप करे।

शाबर मन्त्र के प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० ओङ्कारप्रसाद शुक्ल
मु०-पो० जैतहरी, जिला शहडोल (म. प्र.)–४८४३३०

१. झाड़-फूँक के मन्त्र

(१) जै जगत्-जननी माता झाल देवी ! वीर बजरङ्ग बली की दुहाई । दुई पद और आधा, सब काम किताब से ज्यादा । पार्वती माता के अढ़ी पद-विद्या । आज मेरा फूके, मेरे गुरू जी का फूको । जब फूकू, तब जागे ।

(२) हंस गुरू बानो, जे बानो लहकुटी बानों । तोर कोइली, डेढ़ बिहाती । धन-धन तुम्हारे गुरू जी का छाती । तुम्हारे झारे से घूमे हाथी । हाँक परो बोनो गुरू जी के इस पार पारवती के नाम कुटी । कुटी अइज्ञा ।

२. बिच्छू झाड़ने हेतु मन्त्र

काली गाय, लुटियारी पूँछी । तुम्हारे भाठा में एकीस बीछी । सोन का बीछी, रूप का आरा । चौसठ कोस ले, विष मा लाए । उतर विष धारा के धारा हाँक परे । इस गरुड़ जी का चित्त करो, सम्हाल के ।

३. सर्प-विष झाड़ने का मन्त्र

(१) आठ रकम के नाम, सोलह रकम का झाड़ । बारह किसम का विद्या, तेरह किसम का हाक—कुवारी काम । चण्डी-नरसिंहनाथ के नाग - नागिन, सरी नारा-

यण के सती - सबरिन। आज मेरो फूका, माँ आबिस हो जाय।

(२) ऊच गिरी पर्वत, धवल गिरी सार। ऐन सरपा, करेन विचार। मारेव थापड़, उतारो विष। उतर विष माटी मिस, आगिन के तिरन। गुरू जी का मन्तर। जब फूको, तब जाय।

४. नजर झाड़ने का मन्त्र

आसन बाँधो, पासन बाँधो। बाँधो घर-द्वार। तुम्हरी चरण से सब कुछ बाँधो, बाँधो सारे संसार। पारवती माता का आन्दी पद, विद्या से हर चीज का बाँधो। आज मेरा फूके, कारण कसरहा नजर-डीठ-भूत-प्रेत-मरी मशान उतर जा, उतर जा।

विधि : उक्त सभी मन्त्र सम्भलपुर (उड़ीसा) के क्षेत्र में सँपेरों के हैं। 'नाग - पञ्चमी' के दिन २१ 'दीपक' जलाकर, उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर जागृत करना चाहिए एवं ७ नारियल माँ दुर्गा-माता पार्वती को चढ़ाकर 'प्रसाद' बाँटना चाहिए। फिर झाड़ना-फूंकना चाहिए।

छत्तीसगढ़ के अनुभूत शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण कुमार
गृह सं./बी-३०, डी. कैम्प, एस. ई. सी. एल., कोरबा (म. प्र.)

प्रस्तुत शाबर मन्त्र अनुभूत हैं और अल्प मात्रा में जपने पर ही सिद्ध हो जाते हैं। इन मन्त्रों को सिद्ध करने के लिए नव-रात्रि, दीपावली, होली, ग्रहण, अमावास्या आदि पर्व उपयुक्त माने गए हैं। इन मन्त्रों को सिद्ध करने के पहले 'गुरु - स्वार्थ साधन मन्त्र' और 'शरीर-रक्षा - मन्त्र' को जप लेना चाहिए, तभी इनमें सफलता मिलती है। इनकी विधियाँ 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के विभिन्न खण्डों में प्रकाशित हुई हैं। यहाँ पर केवल 'गुरु-स्थापना-मन्त्र' और 'शरीर-रक्षा-मन्त्र' प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो छत्तीसगढ़ में प्रचलित हैं। यथा—

गुरु-स्थापना-मन्त्र : साधना प्रारम्भ के पहले एक पाँच बत्ती-वाला दीपक जला कर निम्न मन्त्र को सात बार पढ़ें—

गुरू दिन गुरू बाती, गुरू सहे सारी राती।
वासतीक दीवना बार के, गुरू के उतारौं आरती॥

शरीर-रक्षा-मन्त्र : ॐ नमो आदेश गुरू का। जय हनुमान, वीर महान। मैं करथ हौं तोला प्रनाम, भूत-प्रेत-मरी मसान। भाग जाय, तोर सुन के नाम। मोर शरीर के रक्षया करिबे, नहीं तो सीता मैया के सय्या पर पग ला धरबे! मोर फूकें। मोर गुरू के फूकें, गुरू कौन ? गौरा-महा-देव के फूकें। जा रे शरीर बँधा जा।

विधि— उक्त मन्त्र को ग्यारह बार पढ़कर, अपने चारों ओर एक गोल घेरा बना ले। इससे साधना में सभी विघ्नों से साधक की रक्षा होती है।

१. टोना झारने के मन्त्र

(१) मन्त्रा-तन्त्रा की ऐसी - तैंसी, पारबती के मन्त्रा कैसी। जिहाँ पठाऊँ, तिहाँ तैं जाय, फोर करेजा भीतर

खाय। काली कमाख्या का नाम है, पार्वती का काम है। जा रे ! टोनही के टोना जादू पाँगन होखे तो फिर जाबे। मोर फूकें, मोर गुरू के फूकें। मोर गुरू कौन ? महा-देव पारबती के फूकें। जा माढ़ जा।

विधि—नीम की टहनी या मोर-पङ्ख से सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर झारने से नजर, टोना, डीठ आदि दूर हो जाते हैं।

(२) **कट-कट-कट-कट काली करे। काट करेजा भीतर खाय, जिहाँ मैं भेजों, तिहाँ तैं जाय। काली दुर्गा का नाम है, पार्वती का काम है। टोनही के टोना-विद्या पाँगन हावे, तो माढ़ जाबे। मोर फूकें। मोर गुरू के फूँकें। गौरा महा-देव के फूँकें। जा, फिर जा।**

विधि—उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित सरसों को पीड़ित व्यक्ति के ऊपर फेंकने से नजर, टोना आदि से मुक्ति मिल जाती है।

२. टोना लगाने का मन्त्र

अगर किसी शत्रु के ऊपर टोना लगाना हो, तो निम्न - लिखित मन्त्र को २१ बार नीबू के ऊपर पढ़कर चाकू से नीबू काटकर शत्रु के घर में फेंक दे। इससे शत्रु प्रताड़ित होगा। 'अमुक' की जगह शत्रु का नाम लेना चाहिए।

तन्त्र-मन्त्र की ऐसी - तैसी, पार्वती की मन्त्र वैसी। जिहाँ पठाऊँ, तिहाँ जाए। 'अमुक' का करेजा, फोर के खाय। काली दुर्गा का नाम है। सर्व-मङ्गला का काम है। मोर फूँकें, मोर गुरू के फूँकें। महा-देव पार्वती के फूँकें। जा, चघ जा।

३. भूत-प्रेत बाँधने के मन्त्र

(१) **बडका ताल के पेड़ माँ बँधाय जञ्जीरा। खाले माँ बाजे झाँझ-मँजीरा और बाजे तबला निशान। भाग-**

भाग रे भूत - मसान, पहुँचत है पञ्च-मुखा हनुमान। मोर फूँकें, मोर गुरू के फूँकें। गौरा महा-देव के फूँकें। जा रे, भूत बँधा जा।

(२) ऐठक बाँधो। बैठक बाँधो। आठ हाथ की भुइया बाँधो। बाँधो सकल शरीर। भूत आवे, भूत बाँधो। प्रेत आवे, प्रेत बाँधो। मरी मसान, चटिया बाँधो। मटिया आवे, मटिया बाँधो। बाँध देहे, फाँद देहे। लोहे की डोरी, शब्द का बन्धन। काकर बाँधे, गुरू के बाँधे। गुरू कौन ? महा-देव-पार्वती के बाँधे। जा रे, भूत बँधा जा।

(३) जल बाँधो, जलाजल बाँधो। जल के बाँधो पीरा। नौ नागर के राजा बाँधो, सोन के बाँधो जजीरा। भूत-प्रेत मसान बाँधो, बाँधो अपन शरीरा। काकर बाँधे, मोर गुरू के बाँधे। गुरू कौन ? गौरा-पार्वती के बाँधे। जा रे, भूत बँधा जा। दुहाई सतनाम कबीरदास जी की !

विधि—उक्त मन्त्रों को पहले १०८ बार 'जप' कर सिद्ध कर ले। 'प्रयोग' के समय सात बार भभूत पर पढ़कर फूंक मारे। इससे भूस-प्रेत आदि बँध जाते हैं।

४. बैरी-नाशन मन्त्र

पारबती-पारबती ! कथौं पारबती कहाँ से आए ? ऐसे मन्त्रा छोड़त हो पारबती दाई तोर, तो होय विहँचे······ अमुक······बैरी को खाय। खत्म करके मोर घर में आय, काली होके तैं पूजा खाय। वाचा ला चुकबे, तो महा-देव के त्रीशूल ला खाबे। दुहाई गुरू गोरखनाथ की।

विधि—(१) एक निम्बू, (२) एक नारियल, (३) चुटकी भर सिन्दूर, (४) काले कपड़े का टुकड़ा, (५) बबूल के सात काँटे। अमा-वास्या के दिन उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर ११ बार गूगुल की

धूप दे। फिर निम्बू पर शत्रु का नाम सिन्दूर से लिखकर, सात बार मन्त्र पढ़ते हुए बबूल का एक-एक काँटा निम्बू में चुभोते जाएँ। काँटों से युक्त इस निम्बू को काले कपड़े में बाँध कर श्मशान में गाड़ दे। नारियल और सिन्दूर को काली-मन्दिर में अर्पित कर दे। शत्रु का नाश होगा।

५. शत्रु-स्तम्भन मन्त्र

जल बाँधु, जल-वायु बाँधु। बाँधु जल के तीर। पाँचो काला कलवा बाँधों। बाँधु हनुमन्त वीर! सहदेव तेरी लाकड़ी, अर्जुन तेरो बाण। 'अमुक' की गति थाम दे, यति हनुमत की आन। शब्द साँचा—पिण्ड काँचा, मेरे गुरू का इल्म साँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। दुहाई गोरख-नाथ की।

विधि—एक मुट्ठी समूचे काले उड़दों पर उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर फूंक मारे। फिर उन्हें शत्रु के घर में या घर की दिशा में फेंक दे। शत्रु की गति-मति का स्तम्भन होगा। यदि इसे खोलना हो, तो प्रत्येक 'बाँधु' और 'थाम दे' के स्थान पर 'खोल दे' पढ़े। इसी मन्त्र से गिरते गर्भ को भी रोका जाता है, केवल 'अमुक की गति थाम दे' की जगह 'रावन रक्त तर थाम दे' पढ़ना चाहिए और काले डोरे पर सात बार यही मन्त्र पढ़कर गाँठ लगाकर स्त्री की कमर में बाँध देना चाहिए।

६. शत्रु-पीड़ा-कारक मन्त्र

वीर, वीर, महा - वीर! सात समुद्र का सोखा नीर, 'अमुका' के ऊपर चौकी चढ़े, हियो फोड़ चोटी चढ़े। साँस न आवे पड़यो रहे, काया माहि जीव रहे। लाल लंगोट, तेल-सिन्दूर-पूजा मांगे महा-वीर। अन्तर कपड़ा पर तेल-सिन्दूर, हजरत वीर की चौकी रहे। शब्द साँचा—पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। दुहाई रामचन्द्र की।

विधि—पहले किसी मङ्गलवार को हनुमान-मन्दिर में जाकर तेल, सिन्दूर, लाल फूल चढ़ाए। गुड़ का भोग लगाकर १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। प्रयोग के समय मङ्गलवार की आधी रात को उक्त मन्त्र द्वारा हनुमान जी को लाल वस्त्र, चने की दाल, गुड़ का भोग लगाए। फिर दूसरे लाल कपड़े में तेल, सिन्दूर से शत्रु का नाम लिखकर, 'अमुक' की जगह शत्रु का नाम बोलकर सात सुइयाँ कपड़े में चुभो दे। उस कपड़े को मिट्टी की छोटी-सी हाँड़ी में रखकर जमीन में गाड़ दे, तो शत्रु भारी कष्ट में रहेगा। जब अच्छा करना हो, तो जमीन से कपड़ा निकाले, सूई निकाल कर उसे धो डाले।

विशेष—उक्त मन्त्र की साधना करते समय स्त्री-सम्पर्क से दूर रहे, सत्य बोले, भूमि पर शयन करे, मांस-मदिरा का सेवन न करे। अन्यथा परिणाम उल्टा हो जाएगा।

७. गर्भ-स्तम्भन मन्त्र

गौरी गण्डा दे गई, ईश्वर दे गया वाचा। महा - देव थापा घर गया, शब्द भया सोचा। दथ त्रिया की चिन्ता, मेरी दश मांस। बाँधु बीस पाख, बाँधु उसका पैर। गर्भ खिसके, तो गुरू गोरखनाथ की दुहाई। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, सत्-नाम आदेश गुरू की।

विधि—सात बार जप कर कच्चे सूत का गण्डा बनाकर स्त्री की कमर में बाँध दे। गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है। परीक्षित है।

८. टोना झारने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू का। काया कलप कपाट, बज्र लङ्का उलट पलङ्का। पलट, दूर - दूर हट, टोना नजर। शब्द सांचा, फुरो मन्त्र--ईश्वरो वाचा। दुहाई गुरू गोरख-नाथ की ॐ।

विधि—एक कपड़े का पलीता बनाकर अलसी के तेल में भिगोकर काँसे की थाली में पानी भरकर उसके ऊपर पलीते को जलाए। तेल थाली में टपकेगा। १२ बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारे और थाली की थोड़ी-सी राख माथे पर लगा दे। टोने का प्रभाव दूर होगा।

महा-काली शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री आर० के० कुमार
गृह-सं. बी-३०, डी-कैम्प, एस. ई. सी. एल., कोरबा–४९५६७९ (म.प्र.)

['शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ७, पृष्ठ १२७ में प्रकाशित नजर-टोना, प्रेत - बाधा - निवारक मन्त्र की तरह ही निम्न-लिखित 'महा-काली शाबर मन्त्र' है, किन्तु 'विधि' और 'प्रयोग - विधि' में अन्तर है—प्रस्तुत-कर्त्ता]

मन्त्र : सात पूनम काल का, बारह बरस क्वाँर ।
एको देवी जानिए, चौदह भुवन - द्वार ।।१
द्वि - पक्षे निर्मलिए, तेरह देवन देव ।
अष्ट-भुजी परमेश्वरी, ग्यारह रुद्र देव ।।२
सोलह कला सम्पूर्णी, तीन नयन भरपूर ।
दसों द्वारी तू ही माँ, पाँचों बाजे नूर ।।३
नव-निधी षड-दर्शनी, पन्द्रह तिथी जान ।
चारों युग में काल का, कर कालो! कल्याण ।।४

यन्त्र :

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

सामग्री : १ काली-यन्त्र, २ चित्र, ३ भट-कटैया का फूल-७, ४ पीला कनेर फूल-५, ५ लौंग - ५, ६ इलायची - ५, ७ पञ्च - मेवा, ८ नीम्बू - ३, ९ सिन्दूर १ ग्राम, १० काले केवाँच के बीज - १०८, ११ दीपक, १२ अगर-बत्ती या धूप, १३ नारियल एक।

दिन/जप-संख्या/समय : होली, दीपावली, ग्रहण, नवरात्र, अमावास्या। १०८ बार। रात्रि १० बजे के बाद।

विधि : उक्त मन्त्र की साधना यदि भगवती काली के मन्दिर में की जाए, तो उत्तम फल होगा। वैसे एकान्त स्थान में या घर पर भी यह साधना कर सकते हैं। सर्व - प्रथम अपने सामने एक बाजोट (लकड़ी के पाटे) पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर 'श्रीकाली - यन्त्र' और 'चित्र' स्थापित करे। घी का चौ - मुखा दिया जलाए। पञ्चो-पचारों से पूजन करे। तब अष्ट - गन्ध से उक्त 'चौंतीसा यन्त्र' का निर्माण कर उसकी भी पञ्चोपचारों से पूजा करे। पूजन करते समय भट-कटैया और कनेर पुष्प को यन्त्र और चित्र को अर्पित करे। तीनों नीम्बुओं के ऊपर सिन्दूर का टीका या बिन्दी लगाए और उसे भी अर्पित करे। नारियल, पञ्च - मेवा, लौंग - इलायची का भोग लगाए, लेकिन इन सबसे पहले गणेश, गुरु और आत्म-रक्षा मन्त्र का पूजन और मन्त्र का जप आवश्यक है। 'काली शाबर - मन्त्र' को जपते समय हर बार एक-एक केवाँच का बीज भी काली-चित्र के सामने चढ़ाते रहें। जप की समाप्ति पर इसी मन्त्र की ग्यारह आहुतियाँ घी और गुग्गुल की दे। तत्पश्चात् एक नीम्बू काटकर उसमें अपनी अनामिका अँगुली का रक्त मिलाकर अग्नि में निचोड़े। हवन की राख, मेवा, नीम्बू, केवाँच के बीज और फूल को सँभाल कर रखे। नारियल और अगर-बत्ती को मन्दिर में चढ़ा दे तथा एक ब्राह्मण को भोजन कराए। प्रयोग के समय २१ बार मन्त्र का जप करे। प्रति - दिन उस मन्त्र का १०८ बार जप करते रहने से साधक की सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं एवं साधक धन - धान्य से परिपूर्ण रहता है। हर बाधा स्वतः दूर हो जाती है और साधक नीरोग तथा दीर्घायु होता है।

विभिन्न प्रयोग : उक्त मन्त्र से शत्रु-बाधा, भूत - प्रेत - बाधा, आर्थिक बाधा, ऋण - जाल, रोग, शारीरिक पीड़ा आदि को सरलता

से दूर कर सकते हैं। मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन, विद्वेषण आदि के लिए भी मन्त्र का प्रयोग किया जा सकता है। यथा –

१. **शत्रु-बाधा का निवारण :** अमावास्या के दिन १ नीम्बू पर सिन्दूर से शत्रु का नाम लिखे। २१ बार सात सुइयाँ उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर नीम्बू में चुभो दे। फिर उसे श्मशान में जाकर गाड़ दे और उस पर मद्य की धार दे। तीन दिनों में शत्रु - बाधा समाप्त होगी।

२. **मोहन :** उक्त मन्त्र से सिन्दूर और भस्म को मिलाकर ११ बार अभिमन्त्रित कर माथे पर तिलक लगा कर जिसे देखेंगे, वह आपके ऊपर मोहित हो जाएगा।

३. **वशीकरण :** पञ्च-मेवा में से थोड़ा - सा मेवा लेकर २१ बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। इसे जिस स्त्री या पुरुष को खिला-एँगे, वह आपके वशीभूत हो जाएगा।

४. **उच्चाटन :** भट - कटैया के फूल १, केवाँच - बीज और सिन्दूर के ऊपर ११ बार मन्त्र पढ़कर जिसके घर में फेंक देंगे, उसका उच्चाटन हो जाएगा।

५. **स्तम्भन :** हवन की भस्म, चिता की राख और ३ लौंग को २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ देंगे, उसका 'स्तम्भन' हो जाएगा।

६. **विद्वेषण :** श्मशान की राख, कलीहारी का फूल, ३ केवाँच के बीज पर २१ बार मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके एक काले कपड़े में बाँध कर शत्रु के आने-जाने के मार्ग में या घर के दरवाजे पर गाड़ दे। शत्रुओं में आपस में ही भयानक शत्रुता हो जाएगी।

७. **भूत-प्रेत-बाधा :** हवन की राख सात बार अभिमन्त्रित कर फूँक मारे तथा माथे पर टीका लगा दे। 'चौंतीसा यन्त्र' को भोज-पत्र पर बनाकर ताम्बे की ताबीज में भरकर पहना दे। भूत-प्रेत-बाधा सदा के लिए दूर हो जाएगी।

८. **आर्थिक बाधा-निवारण :** महा - काली यन्त्र के सामने घी का दीपक जलाकर उक्त मन्त्र का जप २१ दिनों तक २१ बार करे। आर्थिक बाधा दूर हो जाएगी।

९. शारीरिक पीड़ा, रोग - मुक्ति निवारण : भस्म को सात बार अभिमन्त्रित कर रोगी पर फूँक मारे तथा चौंसठ यन्त्र को अष्ट-गन्ध से भोज - पत्र पर लिखकर दे। रोग से मुक्ति मिल जाएगी।

विशेष : यदि उक्त मन्त्र के साथ निम्न मन्त्र का भी एक माला जप नित्य किया जाए, तो मन्त्र अधिक उग्र होकर कार्य करता है।

ॐ कङ्काली महा-काली, केलि-कलाभ्यां स्वाहा।

अनुरोध

जानकार महानुभावों से अनुरोध है कि 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के नौ भागों में प्रकाशित मन्त्रों के सम्बन्ध में यदि उन्हें कुछ विशेष बातें ज्ञात हों, तो उसे लिखकर प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करेंगे। साथ ही, यदि उनके पास अन्य अप्रकाशित 'शाबर-मन्त्र' हों, तो उनकी भी प्रतिलिपियाँ भेजने का अनुग्रह करेंगे, जिससे मन्त्र - विद्या के इस महत्त्व - पूर्ण अङ्ग पर शोध करनेवालों को कोई कमी प्रतीत न हो।

—सम्पादक

शाबर मन्त्र-जाल

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री बचुभाई जोषी
जाम मानवड़ (गुजरात)–३६०५१०

'शाबर'-शब्द 'शबर' से बना है। 'शबर' का अर्थ है—'किरात'। 'किरात'-वेष-धारी शिव जी के बनाए हुए मन्त्र 'शाबर-मन्त्र' कहलाते हैं। 'किरात' - वेष - धारी शिव जी और अर्जुन का युद्ध-प्रसङ्ग 'महाभारत' में वर्णित है। तभी से 'शाबर-मन्त्र' का प्रचलन हुआ। 'शाबर मन्त्र' में व्याकरण-दोष नहीं माना जाता और भाषा-शास्त्र के नियमों की सीमा से यह 'मन्त्र-जाल' परे है। यहाँ कुछ 'शाबर - मन्त्र' दिए जाते हैं, जो गौतम जी और श्रीहनुमान जी के हैं। आशा है कि इनसे पाठकों के ज्ञान में वृद्धि होगी।

'मन्त्र' प्रायः चार प्रकार के माने गए हैं—१ वैदिक, २ पौराणिक, ३ तान्त्रिक एवं ४ शाबर। चामत्कारिक फल - प्रधान 'डामर - मन्त्र' शाबर-मन्त्र की कोटि में माने जाते हैं। कलियुग के जीवों पर दया कर शिव जी ने 'शाबर मन्त्र' को कीलित नहीं किया। इसलिए अल्प साधना एवं प्रयास से ही ये मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं।

मन्त्र-साधना में गुरु-दीक्षा आवश्यक है। सम्प्रदाय - गत आचारों का पालन करना आवश्यक है।

(१) प्रवास में सुविधा पाने के लिए

साधक को किसी अपरिचित स्थान में रुकने का जब अवसर मिले और उसे ऐसा लगे कि 'मैं यहाँ कैसे सुविधा प्राप्त करूँ ? यहाँ मुझे तो कोई पहचानता भी नहीं !' तब सरलता से सुविधा पाने के लिए निम्न 'साबर-मन्त्र' का उपयोग किया जाता है। मन्त्र को उज्जीवित करने के लिए होली या दीपावली की रात्रि में तथा चन्द्र-सूर्य-ग्रहण के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप कर लेना चाहिए। इन पर्वों पर साधक को सदा प्रत्येक बार इतना ही जप करते रहना चाहिए, अन्यथा मन्त्र प्रसुप्त हो जाएगा और फल-प्रद नहीं होगा।

मन्त्र : गच्छ गौतम ! शीघ्र त्वं, ग्रामेषु नगरेषु च ।
अशनं वसनं चैव, ताम्बूलं तत्र कल्पय ।।

जहाँ साधक को ठहरना है, उस स्थान की सीमा में पहुँच कर उक्त मन्त्र को सात (७) बार पढ़े । मन्त्र पढ़ते समय सफेद दूर्वा के तीन छोटे टुकड़े हाथ में रखने चाहिए । सात बार मन्त्र पढ़कर दूर्वा के टुकड़ों को शिखा या बालों में उलझाए । ठहरने के स्थान पर सब सुविधा मिलने तक इन टुकड़ों को केशों में उलझा रहने दे । आपको यदि ऐसा लगे कि ठीक समय पर सफेद दूर्वा नहीं मिलेगी, तो उसे यात्रा और पर्यटन में अपने साथ ले जाए ।

(२) आधा-शीशी निवारण : बन में ब्याई अञ्जनी, कच्चे बन-फल खाय । हांक मारी हनुमन्त ने, इस पिण्ड से आधा-शीशी उतर जाय ।

उक्त मन्त्र का उच्चारण कर भस्म से झाड़े ।

(३) नेत्र - रोग का शमन : ॐ नमो वन बिनाई बानरी, जहाँ हनुवन्त आंखि पीड़ा कषावरि । गिहिया थनै लाइ चरिउ जाई भस्मन्तन । गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।

नेत्र पर हाथ फिराते हुए उक्त मन्त्र को सात बार फूंके ।

(४) अर्श-रोग का निवारण : ॐ काका कता कोरी कर्वा । ॐ करता से होय परसना । दशहूस प्रकटे खूनी बादी बवासीर न होय । मन्त्र जान के न बतावे द्वादश ब्रह्म-हत्या का पाप होय । लाख जप करे, तो उसके वश में न होय । शब्द सांचा, पिण्ड काचा । वो हनुमान का मन्त्र सांचा । फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।

रात्रि को रखे हुए जल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शौच-समय गुदा का प्रक्षालन करे, तो बवासीर नष्ट हो जाती है ।

असावरी देवी का शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सुधीरकुमार तर्कनिक
बरौनी थर्मल पावर स्टेशन, ग्राम चकिया, बेगूसराय (बिहार)

'शाबर' का एक विशेष अङ्ग 'असावरी देवी' है। इनको बिना पूजे 'शाबर' का काम पूरा होना कठिन हो जाता है। इसे लोग 'झुमरी शाबर' कहते हैं। यह 'झुमरी शाबर' भजन के ढङ्ग से धीमे स्वर में गाकर काम में लाया जाता है। महिलाएँ प्रायः इसे जाँता पीसते समय सीखती हैं और सिद्ध हो जाती हैं। 'धामी' अथवा 'ओझा' भी इस 'शाबर' का प्रयोग करते हैं। 'झुमरी शाबर' की अधीश्वरी असावरी देवी हैं। इनका पूजन विशेषतया 'नेपाल' में होता है। पहले 'चक्र-पूजन', फिर मन्त्र को पढ़ना – यह कार्य दिन में नहीं किया जाता। सबसे उत्तम समय है – दस बजे से बारह बजे रात्रि तक। इसी समय इसका प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा किसी को देवी का उत्पात लगा देना या देवी के उत्पात से किसी को छुड़ा देना, अनायास आग लगा देना, गाय-भैंस के बथान में दूध कम कर देना आदि अधिकाधिक कार्य देवी द्वारा किए जाते हैं।

'असावरी मन्त्र' को जाननेवाले जितना ही इसका अध्ययन करेंगे, उतना ही इसके प्रभाव को जान सकेंगे। वैसे इन सब कार्यों को योग्य गुरु से ही सीखना चाहिए।

असावरी शाबर मन्त्र : श्री देवी, काली देवी, बावन्ती देवी, दूनू मिल देवी, झूलना झुमरी, रिचार चिरूप, हसत कमल फूल के पटोर। एक दिस देवी काली, एक दिस बावन्ती देवी। बीच में सार-सावर के लागे डोरी। झुमरी देखने आए श्रीभगवती जगदम्बा भवानी, ज्वाला - मुखी देवी, अष्टाङ्गी दुर्गा, सहसर देवी। देखो, झुमरी गावे सारी निसा-राति। गीत सम्हारि मारि के चली मिरतुक

लोक। घर - घर खोजे सेवक, भगती करै—पुरावे देवी, काली देवी, बावन्ती देवी। रे रे सेवक! निर्भय से झुमरी साबर-सबद-बान, कमर कसि के चलावे बान। बेटा आवे हनुमन्त, भैरवनाथ धावे। ऐनी के बान्हो, डैनी को बान्हो। राखो ओ झाकै मूसक बान। लागे गुर्नी के गुन, उड़ावे देवी काली, देवी बावन्ती। देवी न ओसे विधना देवा, देवी नाम जा पर। मेरा नजरि हसन चलाए, तकरा पहिने मारे। भुजङ्गी देवी के दोहाय। जा पर मेरा नजरि, ताकर देवी करै रक्षा सम्हार। दोहाय देवी! काली देवी दोहाय, बावन्ती देवी दोहाय।

विधि—असावरी देवी अदूल फूल (गुड़हल) और मधुर नैवेद्य (मिठाई) से प्रसन्न होती हैं। कुमारी-भोजन कराए। प्रातः-सायं पूजन करे। सरल काठ या अन्य धूप आदि सभी उपचारों से असावरी देवी का पूजन करे। मारण, सम्मोहन, दूर गए आदमी को बुलाना या कोई भी कार्य इस 'झुमरी शाबर' द्वारा किया जा सकता है, किन्तु योग्य साधक ही इसका प्रयोग कर संकते हैं।

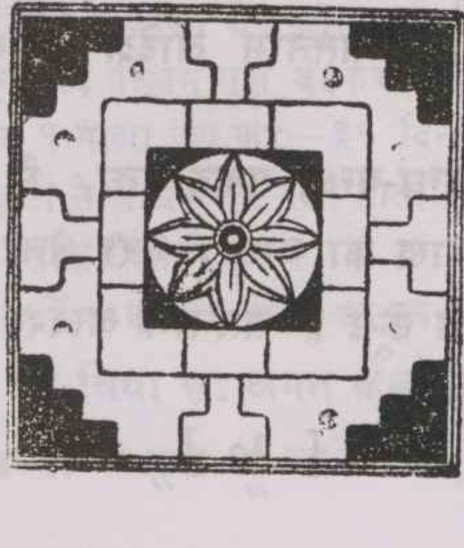

भोपा बाबा की कृपा से प्राप्त

शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : अशोककुमार वर्मा
बी-२२६, हल्दुन्या भवन, सीतारामपुरी दीदा की मोरी,
जयपुर (राजस्थान)-३०२००३

लुप्त-प्राय 'शाबर मन्त्र-विद्या' को आपने बेहद परिश्रम व लगन से नौ भागों में लगातार प्रकाशित कर इस परम्परा को जो संरक्षण दिया है, उससे सारे देश के पूज्य वृद्ध अनुभवी साधकों एवं जानकारों को बड़ा प्रोत्साहन मिला है। इसके लिए आपको एवं आपके सभी सहयोगियों को बारम्बार हार्दिक बधाई। पराम्बा से प्रार्थना है कि आपको सतत प्रेरणा एवं सफलता प्रदान करती रहें।

लगभग १५ वर्षों पूर्व कुछ 'शाबर मन्त्र' मुझे एक वयोवृद्ध साठ-वर्षीय भोपा बाबा से प्राप्त हुए थे, जो अब दिवङ्गत हो चुके हैं। उन 'शाबर' मन्त्रों को जन-कल्याण के लिए सर्व-प्रथम आपको प्रकाशनार्थ प्रेषित कर रहा हूँ।

शाबर 'कीलनी'-मन्त्रादि

१. कीलनी—धरती बांधूँ, अम्बर बांधूँ, बांधूँ कण्ठ कपाली, बोलता की जिह्वा बांधूँ। कण्ठ कोकला वाणी हमारा बांध्या जोरी करे, जबरी करे, उलट करे। सुलट करे, माता कङ्काली की करोड़ - करोड़ दुहाई फिरे। शब्द सांचा—पिण्ड काचा, सतनाम आदेश गुरू का, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

२. बन्ध—बन्ध-बन्ध, सकर बन्ध, मैं दिया धूल का बन्ध, गुरु दिया दाख का बन्ध। मेरा बन्ध खु-ट, तो वीर हनुमान का शीश टू-ट। सतनाम आदेश गुरु का, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

३. मशान-कीलन—लौह का कोट, ताम्बा का पयाण, मैं कीलूँ जागता मशान। हमारा कील्या उलट करें, सुलट करें, जोरी करें, जबरी करें। माता कङ्काली की करोड़-करोड़ दुहाई फिरे, शब्द सांचा, पिण्ड काचा, सतनाम आदेश गुरु का, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

४. कीलनी—भैं कीलूँ, भैंसा सर कीलूँ, कीलूँ अपनी काया, हमारा कील्या उलट करें, सुलट करें, जोरी करें, जबरी करें, माता कङ्काली की करोड़-करोड़ दुहाई फिरें, सत-नाम आदेश गुरु का, शब्द सांचा—पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

५. कार्य-सिद्धि—बांएँ हाथ भैंरू बसे, दाहिने वीर हनुमान। हृदय बीच दुर्गा बसे, मेरा मन का सारे काज। शब्द सांचा—पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

६. शरीर-रक्षा—धरती माता—आकाश पिता। रक्षा करें परमेश्वरी कालका! दुहाई महा-देव की।

७. रक्षा—बांएँ हुसैन, दाहिने नदी। पीठ पे अली, सर पे खुदा। तेरी पनाह, तेरी पनाह, तेरी पनाह।

विधि—क्रमाङ्क ६ के मन्त्र को प्रति-दिन प्रातः या रात्रि में पूर्व या उत्तर-मुख बैठकर १ माला जप करे—३१ दिनों तक।

क्रमाङ्क ७ के मन्त्र को पश्चिम-मुख बैठकर, अगर-बत्ती जलाकर, हकीक माला से नित्य १ माला जप करे—३१ दिनों तक। इन मन्त्रों की सिद्धि से सर्व-सङ्कटों से साधक की रक्षा होती है। विश्वास व धैर्य से ही सफलता और सिद्धि मिलती है।

८. इत्र-मोहिनी—काला भैंरू, बावन वीर, पर-त्रिया से कर दे सीर। पर-त्रिया छः अगन कँवारी, पर जोबन में लागे प्यारी। चम्पा के फूल जू आवे बास, घर का धणी

की छोड़ दे आस। कपड़ा से बाद भरावे, अङ्ग से अङ्ग मिलावे। तीजी घड़ी–तीजी शाद। अङ्ग से अङ्ग न मिलावे, तो माता कङ्काली की सेज पे काला भैंरू पग धरे। शब्द सांचा–पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—उक्त मन्त्र उग्र प्रकृति का है। वशीकरण में तत्काल कार्य करता है। परोपकार व धर्म के मार्ग हेतु इसकी साधना साहसी व्यक्ति ही करे। कामान्ध व्यक्ति दुरुपयोग करने का साहस न करे, दुष्परिणाम भुगतना पड़ेगा।

श्मशान में स्थित भैरव-मन्दिर में या श्मशान में चिता के पास बैठकर, रक्षा - विधान रचकर, मध्य रात्रि से श्रेष्ठ मुहूर्त में साधना करे। ९ दिनों तक ३०० जप करे।

पूजा-सामग्री : १ हिना इत्र की शीशी, जिसे नित्य अभिमन्त्रित किया जाएगा, २ चमेली की माला, ३ पञ्च-मेवा, ४ बाटी, ५ लौंग जोड़ा, ६ बताशा, ७ शराब, ८ धूप, ९ कलेजी बकरे की। यह सामग्री भैरव देव के लिए नित्य नौ दिनों तक अर्पित की जाएगी।

'हिना इत्र' सिद्ध होने के बाद सत्य-मार्ग या कार्य के लिए थोड़ा-सा इत्र रुई में लगाकर साध्या स्त्री के शरीर पर कहीं भी सावधानी से लगा दे।

विशेष : मन्त्र - संख्या १ से ५ तक की विधि व कार्य - उद्देश्य मेरे पास लिखे हुए नहीं हैं। अतः यदि किन्हीं पाठकों को इनके सम्बन्ध में ज्ञात हो, तो लोक-कल्याण हेतु प्रकाशित करवा दें।

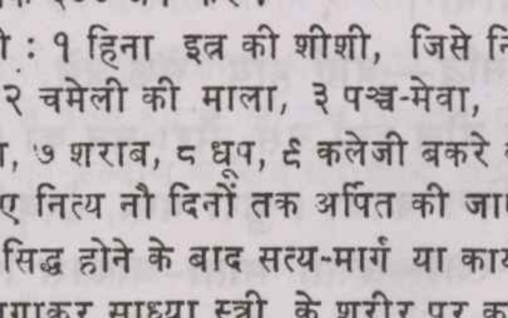

किसान बन्धुओं के लिए मन्त्र
व
टोटके

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री अनिल गोविन्द बोकील
१८/१ ड, गोंधलेनगर, हडपसर, पुणे–४११०२८

१. उत्तम खेती के लिए मन्त्र

ॐ नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । आनिल देवी । आगच्छ आगच्छ । साईं गोरखनाथ की द्वाही । गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति । चले मन्त्र, ईश्वरी वाचा । गुरू गोरख-नाथ का शब्द सच्चा ॥

विधि (१)—किसी भी शुभ मुहूर्त पर श्वेत गुञ्जा की जड़ प्राप्त कर, उसके ६ भाग करे। प्रत्येक पर उक्त मन्त्र का १०८ जप करे। साथ ही नव - नाथ - जप भी करे। 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८ में पृष्ठ ३१ पर यह मन्त्र दिया है। निम्न नव-नाथ-मन्त्र का जप भी कर सकते हैं—

गोरक्ष-जालन्दर-चर्पटाश्च, अडबङ्ग-कानिफ-मच्छिन्द्र-आद्याः ।
चौरङ्गी-रेवाणक-भर्त्रि-संज्ञा, भूम्यां बभूवुर्नव-नाथ-सिद्धाः ॥

अब सभी अभिमन्त्रित जड़ लेकर खेत में जाए। खेत के मध्य में एक जड़ गाड़ दे। फिर पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, आग्नेय, नैर्ऋत्य, वायव्य, ईशान आदि दिशाओं में भी एक-एक जड़ गाड़े। कुछ समय शान्त बैठकर नव-नाथों से प्रार्थना करे कि—"जीव-ब्रह्म-सेवा हेतु इस साल इस खेत में फसल अच्छी हो, बहुत हो। इस साल किसी भी प्रकार से अकाल, अवर्षण न हो। किसी भी प्रकार से फसल का नुक-सान न हो।" श्रावण मास में 'श्रीनव-नाथ-भक्ति-सार' का पारायण करे। 'नव - नाथ' की कृपा अवश्य होगी। इस प्रकार हर साल उक्त मन्त्रानुष्ठान तथा पारायण करे। खेती में अवश्य उन्नति होगी।

विधि (२)—श्वेत गुञ्जा की जड़ पर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़े। इस जड़ को पानी में एक दिन रखे। यही जल ले जाकर खेत में सर्वत्र छिड़के। जड़ को घर में ही रखे। 'नव - नाथ' की कृपा से खेती उत्तम होगी।

२. विघ्नों का निवारण

ॐ नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। पहिला गण गणपती। चौदा विद्यांचा सारथी। जती सती कैलास-पती। बल भीम मारुती। आले विघ्न निवारी। साईं गोरखनाथ की द्वाही। गुरू की शक्ति—मेरी भक्ति। चले मन्त्र, ईश्वरी वाचा। पिण्ड कच्चा, गुरू गोरखनाथ का शब्द सच्चा।

विधि—मात्र १०८ बार मन्त्र का जप करे। सभी विघ्न दूर होंगे।

३. गाय की चोरी होने पर

ॐ नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। गुरू की क्रिया भण्डारी। धनञ्जय देवेन्द्रनाथ उतारी। बाबा हमदे। गाय गुरु के परि सुखे। नदी को चलवे तीर। गाय गोरख की। बखरी मच्छिन्द्र की। भय से राजा बारसव की। दूध ना उतरे, तो द्वाही वीर हनुमान की। द्वाही साईं गोरखनाथ की। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। करे मन्त्र, ईश्वरी वाचा। पिण्ड कच्चा, गुरू गोरखनाथ का शब्द सच्चा।

विधि—यदि किसी ने गाय चुराई हो, तो उक्त मन्त्र से वापस मिलती है। रोटी, निम्ब, भस्म या कपास के बीज को अभिमन्त्रित कर सम्बन्धित व्यक्ति को दे दे। उसे गाय बांधने के स्थान पर रखे। गाय अवश्य वापस मिलेगी।

४. सर्प-भय का निवारण

मुनि-राज आस्तक नमः।

विधि—घर में सर्प हो और उससे भय हो, तो या सर्प के कभी-कभी दिखाई देने से डर लग रहा हो, तो अथवा खेत में सर्प - भय अधिक हो, तो या रात्रि में घर से खेत तक जाने के मार्ग में या कहीं भी सर्प - भय हो, तो उक्त मन्त्र का उच्चारण करने से ही भय का निवारण होता है। घर या खेत को छोड़कर सर्प चला जाएगा। सर्प को मारे नहीं।

५. चोर-भय का निवारण

ॐ करालिनी स्वाहा। ॐ कपालिनी स्वाहा। ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं चोर बन्ध ठं ठं ठं।

विधि—पहले किसी शुभ पर्व पर १०८ जप कर मन्त्र सिद्ध करे। फिर आवश्यकता के अनुसार प्रयोग करे। यथा—हाथ में भस्म या मिट्टी लेकर उसे ७ बार अभिमन्त्रित कर द्वार के बाहर गाड़ दे। चोर का भय नहीं रहेगा।

६. धन-धान्य की समृद्धि के लिए

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी, मम गृहे धन पुरे। चिन्ता दूरे दूरे स्वाहा।

विधि—खेती, खेती-सम्बन्धी व्यापार या अन्य किसी व्यवसाय अथवा नौकरी आदि के क्षेत्र में उन्नति हेतु उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। नित्य कुछ जप करता रहे।

७. पागल कुत्ते का विष-निवारण

ॐ कामरू देश, कामाक्षा देवी। जहाँ बसै इस्मायल जोगी। इस्मायल जोगी का झामरा कुत्ता। सोना डाढ़, रूपा का कुण्डा। बन्दर नाचे, रीछ बजावे। सीता बैठी, औषध बांटे। कूकर का विष भाजे। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—जहाँ पागल कुत्ते ने काटा हो, वहाँ मन्त्रोचारण-पूर्वक

नाथ-पन्थीय टोटके

(१) चूहे का उपद्रव बन्द करना : ऊँट के बाएँ पैर का नाखून अनुराधा, पुष्य या उत्तरा नक्षत्र में लाकर घर में जलाएँ। सभी चूहे भाग जाएँगे।

(२) खोए पशु हेतु : गाय, भैंस, बकरी आदि पशु खो जाय या रास्ता भूल कर घर तक न आए, तो जहाँ उसे बाँधा जाता है, वहाँ की रस्सी में लोहे का चम्मच बाँध दे। इससे पशु कितनी भी दूर हो, अवश्य वापस आएगा। हाँ, कहीं किसी ने उसे बाँध कर न रखा हो।

(३) दांत का दर्द : करवन्दी (काली मैना, डोंगर मैना) की जड़ पानी में पीस कर उसका लेप दाँतों पर करे या दाँतों से जड़ को चबाते हुए कुछ समय तक उसका रस दांतों पर रहने दे। इससे दांतों का दर्द दूर होगा। दांतों में सड़न हुई हो, तो भी यह उपाय लाभ-प्रद होगा।

(४) सर्प को भगाना : अच्छी 'हींग' और 'वेखण्ड' पानी में पीस कर हाथ में लगा ले। इस हाथ से झटके के साथ सर्प की गर्दन पकड़े और उसे कहीं दूर छोड़ आए। उक्त लेप से सर्प - दंश नहीं करता।

(५) सांप के काट लेने पर : कड़वे 'दोड़के' के फल का काढ़ा बनाकर शुद्ध घी के साथ पिलाने से सर्प - दंश का विष उतर जाता है या उक्त फल के अन्दर की जाली पानी में पीस कर इस पानी को दंश-पीड़ित को पिलाए।

(६) सर्प-दंश से रक्षा : श्वेत गुञ्जा की जड़ ग्रहण-काल में ले आए। धूप देकर ताबीज में बन्द कर धारण करे। सर्प-दंश का भय नहीं रहेगा।

(७) मिरगी, चक्कर आदि का निवारण : काले धतूरे का रस ६ माशा तिली के ६ माशे तेल में मिलाकर मिरगी, चक्कर आदि आने पर रोगी को पिलाए। आराम होगा।

जिज्ञासु के पत्र

प्रश्न १—बड़े मन्त्रों को कागज पर लिखकर 'जप' किया जा सकता है या नहीं ?

उत्तर—किया जा सकता है। मन्त्र याद होने पर ऐसी आवश्यकता नहीं होती।

प्रश्न २—शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७, पृष्ठ ६४ पर 'दीक्षा के बिना मन्त्र-सिद्धि-विधान' दो प्रकार के हैं। क्या दोनों करने चाहिए ?

उत्तर—'ग्रहण' का पहला विधान उत्तम है। यदि 'ग्रहण' शीघ्र नहीं आ रहा हो, तो दूसरा विधान अपनाएँ। किसी भी एक विधान से सिद्धि होगी।

प्रश्न ३—'चिञ्च' के पेड़ का और कौन-कौन नाम है ?

उत्तर—इमली।

प्रश्न ४—वीर-सिद्धि का प्रयोग अकेले करना चाहिए या साथ में कोई होना चाहिए ?

उत्तर—अकेले ही करना चाहिए।

प्रश्न ५—शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७, पृष्ठ ७८ पर प्रकाशित वीर-यन्त्र के लिखने का क्रम क्या होगा ? इसे किस दिन लिखना चाहिए ? अनुराधा नक्षत्र किस दिन हो ? प्रयोग रात्रि में करे या दिन में ?

उत्तर—यन्त्र-लेखन किसी भी क्रम से करे। किसी भी शुभ मुहूर्त पर यन्त्र लिखे व प्राण-प्रतिष्ठा करे। अनुराधा नक्षत्र किसी भी दिन हो, तो उपयोगी होगा। प्रयोग एकान्त में ही करे, रात्रि हो या दिन—कोई अन्तर नहीं। केवल प्रयोग के समय 'अनुराधा नक्षत्र' अवश्य हो, इसका ध्यान रहे।

प्रश्न ६—शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७, पृष्ठ ७८ वीर-सिद्धि—आक के पेड़ का पूजन करते समय अपना मुँह किस दिशा में करे ?

उत्तर—दिशा का बन्धन नहीं है। किसी भी दिशा में करे—यथा-सुविधा।

प्रश्न ७—वीर-सिद्धि का प्रयोग कितने दिनों का है ?

उत्तर—दिनों नहीं, अधिक-से-अधिक १ या १॥ घण्टे का ही यह विधान है।

प्रश्न ८—'नाथ-परम्परा' के मन्त्र किस माला से जपने चाहिए ?

उत्तर—बहुत से मन्त्र रुद्राक्ष - माला पर ही जपे जाते हैं। जहाँ कोई विशिष्ट निर्देश हो, वहाँ पर उसी निर्देश के अनुसार जप - माला लेनी चाहिए।

प्रश्न ९—शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग८ में 'नाथ-पन्थीय साधना-क्रम' (पृष्ठ ४१-४६) विस्तृत ढङ्ग से दिया गया है। क्या उस क्रम से सभी देवताओं की साधना की जा सकती है ?

उत्तर—किसी भी 'इष्ट' की साधना उस क्रम से हो सकती है। यह अत्यन्त प्रभावी एवं स्वानुभूत साधना है। मेरी सलाह है कि केवल उच्च श्रेणी के देवी - देवताओं की (यथा—दुर्गा, काली, राम, विष्णु, नव - नाथ आदि) ही साधना इस क्रम से करे। उप - देवताओं—जैसे यक्ष, यक्षिणी, वेताल आदि की न करे।

प्रश्न १०—शाबर - मन्त्र - संग्रह, भाग ८, पृष्ठ ३३ पर प्रकाशित 'शक्ति-साधना' क्या कोई भी व्यक्ति कर सकता है ? या केवल दीक्षित व्यक्ति ही कर सकते हैं ?

उत्तर—दीक्षित व्यक्ति को शीघ्र अनुभूति होती है। अदीक्षित व्यक्ति भी यह साधना कर सकता है। कुछ-न-कुछ अनुभव होंगे ही।

प्रश्न ११—शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ८, पृष्ठ ३५ पर 'श्रीदत्तात्रेय-साधना' दी है। उसमें उल्लिखित 'वज्रेश्वरी-स्थान' कहाँ पर है ?

उत्तर—महा-राष्ट्र के 'ठाणे' जिले में 'भिवण्डी' के पास। यहाँ की ग्राम-देवता भगवती 'वज्रेश्वरी' हैं। यहीं पर 'श्रीगुरुदेव सिद्ध-पीठ' भी है। चमत्कार-पूर्ण अनुभव यहाँ होते हैं—देखने को भी मिलते हैं। यहाँ का 'माँ का मन्दिर' तथा 'गुरुदेव आश्रम' अत्यन्त जागृत स्थान हैं। यहाँ प्रवेश होते ही प्रसन्नता, शान्ति और योग-सिद्धि की अनुभूति मिलती है। यहाँ के आश्रम में रहने की व्यवस्था भी है।

प्रश्न १२—शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७, पृष्ठ ७८, मन्त्र क्र० २ के अन्त में 'सच्चा हनुमान वीर' शब्द है। क्या अन्य वीर (जादू-वीर, शैतान-वीर आदि) सिद्धि हेतु भी यही शब्द मन्त्र में होंगे ?

उत्तर—हाँ।

प्रश्न १३—वेताल, वीर, भूत आदि की साधना में भय न लगे, इसके लिए क्या उपाय करना चाहिए ?

उत्तर—मान लें कि आपको गाय पालनी है। गाय दुबली हो, कम खाए, किन्तु दूध अधिक दे, काले रङ्ग की ही हो—ऐसी सभी बातें एकत्र मिलना असम्भव है। इसी प्रकार साधना के विषय में जानना चाहिए। पहले उच्च श्रेणी के देवता की आराधना कर शक्ति अर्जित करे। फिर वेतालादि वीर-साधनाओं पर ध्यान दे।

शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ८ (शुद्धि-पत्र)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४६	८ व ९	प्राप्त करना सर्व-नाश की ओर ले जाएगा।	प्राप्त करना अति-मानव की ओर ले जाएगा।
४६	१५	आम्या वेताळ	आग्या वेताळ
४६	२०	वैय्रची	वैय्राची
४७	२	काली कुकडी	काळी कुकडी

शाबर-मन्त्र-संग्रह

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० रामशरण शर्मा
२०६ मकतूलपुरी, रुड़की, हरिद्वार, पो. रुड़की (खास)
जिला हरिद्वार (उ. प्र.)

१. शाबर-मन्त्रों के प्रकाशन की सार्थकता

मैंने कुछ मन्त्र 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के लिए भेजे थे। उनको छपा देखकर प्रसन्नता हुई, परन्तु इससे भी अधिक प्रसन्नता तब हुई, जब परामर्श के लिए पाठकों व साधकों के पत्र आने शुरू हुए। इससे यह पता चलता है कि आप बिखरे हुए मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र-रूपी मणियों व मोतियों को इकट्ठा करके माला बनाने का जो अथाह परिश्रम जन-कल्याण के लिए कर रहे हैं, वह कितना सार्थक है ! महा-माया आद्या शक्ति से मेरी प्रार्थना है कि उनका वरद हस्त सदा आपके शिर पर रहे और वे लोक-कल्याण के लिए सम्पन्न महानुभावों को प्रेरित करें, जिससे इस महत्-कार्य हेतु आपको पर्याप्त आर्थिक सहयोग मिल सके और धनाभाव के कारण यह लोक-कल्याण-कारी प्रकाशन - कार्य रुके नहीं, अपितु और उपयोगी रूप में चलता रहे।

२. शङ्का-समाधान

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८ में प्रकाशित मन्त्रों के सम्बन्ध में जो शङ्काएँ प्राप्त हुई हैं, इनके समाधान हेतु निम्न उत्तर प्रस्तुत हैं—

१—सबसे अधिक पत्र 'रक्षा-विधान' के लिए एवं धागे बनाने के सम्बन्ध में प्राप्त हुए हैं। पाठक ध्यान दें—सुरक्षा के लिए अलग-अलग मन्त्र और अपने गुरुओं से प्राप्त अलग-अलग विधान हैं। जो पाठक संस्कृत जानते हैं, वे निम्न मन्त्रों को कण्ठस्थ कर लें और ग्रहण, होली या दिवाली के अवसर पर शुद्ध घी का दिया जलाकर धूप-बत्ती एवं अगर - बत्ती दोनों जलाएँ और माँ का ध्यान हृदय या आज्ञा - चक्र पर करते हुए एक माला (१०८) मन्त्र का जप करें। ध्यान रहे कि दोनों मन्त्र एक साथ जप करें। यदि दोनों को एक मानकर जप करेंगे, तो आपको मन्त्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग-विधि : पहले कन्या के हाथ का काता हुआ सूत (धागा) प्राप्त करें। फिर होली, दिवाली या ग्रहण के अवसर पर सात तार का धागा बना लें। धागे पर दोनों मन्त्र पढ़कर एक गाँठ बनाएँ। इसी प्रकार अभिमन्त्रित कर सात गाँठें लगा लें। बस, आपका 'रक्षा-धागा' तैयार हो जाएगा। किसी मन्त्र की सिद्धि करने से पूर्व उक्त प्रकार बनाए गए धागे को अपने घर के प्रत्येक प्राणी को पहना दे, तो पूर्ण सुरक्षा होगी। भूत, प्रेत, पिशाच या शिर - कटा प्रेत, जो बड़ा भयङ्कर एवं उग्र होता है – अच्छे अच्छे सिद्धों व तान्त्रिकों के भी दाँत खट्टे कर देता है, उन सबसे रक्षा होती है। उक्त विधि से धागा बनाकर पहनाएँ और माँ का चमत्कार देखें तथा यश प्राप्त करें, परन्तु पैसे पैदा करने की या अन्य किसी प्रकार दुरुपयोग करने की कदापि न सोचे।

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च, चण्डिके ! रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म - शूलस्य, उत्तरस्यां तथेश्वरि ! ।।१
सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि, तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ।।२

(२) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८, पृष्ठ २३ पर 'छावा मन्त्र (६)' की छठी पंक्ति में 'डाल' की जगह 'गल' शब्द कर लें। 'डाल' अशुद्ध है। जो साधक 'जगन्मङ्गल कवच' का पाठ करना चाहें, वे शुभ मुहूर्त में १२ हजार आवृत्तियाँ कर त्रि-मधु (शहद, घी, चीनी) से हवन करें। तर्पण, मार्जन करें। कवच सिद्ध हो जायगा। बाद में पूजा में बैठकर 'स्थान-शुद्धि' और 'भूत-शुद्धि' के पश्चात् 'कवच' पढ़ते हुए शरीर के अङ्गों में न्यास करें। शुभ मुहूर्त में 'लाल चन्दन की स्याही' एवं 'अनार की कलम' से 'भोज - पत्र' पर लिखकर उस पर एक हजार पाठ करे। यदि सौ पाठों से नित्य अभिमन्त्रित करें, तो १० दिनों में 'सिद्ध कवच' तैयार हो जायगा। चाँदी के ताबीज को गङ्गा - जल से धोकर, धूप-दीप कर, 'कवच' को सिद्ध करते हुए जो हवन किया था, उसकी राख से 'ताबीज' को प्रक्षालित करे और थोड़ी - सी भभूत 'भोज - पत्र' पर लिखे हुए कवच के बीच में रखकर, मोड़ कर, चाँदी के यन्त्र में भरे और १० बार भरने के बाद 'कवच' से अभिमन्त्रित

करे। इस प्रकार तैयार सिद्ध कवच के दोनों ओर पञ्च - मुखी रुद्राक्ष का एक-एक दाना डाल दे। तब गले में पहने। पूर्ण सुरक्षा मिलेगी।

(३) घर कीलने का विधान पाठकों को 'शाबर - मन्त्र - संग्रह' में प्राप्त होगा। विधान कठिन और जटिल अवश्य है, किन्तु फल-प्रद है।

(४) हनुमान जी की चौकी प्रातः १ माला करे और कुछ न करे। सायं एक माला करने से पूर्व 'शाबर - मन्त्र - संग्रह' में बताई सामग्री लेकर बैठे। लाल वस्त्र शरीर पर पहने। आसन भी लाल रक्खे। मन्त्र-जप करते समय अङ्गारी पर धूप उठाए (गाय के गोबर के उपले को जलाकर आग बना ले। इसे ही 'अङ्गारी' कहते हैं)। मन्त्र - जप के पूरे समय में धूप उठती रहे। एक माला से तात्पर्य है १०८ बार मन्त्र को जपना।

(५) 'सराही' उसे कहते हैं, जो 'कसोरे'-जैसी होती है। 'कसोरा' गहरा होता है, किन्तु 'सराही' प्लेट की तरह चौड़ी होती है और गहरी कम होती है। कुम्हारों के यहाँ से प्राप्त करे।

चमत्कारी महा-काली सिद्ध अनुभूत मन्त्र

ॐ सत् नाम गुरु का आदेश। काली - काली महा-काली, युग आद्य काली, छाया काली, छूं मांस काली। चलाए चले, बुलाई आए, इति विनिआस। गुरु गोरखनाथ के मन भावे। काली सुमरूँ, काली जपूँ, काली डिगराऊ को मैं खाऊँ। जो माता काली कृपा करे, मेरे सब कष्टों का भञ्जन करे।

विधि : उक्त मन्त्र का सवा लाख जप ४० या ४१ दिनों में करे। सामग्री—लाल वस्त्र व आसन, घी, पीतल का दिया, जौ, काले तिल, शक्कर, चावल, सात छोटी हाँड़ी—चूड़ी, सिन्दूर, मेंहदी, पान, लौंग का जोड़ा, सात मिठाइयाँ, बिन्दी, चार मुँह का दिया।

पहले उक्त मन्त्र को कण्ठस्थ कर ले। शुभ समय पर जप शुरू करे। गुरु-शुक्र अस्त न हों। दैनिक 'सन्ध्या-वन्दन' के अतिरिक्त अन्य किसी मन्त्र का जप ४० दिनों तक न करे। भोजन में दो रोटियाँ १० या ११ बजे दिन के समय ले। ३ बजे के पश्चात् खाना-पीना बन्द कर

दे। रात्रि ६ बजे पूजा आरम्भ करे। पूजा का कमरा अलग हो और पूजा के सामान के अतिरिक्त कोई सामान वहाँ न हो। प्रथम दिन, कमरा कच्चा है, तो गोबर का लेपन करे। पक्का है, तो पानी से धो ले। आसन पर बैठने से पूर्व स्नान नित्य करे। स्त्री हो या पुरुष—शिर में कङ्घी न करे। माँ की सुन्दर मूर्ति रक्खे और धूप-दीप जलाए। जहाँ पर बैठे, चाकू या जल से सुरक्षा - मन्त्र पढ़कर रेखा बनाए। पूजा का सब सामान 'सुरक्षा-रेखा' के अन्दर होना चाहिए।

सर्व-प्रथम गुरु-गणेश-वन्दना कर १ माला अर्थात् १०८ मन्त्रों से हवन करे। हवन के पश्चात् जप शुरू करे। जप - समाप्ति पर जप से जो रेखा-बन्धन किया था, उसे खोल दे। रात्रि में थोड़ी मात्रा में दूध-चाय ले सकते हैं। जप के सात दिन बाद एक हाँड़ी लेकर पूर्व-लिखित सामान (सात मिठाई, चूड़ी इत्यादि) उसमें डाले। ऊपर ढक्कन रख-कर, उसके ऊपर चार मुख का दिया जला कर, सायं समय जो आपके निकट हो, ऐसी रजबाहा या नदी या नहर या चलता पानी हो, उस जल में हँड़िया को नमस्कार कर बहा दे। लौटते समय पीछे मुड़कर न देखे। ३१ दिनों तक धूप-दीप-जप करने के पश्चात् ७ दिनों तक एक बूँद रक्त जप के अन्त में पृथ्वी पर टपका दे और ३६ वें दिन जिह्वा का रक्त दे। मन्त्र सिद्ध होने पर इच्छित वरदान प्राप्त करे।

सावधानियाँ : प्रथम दिन जप से पूर्व हण्डी को जल में सायं समय छोड़े और एक-एक सप्ताह बाद उसी प्रकार उसी समय सायं उसी स्थान पर, यह हाँड़ी छोड़ी जायगी। जप के एक दिन बाद दूसरी हाँड़ी छोड़ने के पश्चात् भूत-प्रेत साधक को हर समय घेरे रहेंगे। जप के समय कार के बाहर काली के साक्षात् दर्शन होंगे। साधक जप में लगा रहे, घबराए नहीं। वे सब कार के अन्दर प्रविष्ट नहीं होंगे। मकान में आग लगती भी दिखाई देगी, परन्तु आसन से न उठे। ४० से ४२ वें दिन माँ वर देगी। जो इच्छा हो, माँग ले। भविष्य - दर्शन व होनहार घटनाएँ तो सात दिन जप के बाद ही ज्ञात होने लगेंगी। एक साथी या गुरु कमरे के बाहर नित्य रहना चाहिए।

साधक को निर्भीक व आत्म-बलवाला होना चाहिए। जो भविष्य-ज्ञान एवं होनहार घटना ४० दिन के भीतर हो, उसे किसी को न बताए। वर-दान-प्राप्ति के बाद ही सारे कार्य करे। ● ●

(२) सङ्कट-निवारक काली-मन्त्र

काली काली, महा-काली। इन्द्र की पुत्री, ब्रह्मा की साली। चाबे पान, बजावे थाली। जा बैठी, पीपल की डाली। भूत-प्रेत, मढ़ी मसान। जिन्न को जन्नाद बाँध ले जानी। तेरा वार न जाय खाली। चले मन्त्र, फुरो वाचा। मेरे गुरु का शब्द साचा। देख रे महा-बली, तेरे मन्त्र का तमाशा। दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

सामग्री : माँ काली का फोटो, एक लोटा जल, एक चाकू, नीबू, सिन्दूर, बकरे की कलेजी, कपूर की ६ टिकियाँ, लगा हुआ पान, लाल चन्दन की माला, लाल रङ्ग के फूल, ६ मिट्टी की सराई, मद्य।

विधि : पहले स्थान-शुद्धि, भूत - शुद्धि कर गुरु - स्मरण करे। एक चौकी पर देवी की फोटो रखकर, धूप-दीप कर, पञ्चोपचार पूजा करे। एक लोटा जल अपने पास रक्खे। लोटे पर चाकू रक्खे। देवी को पान अर्पण कर, प्रार्थना करे—हे माँ ! मैं अबोध बालक तेरी पूजा कर रहा हूँ। पूजा में जो त्रुटि हों, उन्हें क्षमा करें।' यह प्रार्थना अन्त में और प्रयोग के समय भी करे।

अब छः अङ्गारी रक्खे। एक देवी के सामने व पाँच उसके आगे। ११ माला प्रातः, ११ माला रात्रि ६ बजे के पश्चात् जप करे। जप के बाद सराही में अङ्गारी करे व अङ्गारी पर कलेजी रखकर कपूर की टिक्की रक्खे। पहले माँ काली को 'बलि' दे। फिर पाँच बलियाँ गणों को दे। माँ के लिए जो घी का दिया जलाए, उससे ही कपूर को जलाए और 'मद्य' की धार निर्भय होकर दे। बलि केवल मङ्गलवार को करे। दूसरे दिनों में केवल 'जप' करे। होली-दिवाली-ग्रहण में या अमावास्या को मन्त्र जागृत करता रहे। कुल ४० दिन का प्रयोग है।

भूत-प्रेत-पिशाच-जिन्न, नजर-टोना-टोटका झाड़ने के लिए धागा बनाकर दे। इस मन्त्र का प्रयोग करनेवालों के शत्रु स्वयं नष्ट हो जाते हैं। लोक-कल्याण में ही प्रयोग करेंगे, तभी यश और सुख—दोनों प्राप्त होंगे।

(३) गुप्त त्रिकाल-दर्शी देवी-मन्त्र

ॐ लिङ्ग सर्व-नाम शक्ति भगती कर्ण-पिशाचनी चण्ड-रूपी सच-सच मम वचन दे स्वाहा।

सामग्री : पान, सुपारी, लौंग, सिन्दूर, नारियल, अगर-ज्योत, लाल वस्त्र, जल का लोटा, लाल चन्दन की माला।

जप-संख्या : एक लाख। स्थान एकान्त कमरा। एक वटुक सहित कुमारी भोजन। तर्पण-मार्जन।

समय : 'नवरात्र'। यदि 'ग्रहण' - काल में प्रारम्भ करे, तो स्पर्श से पन्द्रह मिनट पूर्व से प्रारम्भ करे और 'मोक्ष' के पन्द्रह मिनट बाद तक करे। 'ग्रहण' में नदी के किनारे या 'श्मशान' में जप करे। सभी सामग्री अपने साथ रक्खे।

हवन-सामग्री : १ सफेद चन्दन चूरा, २ लाल चन्दन चूरा, ३ लोहबान, ४ गूगल—प्रत्येक ५-५ छटाँक। ५ कपूर ५ पैकेट, ६ लौंग १० ग्राम, ७ अगर ५० ग्राम, ८ तगर ५० ग्राम, ९ केशर २॥ ग्राम, १० कस्तूरी १ ग्राम, ११ बादाम ५० ग्राम, १२ काजू ५० ग्राम, १३ अखरोट ५० ग्राम, १४ गोला ५० ग्राम, १५ छुहारे ५० ग्राम, मिसरी १ कुज्जा—इन सबको कूट कर मिला ले। इसमें घी भी मिला ले। फिर खीर बनाए। चावल कम, दूध ज्यादा रक्खे। खीर में ५ मेवे डाले। देशी घी, शहद, चीनी—त्रिमधु डाले।

विधि : 'नवरात्र' में भूत - शुद्धि, स्थान - शुद्धि गुरु - स्मरण, गणेश-पूजा, नव-ग्रह-पूजा से पूर्व एक चौकी पर लाल वस्त्र बिछाए। उस पर ताँबे का लोटा या 'कलश' स्थापित करे। 'कलश' पर नारियल रक्खे। लोटे या 'कलश' के चारों ओर पान, सुपारी, सिन्दूर, २ लड्डू इत्यादि वस्तुएँ रखे। 'कलश'-पूजन करे। 'साष्टाङ्ग-प्रणाम' करे। फिर कन्धे पर लाल परना रखकर 'जप' करे। 'जप' पूर्ण होने पर पहले सामग्री से, फिर खीर से तथा अन्त में त्रि-मधु से 'हवन' करे। पहले 'क्षमा-प्रार्थना' कर साक्षात् देवी - रूपी 'कलश' को लेट कर दण्डवत् करे।

मन्त्र का चमत्कार अनुष्ठान करके देखा जा सकता है। अनुष्ठान के दिनों में ब्रह्मचर्य, एकान्त-वास करे। झूठ न बोले। ● ●

नाथ-पन्थीय तत्त्व-ज्ञान–संक्षेप में

❀ प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री अनिल गोविन्द बोकील
१८/१ ड, गोंधलेनगर, हडपसर, पुणे (महा-राष्ट्र)-४११०२८

निवेदन : 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', ७ वें तथा ८ वें भागों में कुछ गोपनय साधनाएँ रहस्यों - सहित दी गई हैं। साथ ही कुछ विशेष बातों का विस्तृत विवरण है। इस ९ वें भाग में 'नाथ-पन्थ' का तत्त्व-ज्ञान, गुरु - देव परम पूज्य १००८ श्री योगेन्द्रनाथ जी की कृपा से प्रस्तुत है। तत्त्वों को समझ कर साधना करना शीघ्र फल - प्रद होता है। अतः पाठक बन्धु इस पर अवश्य मनन करें।—प्रस्तुत-कर्त्ता

नव-नाथों के पूर्व-काल में सांख्य-मार्ग, कौल-मार्ग; कापालिक-मार्ग आदि अनेक मार्ग प्रचलित थे। उसके बाद श्री शङ्कराचार्य जी ने महत्त्व-पूर्ण "अद्वैत तत्त्व - ज्ञान" प्रस्तुत किया। इन्हीं तत्त्व - विचारों को अपना कर कुछ अलग ढङ्ग से श्रीगोरक्षनाथ जी ने "द्वैताद्वैत-विलक्षण" के नाम से तत्त्व-प्रतिपादन किया है।

नाथ-पन्थीय तत्त्व-ज्ञान में "शिव-शक्ति" का विवेचन प्रधान है। "शक्ति-युक्त शिव" ही नाथ-पन्थ का अन्तिम सत्य है। यह तत्त्व स्वयं-प्रकाशी, स्व-संवेद्य, अविनाशी, अनन्त तथा व्यक्ताव्यक्त-विवर्जित है। इसमें "शक्ति" - तत्त्व "शिव - तत्त्व" से अलग कदापि नहीं है। जिस प्रकार कपूर व सुगन्ध, शक्कर व मीठेपन आदि का एक दूसरे से अलग विचार नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार इन तत्त्वों की अभिन्नता जानें। आगे रूपकात्मकता से विवेचन इस प्रकार है कि शिव ने शक्ति - द्वारा चराचर - सृष्टि का खेल शुरू किया। इसी को श्रीगोरक्षनाथ जी "शिव की आत्म - रति" नाम से सम्बोधित करते हैं। जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिण्ड में है—ऐसा भी उनका सिद्धान्त है। इसी के अनुसार ब्रह्माण्ड की शक्ति "कुण्डलिनी" के रूप में हमारे पिण्ड में भी कार्य-रत है। इसका स्थान है—मूलाधार-चक्र तथा शिव हैं हमारे 'सहस्रार-चक्र' में। इन दोनों का मिलाप "शिव-शक्ति-साम-रस्य" कहलाता है। ऐसी अवस्था ही "परमानन्द-मय सहज समाधि"

है। यह स्वयं-सिद्ध समाधि है। यह न लगाई जाती है, न उतारी जाती है। शैव - सिद्धान्त इसे ही 'जीव-शिव-मिलन' कहता है, परन्तु इसमें जो शिव की शक्ति है, वह सांख्यों की प्रकृति कदापि नहीं है--यह बात ध्यान में रखें।

शैव तथा शाक्तों का झुकाव 'जीव' की ओर है और श्रीशङ्करा-चार्य जी का तात्त्विक दृष्टि-कोण पारमार्थिकता की ओर है। 'नाथ-पन्थ' ने भी यही स्वीकार कर देह को भी महत्त्व-पूर्ण माना है। शिव की शक्ति 'कुण्डलिनी' है– ऐसा सर्वथा भिन्न विचार 'नाथ-पन्थ' में किया है। वेदों में वर्णित ब्रह्म की शक्ति 'माया' कुण्डलिनी नहीं है— यह महत्त्व - पूर्ण विचार नाथों ने हमारे सामने रखा है। यह 'शिव-शक्ति' ही चित्-शक्ति, चिद्-रूपिणी, अनन्त-रूपा, जगदम्बा आदि नामों से 'नाथ-पन्थ' में सुविख्यात है। इसी के सहारे शिव सृष्टि-नियन्त्रण में समर्थ होते हैं। यह शक्ति धीरे - धीरे सूक्ष्म हो जाती है। इसी का स्फुरण 'सदा-शिव' है। सृष्टि-व्यापार-हेतु सदा-शिव अहन्तावस्था को प्राप्त होते हैं। वही ५ प्रकार का आनन्द है—१ परमानन्द, २ प्रबोध, ३ चिद्रम, ४ प्रकाश तथा ५ सोऽहं। इस आनन्द में से ही जीव-रूप की धारणा होती है। पहले पिण्ड, फिर आद्य-पिण्ड, साकार-पिण्ड, महा-साकार-पिण्ड, प्राकृत - पिण्ड और अन्त में गर्भ - पिण्ड— इस क्रम से स्थूल होते-होते शरीर-धारणा हो जाती है। यह 'नाथ - पन्थी तत्त्व-ज्ञान' श्रुति से अलग नहीं है। आनन्द से जीव उत्पन्न होता है—उसी में रहता है—उसी में वापस जाता है—यह श्रुति-सिद्धान्त 'नाथ-पन्थ' में ज्यों-का-त्यों स्वीकार किया जाता है।

सत्त्व-रज-तम की साम्यावस्था में प्रकृति द्वारा सृष्टि का निर्माण होता है– यह 'सांख्य'-सिद्धान्त है। उसके अनुसार ऐन्द्रिय सृष्टि के ११ व निरिन्द्रिय सृष्टि के ५ सूक्ष्म तत्त्व हैं। श्रीशङ्कराचार्य जी तथा 'गीता' के अनुसार स्थूल व सूक्ष्म मिलाकर कुल ३६ तत्त्व हैं। श्री गोरक्षनाथ जी भी यही स्वीकार करते हैं। इन्द्रिय - गम्य जगत् का अधिष्ठान 'ब्रह्म' है। यहाँ तक हम जान सकते हैं, लेकिन अनन्त काल से सप्त - जगों का निर्माण किस तरह हुआ—यह तर्क द्वारा जानना असम्भव है। ऐसा श्रीशङ्कराचार्य जी का कथन है।

जैसे कि पहले बताया जा चुका है कि 'नाथ - सम्प्रदाय द्वैताद्वैत-विलक्षण' है अर्थान् द्वैत व अद्वैत से परे है। 'संख्या' को केवल उपाधि मानकर उसके बाद के अखण्ड ज्ञान-रूपी 'निरञ्जन' तत्त्व का 'नाथ-पन्थ' पुरस्कार करता है। शक्ति-विस्फोट से जगत् प्रतीत होने लगता है। अतः शक्ति 'कर्ता' है। 'शिव' ज्ञेय सृष्टि का 'आदि - तत्त्व' है। शिव-शक्ति निर्वाहिका है। फिर भी वह 'उपास्या' इसीलिए है कि उसके बिना जगत् का निर्माण असम्भव है। 'नाथ - पन्थ' के अनुसार 'शक्ति' चेतन ही है। केवल व्यवहार की सुविधा - हेतु उसका अलग विचार करना है क्योंकि 'शिव' गुणातीत हैं, परातीत हैं। उनके स्वरूप का निर्धारण करना सम्भव नहीं। उपासना-हेतु 'सदा - शिव' स्वीकार्य नहीं हैं। अतः उनसे अभिन्न (फिर भी सुविधा के लिए भिन्न समझ कर) 'शक्ति' ही उपास्या हो सकती है। इसी से 'परम - शिव' का ज्ञान होता है।

(**विशेष :** 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८ की सभी शक्ति-साधनाएँ उक्त सूक्ष्म तत्त्व को ध्यान में रखते हुए ही करनी चाहिए।)

'शक्ति-उपासना का साधन हमारा शरीर है। उसके १६ आधार, २ लक्ष्य, ५ व्योम आदि का ज्ञान होने पर ही सिद्धि सम्भव है। दूसरे शब्दों में—'सहज समाधि द्वारा मन से ही मन को जानना'—इस अवस्था को मोक्ष कहते हैं। इस विवेचन से स्पष्ट है कि शाक्तों का तन्त्र 'नाथ-सम्प्रदाय' ने अधिक व्यापक रूप में स्वीकार किया है। बौद्धों के 'शून्य' के बजाय नव-नाथों ने 'शिव-शक्ति-ज्योति' का प्रतिपादन किया है। द्वैत-मत के क्रिया-ब्रह्म तथा अद्वैत - मत के निष्क्रिय ब्रह्म आदि से 'नाथ-तत्त्व' इस प्रकार भिन्न है, व्यापक भी है क्योंकि यह निरुपाधिक, अवाच्य, चित्-स्वभावी माना गया है। इसी के अनुसार शिव ही शक्ति - युक्त होकर स्फुरित होता है। यह जगत् चित्-शक्ति के विकास और विलास का ही परिणाम है। इस प्रकार सभी 'नाथ-सिद्धान्त' तत्त्व-सापेक्ष हैं, व्यक्ति-सापेक्ष नहीं।

'नाथ-पन्थ' की 'हठ-योग-साधना' भी स्वतन्त्र तथा मन्त्र-शुद्ध है। उस युग में योग-साधना के अन्तर्गत 'हठ-योग' के तन्त्र शुद्ध वैचारिक शोध का प्रत्यक्षीकरण करनेवाला एक-मात्र पन्थ 'नाथ-सम्प्रदाय' है। श्री जालन्धरनाथ जी की कथा से इसे जाना जा सकता है। इस

साधना का सम्बन्ध 'अवधूत'-साधना से है। द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत आदि सभी का ऐक्य-समन्वय जिस 'नाथ - ब्रह्म' में होता है, वही 'नाथ-पन्थीय अवधूत-सिद्धान्त' है। श्रीदत्तात्रेय जी को नव-नाथ 'गुरु' कहते हैं—इसका रहस्य यही है कि 'हठ - योग' के गूढ़ विधान इस त्रिगुणात्मक शक्ति के ही हैं।

(**विशेष** : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८ की श्रीदत्तात्रेय - साधना को इस विवेचन के अनुसार 'शक्ति-साधना' बताया गया है।)

प्रत्येक शक्ति की साधना-पद्धति 'नाथ - पन्थ' में है। श्रीदत्तात्रेय याने ब्रह्मा-विष्णु-महेश का एकीकरण। इस त्रिदेव-मूर्ति से ब्रह्मा द्वारा ज्ञान-साधना, विष्णु से भक्ति, और शिव से योग-साधना 'नव - नाथों' ने ली है। उस युग में तन्त्र-विद्या की कुछ निम्न श्रेणी की साधनाएँ बहुत अधिक प्रचलित थीं। इन्हीं का संस्करण नव-नाथों ने किया है। शाक्त - मतानुसार सर्व - श्रेष्ठ 'कौलाचार' में वर्णित ज्ञान को भी स्वीकार कर लिया गया है क्योंकि इसमें शिव का शक्ति के साथ सम्बन्ध है तथा यह आचार पूर्णतः सत्कार्यों से भरपूर है।

श्री जालन्धरनाथ जी ने कापालिक तत्त्वों के सभी सुसंस्कृत अंश ग्रहण कर, अपनी साधना में समाविष्ट किए हैं। इसके क्रूरता - पूर्ण अंशों को अहिंसा का बौद्धिक अधिष्ठान देकर, योग-साधना द्वारा यही तत्त्व-ज्ञान उन्होंने शक्ति-रूप में प्रस्तुत किया है। यह अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण व कठिन कार्य था। उन्होंने 'शिव-साधना' में 'शक्ति - उपासना' अन्तर्भूत की है। कापालिकों के क्रूर आचारों का संस्करण करने के लिए ही उन्होंने ऐसा किया है।

'नाथ-सम्प्रदाय' में मत्स्येन्द्रनाथ जी व गोरक्षनाथ जी की 'कौल-साधना' तथा श्री जालन्धरनाथ जी की 'कापालिक साधना'—दोनों प्रकार दिखाई देते हैं। एक ने शाक्त-मत-वादियों को अपनाया है और दूसरे ने शक्ति-उपासकों को। पञ्च - 'म'कार - साधना के गूढ़ार्थ का शास्त्र-शुद्ध विचारों से विवरण तथा तन्त्र-दृष्टि से प्रत्यक्षीकरण 'नाथ-पन्थ' में है। शरीर - त्याग के बाद की मुक्ति के बजाय नाथ - प्रणीत साधना द्वारा देह में रहते हुए ही मुक्ति पाने का मार्ग 'नाथ' बताते हैं। मोक्ष या मुक्ति मरणोत्तर प्राप्त होनेवाली 'गति' (सद्गति) नहीं

है, अपितु सभी कर्म करते हुए अनुभव करने की 'स्थिति' है—यह 'नाथ-पन्थीय' दृष्टि-कोण सचमुच व्यवहार्य तथा अपने आप में अन्य-तम है। नाथों के सभी सिद्धान्त कर्म-व्यापी हैं, कर्मठ नहीं। यह बात अति महत्त्व-पूर्ण है।

'सांख्य' २४ तत्त्वों का है और नाथ २५ तत्त्व मानते हैं अर्थात् 'ईश्वर' का स्वतन्त्र विचार इसमें है। 'सांख्य' त्रिगुणात्मक प्रकृति को जगत् का कारण बताते हैं, किन्तु 'नाथ' इसके साथ ही ईश्वर को भी प्रेरक रूप में स्वीकार करते हैं। 'नाथ - पन्थीय एक और सिद्धान्त' है—पिण्ड से पिण्ड का ग्रास करना। 'श्रीगोरक्ष-पद्धति' कहती है कि 'कुण्डलिनी' ही 'अजपा गायत्री' है। यही 'महा-विद्या' है। इसी से जीव-शिव-सामरस्य-सिद्धि की प्राप्ति होती है। यह चर्चा की नहीं प्रत्यक्षानुभूति की बात हैं। ऐसी अनुभूति केवल गुरु ही दे सकते हैं। इसी से 'नाथ-पन्थ' में गुरु-तत्त्व ईश्वर से भी श्रेष्ठ है।

'नाथ - पन्थीय' तत्त्वों का अत्यन्त संक्षिप्त विवेचन यहाँ किया गया है। इसी की प्रत्यक्ष साधना का वर्णन 'शाबर - मन्त्र - संग्रह' के अगले भाग में किया जाएग।

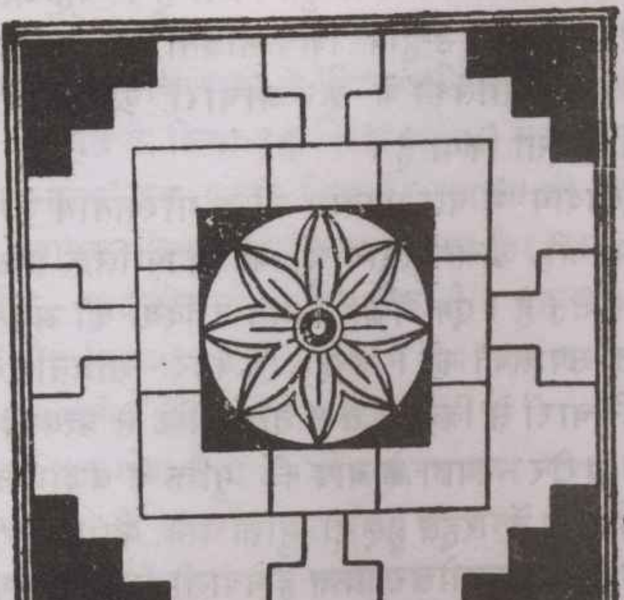

सिद्ध शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री पं० रामशङ्कर उपाध्याय
ग्राम रेखा, पो० आथर, जि० बक्सर (बिहार)

'शाबर'-मन्त्रों की प्रतिष्ठा है कि उनकी सिद्धि के विधान नहीं हैं। वे स्वतः सिद्ध हैं और आशु प्रभाव-कारी हैं। सन्त तुलसीदास ने इस सम्बन्ध में स्पष्ट कहा है—

कलि विलोकि जग-हित हर - गिरिजा।
शाबर - मन्त्र - जाल जिन्ह सिरिजा॥
अनमिल आखर अरथ न जापू।
प्रकट प्रभाव महेश - प्रतापू॥

इस घोषणा के बावजूद भी हम 'शाबर'-मन्त्रों की अनेक पुस्तकों में देख रहे हैं कि उनमें विधान और जप को इतना कठिन कर दिया गया है कि जन-साधारण तो उनसे लाभ उठा ही नहीं पाएँगे, भले ही नैष्ठिक एवं कर्मठ सज्जन कुछ पा लें। मैं समझता हूँ कि भगवान् शिव और माता पार्वती के वे सारे मन्त्र विश्व में और विशेषकर भारत में जन-समूह में व्याप्त हैं और जानकर सज्जन उनसे लाभ भी उठा रहे हैं, किन्तु वे इतने कृपण हैं कि मरते दम तक किसी को नहीं देते। इससे वे मन्त्र व्यापक नहीं हो पाते। मैं अपनी जानकारी में कुछ सज्जनों को जानता हूँ कि 'शाबर' - मन्त्र के वे अच्छे जानकार थे, किन्तु वे मन्त्र उनके साथ ही चले गए। ऐसे सज्जनों से नम्र निवेदन है कि वे उदार हृदय से उन सहज 'शाबर' - मन्त्रों का वितरण कर शिव-पार्वती के पुनीत सद्भावों का प्रचार कर उनके कृपा-पात्र बनें।

यदि 'शाबर'-मन्त्र आसान न होते, तो अशिक्षित पुरुष या स्त्री उनमें दक्षता कैसे पाते और कैसे प्रतिष्ठित होते? उनमें तो न बड़े मन्त्रों को रटने की योग्यता है और न पूजा-पाठ-जैसी स्वच्छता ही है। तथापि हम प्रत्येक गाँव में एकाध अशिक्षित 'डाइन' और 'टोनहों' की बदनामी तो सुन ही रहे हैं। बिच्छू, साँप के विष उतारनेवाले,

भूत झाड़नेवाले भी अनेक व्यक्ति हैं, जो न शिक्षित हैं और न स्वच्छ ! विधि-विधान भी वे नहीं निभा सकते । ऐसे सज्जनों से अनुनय-विनय करके ग्रहण कर "शाबर-मन्त्र-संग्रह" में प्रकाशित करवा कर यश के भागी बनें । "चण्डी" के प्रकाशक एवं व्यवस्थापक अति प्रशंसनीय हैं कि वे इस महत् कार्य के लिए निरन्तर प्रयत्न-शील हैं ।

यहाँ मैं कुछ आशु कल्याण-कारी मन्त्र प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिनमें कुछ विधि-विधान नहीं, केवल शुद्ध तन-मन से इनका अनुष्ठान कीजिए और लाभ उठाइए ।

(१) यात्रा की सफलता के लिए

मन्त्र : राम लखन कौशिक सहित, सुमिरहु करहु पयान ।
लच्छि लाभ लै जगत यश, मङ्गल सगुन प्रमान ।।

विधि : यात्रा में प्रस्थान करते समय उक्त मन्त्र मात्र एक बार स्मरण कर लें और इसका प्रभाव देखें । यात्रा में सहायक-ही-सहायक मिलेंगे और मार्ग सुख-दायी बन जाएगा ।

(२) यात्रा के गन्तव्य स्थान में सुविधा के लिए

मन्त्र : गच्छ गौतम ! शीघ्रं त्वं, ग्रामेषु नगरेषु च ।
असनं वसनं चैव, ताम्बूलं तत्र कल्पय ।।

विधि : यदि गन्तव्य स्थान अपरिचित हो और वहाँ रहने एवं भोजन की सुविधा का ठिकाना न हो, तो यात्रा में उस स्थान की सीमा पर ही रास्ते से धूल या ७ कङ्कड़ उठाकर उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित कर आगे की ओर फेंक दे । सारी सुविधा सहज ही प्राप्त हो जायगी । अनुभूत है ।

(३) कार्य की सफलता के लिए

मन्त्र : शूर शिरोमनि साहसी, सुमति समीर-कुमार !
अगम सुगम सब काम करु, कर-तल सिद्धि विचार ।।

विधि : कार्यारम्भ में उक्त मन्त्र पढ़ ले, अवश्य ही सफलता मिलेगी ।

(४) भण्डार अक्षय करने के लिए

मन्त्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ईश्वर - ध्यानम् । अन्नपूर्णायै नमः । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं ह्रीं हुड्कली कुरु स्वामिनी जय विजय अप्रतिम-चक्रे मम कर्षय सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि : उक्त मन्त्र १०८ बार जपकर भोज-पत्र पर अनार की कलम से अष्ट-गन्ध की स्याही बनाकर लिख ले और उसे खाद्य-वस्तु के भण्डार में या बक्से में डाल दे । धन अक्षय बना रहेगा ।

(५) गृह-रक्षा के लिए

मन्त्र : ॐ ह्रीं चण्डे ! चामुण्डे ! भ्रुकुटि-अट्टाट्टे ! भीम-दर्शने ! रक्ष रक्ष चौरेभ्यः, वज्रेभ्यः, अग्निभ्यः, श्वापदेभ्यः, दुष्ट-जनेभ्यः, सर्वेभ्यः, सर्वोपद्रवेभ्यः, गण्डीः, ह्रीं ह्रीं, ठः ठः ।

विधि : गाय का गोबर या मन-पसन्द रङ्ग का घोल लेकर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर अभिमन्त्रित कर उससे घर के चारों ओर रेखा खींच दे । ऐसा कर देने पर घर में चोर - डाकुओं के घुसने का भय, अग्नि - भय, हिंसक जन्तु - भय, वज्र-भय और दुष्ट मनुष्यों के प्रवेश का भय नहीं रहता ।

(६) भूत-प्रेत से रक्षा के लिए

मन्त्र : जय हनुमान ज्ञान-गुन-सागर ।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर ॥

विधि : जहाँ भी भूत-प्रेत का भय हो, वहाँ उक्त चौपाई पढ़ दे । इसे सुनते ही वे भाग जाएँगे और आप सुरक्षित हो जाएंगे । किसी को भूत पकड़ ले, तो उसे भी १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित पवित्र भस्म लगा दे, भूत उसे छोड़कर भाग जाएगा ।

(७) कारा-मुक्ति के लिए

विधि : यदि किसी स्वजन को मुकदमे में कारागार की सजा होनेवाली हो या हो गई हो, तो अनुष्ठान-पूर्वक 'श्रीहनुमान-चालीसा' का १०८ बार पाठ कर ले या किसी ब्राह्मण से करा दे । कारागार से अवश्य मुक्ति मिल जाएगी । अनेक बार का मेरा अनुभूत है । ● ●

श्रीहनुमत जंजीरा

प्रस्तुत-कर्त्ता : नाथ जी दीपकनाथ मनसुखनाथ
गञ्जीवाड़ा प्लाट, मालिया हाटीना, जूनागढ़ (गुजरात)

(१) ॐ गुरु जी । हनुमान पेलवान । बारे बरस का जुवान, हाथ में गदा—मुख में पान । ज्याँ समरूँ, त्याँ आगेवान । लुवे की पेटी—वज्र का ताला, पापी पाखण्डी का मुँह काला । जती सति का बोल-बाला, हमेरा पण्ड की रक्षा करो श्रीबजरङ्गवाला । सबद साचा, पण्ड काचा । बजरङ्गवाला रखवाला ।

(२) ॐ गुरु जी । हनुमन्ता बलवन्ता, घाट कोट रहन्ता । मार-मार करन्ता, पाय पडन्ता । हनुमान जति, लख-पति । चार भोम की रखावाली करे । आगे अर्जुन, पाछे भीम । सोल वाघ, संपेसीम । अजर जरे । नजर जरे । पण्ड प्राण की रक्षा श्रीहनुमान करे । जिसके हाथ में हनुमान बसे । भैरव बसे लँलाट । पण्ड काचा, सबद साचा । बजरङ्ग-वाला रखवाला ।

(३) ॐ गुरु जी । नगारा की ठौर पड़े, राम की फौज में हनुमान चड़े । तेल-तेल महा-तेल । राजा-प्रजा, माणस तेल । तेल की लेरकी-लपेट । यहाँ से छोड़ूँ हनुमान के बाण । सुता कु जगा लावे । बैठे कू बाँध लावे । पण्ड काचा, सबद साचा । चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।

(४) ॐ गुरु जी । हनुमन्ता वीर वङ्कड़ा । तुजे समरे होय वज्र-शरीरा । करु गुगल का धूप । देखूं तेरा स्वरूप । आसने बेसी—समरु राजा-प्रजा वश कर देजे मोई । चालनारा की चाल बाँध । बोलनार के बोल बाँध । मडा बाँध । मसाण बाँध । एसे बाँध कर आव । सबद साचा । पण्ड काचा । चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।

विधि : काल-रात्रि में उड़द के आटे से सवा पाव की बाटी का नैवेद्य, तेल और सिन्दूर हनुमान जी को चढ़ाए । चढ़ाए हुए तेल का दिया जलाकर १०८ बार उक्त किसी भी मन्त्र का जप करे । तब वह सिद्ध हो जाएगा ।

(५) ॐ गुरु जी। हनुमन्ता बलवन्ता। जेने ताता तेल चड़न्ता। जे नर आवे मार - मार करन्ता, ते नर पाय पड़न्ता। इन्हें कहाँ से आयो ? मेरु पर्वत से आयो। कोण लायो ? गौरी - पुत्र गणेश लायो। कोण के काज ? वीर हनुमान के काज। हनुमान बङ्का मारे डङ्का। गुरु चोट डाकणी-साकणी। माथे हाँक वगाडे वीर हनुमन्ता। कागज-पत्र-रोल-सोल-मोल। जती-सती की मदद मति। संज्ञा माथे फारगती। चल-चल कर जहाँ पड़े डेरी। पड़े जले थले नवकुल नाँग की आज्ञा फिरे। मेरा शबद फिरे, श्रीरामचन्द्र की आज्ञा फिरे। सबद साचा, पण्ड काचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

(६) इल-इल-महा-इल। बोलते की जीभ कील। चलते का पाँव कील। मारते का हाथ कील। देखते की नजर कील। मुए की कबर कील। भूत बाँध। पलीत बाँध। बाँधनेवाला हनुमान कहाँ से आया ? कली कोट से आया। सब हमारा विघ्न हरता आया। जैसा रामचन्द्र का काज सुधार्या, तेसा काज हमारा सुधारो। मेरा सबद फिरे, श्री रामचन्द्र की आज्ञा फिरे। सबद साचा, पण्ड काचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

(७) उत्तर खण्ड से जोगी आया। साथे हनुमान वीर लाया। अताल बाँधू। पाताल बाँधू। पर-मन बाँधू। चर-मन बाँधू। चोरा बाँधू। चौंटा बाँधू। भूत बाँधू। पलीत बाँधू। डाकणी बाँधू। सांकणी बाँधू। दश मस्तकवाला राबण बाँधू। सबद साचा, पण्ड काचा। चला मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : शनिवार को हनुमान जी को तेल, सिन्दूर, उड़द के आटे की बाटी, गूगल की धूप अर्पित करे और हनुमान जी को चढ़ाए हुए तेल का दिया जला कर रात के १२ बजे से १०८ बार उक्त किसी मन्त्र को पढ़ने से वह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

वृहत् शाबर-मन्त्र-संग्रह

संग्रह-कर्त्ता : श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह
ताक-फरी बनियावाड, जामनगर, (गुजरात)

१. शिशु-रोग-निवारक 'श्रीराम-रक्षा झारा'

ॐ रोम-रोम की रक्षा राम जी करें। हाडन की रक्षा हर जी करें। उकान की रक्षा टीकम जी करें। पिण्डरी की रक्षा मोहन जी करें। गोड़न की रक्षा गोवर्धन जी करें। जाँघन की रक्षा जनार्दन जी करें। इन्द्री की रक्षा इन्द्र जी करें। कमर की रक्षा केशव जी करें। पेट की रक्षा पुरुषोत्तम जी करें। खंवान की रक्षा गरुड जी करें। कण्ठ की रक्षा कृष्ण जी करें। ओडन की रक्षा हनुमन्त जी करें। जिहवा की रक्षा पार्वती जी करें। नाक की रक्षा नरसिंह जी करें। नेत्र की रक्षा नारायण जी करें। ब्रहमाण्ड की रक्षा श्री सकलदेव शास्त्र सहाय करें। चोटी की रक्षा चतुर्भुज जी करें। आकाश की रक्षा ज्योति-स्वरूप जी करें। रैंन की रक्षा चन्द्रमा जी करें। दिन की रक्षा श्रीसूर्यनारायण जी करें। धरती माता सदा रक्षा करवो करें। अनहद नाद बाजे, धन तृण माल जञ्जाल-भय व्यापै न पीरा। अण्डे सो ब्रहण्ड परख डोलै। खण्डे - खण्डे झल होय, तो झल को मारूँ। घाव होय, तो घाव कूँ मारूँ। छल - छिद्र होय, तो छल - छिद्र को मारूँ। जल में, थल में, फूल में, दठकर बाँधो। पाल बीज जमानन दे गया। श्रीब्रह्मा-विष्णू-मुरार तल झडै, पिण्डवा पडै। जहाँ

बैठे, बाबा हनूमन्त हुँकार करे। हाट हौड काया, जामें शब्द समाया। राख - राख हो निरञ्जना सरनाई तेरी। आल जञ्जाल भय व्यापैं न पीडा। चौकी फिर गए बावना बीरा। इत के राम - रक्षा सत्य करे। भाषी सत्य - नाम सत्य-वीर सत्य-नाम आदेश गुरु का। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पर्व-काल या ग्रहण-काल में उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करके सिद्ध करे। बाद में उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़ते हुए किसी रोग-युक्त शिशु या बालक को मोर-पङ्ख से झारे। इससे बालक के सभी रोग शान्त हो जाते हैं और वह नीरोग होता है। यथा-शक्ति परमार्थ करे।

विशेष : अन्यत्र उक्त मन्त्र में निम्न प्रकार से पाठ-भेद मिलते हैं : १ 'ब्रहण्ड' के स्थान पर 'बह्माण्ड'। २ 'परख'—'मरख'। ३ 'घातकूँ'—'घातको'। ४ 'व्यापैं'—'व्यायैं'।

२. महमदा पीर के चढ़ाव का मन्त्र

ॐ नमो हाकान्त, युगराज कारन्त काया। जिस तरह कारण युगराजा मैं तोका ध्याया, हङ्कारत युगराज आया। गाजन्त आया, धोरन्त आया। सिर के फूल बखेरन्त आया, और की चौकी उठावन्त आया। आपकी चौकी बैठावन्त आया। और का किवाँड तोडता आया। आपका किवांड भेडता आया। बाँधि-बाँधि ! किसको बाँधि ? भूत को बाँधि, प्रेत को, देव - दानव को बाँधि। उडन्त गडन्त योगिनी बाँधि, चौर चिरणागार को बाँधि। तिरसठ कलुवा को बाँधि, चौसठ योगिनी को बाँधि। बावन वीर को बाँधि, आकाश की परियों को बाँधि। डाकिनी-शाकिनो को बाँधि, चेटक को बाँधि। छल को बाँधि, छिद्र को बाँधि। द्वार

को बाँधि, हाट को बाँध। गलो को बाँध, गिरारे को बाँध। किया को बाँधि, कराय को बाँधि। अपनी को बाँधि, पराई को बाँधि। भली को बाँधि, कुचली को बाँधि। पीली को बाँधि, स्याह् को बाँधि। सफेद को बाँधि, कालि को बाँधि। लीली को बाँधि, बाँधि रे गढ़ गजनी के। महमदा पीर, चलै तेरे सङ्ग सत्तर सो बीर। जो बिसारी जाय, तो सौ राजा हलाल जाय। उलटी मार, पलटी मार। पछाड़ मार, घर मार। कब्जा चढाय, सुडिवा हलाय, शीश खिलाय। शब्द साचा, पिण्ड काचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : 'ग्रहण' की रात्रि में उक्त मन्त्र का १००० 'जप' करे। मांस-मदिरा का भोग लगाए। महमदा पीर हाजिर होता है। उस समय साधक को घबराना नहीं चाहिए। जो - जो कार्य हो, उसके लिए प्रार्थना करे। उसकी कृपा से मन-चाहा कार्य सिद्ध हो जाएगा। 'प्रयोग' करने के पूर्व 'आत्म-रक्षा' व 'हींसार' करके बैठना चाहिए। अशुभ कार्य के लिए प्रार्थना न करे।

३. मुहम्मदा पीर साधने का मन्त्र

बिस्मिल्लाहेर्रहेमानिर्रहीम ! पाँच घूघरा कोट जञ्जीर, जिस पर खेले मुहम्मदा पीर। सवा मन का तीर, जिस पर खेलता आवे मुहम्मदा वीर। मार-मार करता आवे, बाँध-बाँध करता आवे। डाकिनी को बाँधूँ (बांधि) कुवा बावडी लावो। सोती को लावो, पीसती को लावो। पकाती को लावों, जल्द जावो। हज़रत इमाम हुसेन की जाँघ से निकाल कर ल्यावो। बीबी फातमा के दामन सू खोलकर ल्यावो। नहीं लावे, तो माता का चूखा दूध हराम

कहेलावे। शब्द साचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र को नौचन्दी जुमेरात की सन्ध्या से जपना प्रारम्भ करके प्रति-दिन १० बार पढ़े। लोहबान को धूप दे। इक्कीस जुमेरातों में मुहम्मदा पीर हाजिर होगा। जिस काम की विनती करेंगे, वह काम कर देगा। केवल लोक-कल्याण के कार्यों के लिए ही उनसे विनती करे। बुरे कामों में वे कभी मदद नहीं करते। सिद्धि के बाद रोगी के ऊपर उक्त मन्त्र पढ़कर फूंक दे, तो रोगी अच्छा हो जाता है।

विशेष : किसी के पास उक्त मन्त्र और विधि के सम्बन्ध में यदि कुछ अन्य सुझाव हों, तो लिखकर भेजें।—लेखक

४. मुहम्मदा पीर का हाजरात का मन्त्र

बिस्मिल्लाहेर्रहेमानिर्रहीम ! महम्मदा ताह्या सिला, रनवलखता जी का असवार यहाँ चलन्ता। कौन - कौन चलया? आजैगिर पर पर्वत चले, हाजी चले, गाजी चले। ढोल बाजन्त, भेरी बाजन्त। अहेमदा चलन्त, महेमदा चलन्त। सत्तर सिला चलन्त, बहत्तर बल्लभ चलन्त। एक लाख अस्सी हजार पीर पेगम्बर चलन्त, बावन वीर चलन्त। चौसठ जोगनी चलन्त, नौ नारसिंह चलन्त। बारह रावण चलन्त। चौसठ मूसा चले सूलेमान। पेगम्बर का तखत चलन्त। ईसा पेगम्बर का तखत चलन्त, बहत्तर खान वज्राईल पेगम्बर का तखत चलन्त। लाल परी चली, सुपेद परी चली। जरद परी चली, श्याम परी चली। सबज परी चली, हूर परी चली। जूर परी चली, अलोल परी चली। आसमान परी चली, सुपेद परी चली। आकाश से उतरी बराय खुदा, मेरे काम कूँ सिताबी उतार

लयावणा । एक चलन्ता, एक सौ चलया । दोय चलन्ता, दोय सौ चलया । तीन चलन्ता, तीन सौ चलया । बडे बेग सूँ चलया, उडा फुडा देव चलया । मन्दाऊ कालेश्वरी चली, लङ्का पै रावण चलया । हनुमन्त चले घूमन, गरसूँ देवी धूमा चली, नदी नालेषु चली । मन्दोदरी रावनपुरी सूँ चली । उलटी पाखर, सूलटी लागी, जो कोई कहे हमारी बूरी । उलटी सोमरली देखूँ, ते ताल मन्त्र तेरी शक्ति । विस्मिलाहेर्रहेमानिर्रहीम ! उत्तर का बाजा बजा, उतर का बादशाह आया । पश्चिम का बाजा बजा, पश्चिम का बादशाह आया । पूरब का बाजा बजा, पूरब का बादशाह आया । काले-काले के असवार । जपनी-अपनी जमात सिताबी लेकर आवणा । जहाँ हकालूँ, जहाँ हाजिर रहेना । दे खुदा महम्मदा की सुखीर पीर । नीर-नीर लीला घोड़ा, नीला जीन, जिस पर चढ़ि आया महम्मदा पीर । रोजा करे, निवाज गुजारे । अन्न-पानी के कने न आवै, खाय-खाय अखज पर हरे । सौ मुसलमान बिहिस्त में जाय । सवा मन लोहे को जञ्जीर तोडतो जाई, तोडतो आव । हाथ कुदाडी, गले जञ्जीर । ऐसी कही, सुनो महम्मदा पीर । अपनी मुदारा पेश करी, पराई मुद्रा तोड़ डाल । हमारी हकार, तुम्हारी पुकार । किले नारसिंह, किले की असवारी ठः ठः स्वाहा ।

विधि : 'ग्रहण-काल' में जितना हो सके, उतना उक्त मन्त्र का जप करे । बाद में 'प्रयोग' करे । प्रयोग के लिए सवा हाथ सफेद कपड़ा ले । गूग्गल और लोन (नमक) की धूप दे । फिर सवा सेर चावल की मस्जिद बनाकर, एक थाली पानी भर कर रक्खे । मस्जिद के ऊपर चौमुखा 'दीपक' जलाए । तब किसी कुमारी कन्या को स्नान

कराकर नवीन वस्त्र पहिना कर सामने बैठाए और गुड़ की गोली को १४ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कन्या को खिलाए। कन्या को मस्जिद के ऊपर रक्खे हुए दीपक के ऊपर दृष्टि जमाने का आदेश दे। जब कन्या उसके ऊपर बराबर एक - चित्त से देखती रहे, तब जो पूछना हो, वह पूछे। कन्या उत्तर देगी और सत्य-सत्य कहेगी।

'प्रयोग' के बाद चावल की बनाई हुई मस्जिद को नमस्कार कर 'विसर्जन' करे। चावल फकीर को दे। आवश्यकता पड़ने पर यथा-शक्ति परमार्थ करे।

विशेष : जैन, हिन्दू और मुसलमान जनता में उक्त प्रकार से 'हाजरात' का विधान प्रचलित है। बालक या कन्या के स्थान पर वयस्क आदमी भी 'हाजरात' में देख सके, ऐसे 'प्रयोग' यदि किसी के पास हों, तो वह 'चण्डी कार्यालय' को अवश्य भेजें। 'हाजरात' के 'प्रयोग' प्राचीन काल से चलते आए हैं। 'प्रयोग' में 'हिसार' या 'आत्म-रक्षा-मन्त्र' का उपयोग अवश्य करे। सामान्यतः आवेश थोड़ी देर के बाद उतर जाता है, लेकिन कभी आवेश अधिक समय तक हो, तो कन्या को खतरा हो सकता है। इसलिए 'हिसार' या 'आत्म-रक्षा' मन्त्र का 'जप' करके बैठना चाहिए। 'कन्या' की स्वीकृति लेकर ही प्रयोग करे और उसके माता - पिता की आज्ञा भी ले ले। यह प्रयोग जब जरूरत हो, तभी करे।

५. हजरत या हाजरात का इस्लामी शाबर तेल-दर्शन मन्त्र

बिस्मिल्लाहुर्रहेमानुर्रहीम, खुदाई बड़ा, तू बड़ा जैनु-दीन। पेगम्बर दुनी तेरा सादात, कुरो वादना मुरादी बेबुनियादी। तुर्क मापरि, तायिया सिलार, देखूँ तेरी शक्ति। बेगी बाँधी ल्याव, नौ नारसिंह - चौरासी कलवा, बारा ब्रह्मा, अठारह सौ शाकिनी। कामन दुरामन छल-छिद्र, भूत-प्रेत, चोर-चाखर, अङ्गीया बैताल—बेगी बाँधि लाव। जो न बाँधि लावै, तो दुहाई सुलेमान पेगम्बर की।

विधि : प्रति शुक्रवार को तैल, इत्र, लौंग, धूप, मिठाई इत्यादि से पूजन करे। बाद में १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़े। ४० दिनों

तक इस प्रकार पाठ करने से मन्त्र की सिद्धि हो जाती है। बाद में जब प्रश्न का उत्तर प्राप्त करना चाहे, तब मन्त्र के देव का आवाहन करे। इसके लिए मिट्टी से चौका लगाकर उस पर चावल की मस्जिद बनाए। मस्जिद का आकार हो—ऐसा लगना चाहिए। एक पट्टे के ऊपर त्रिशूल का चित्र बनाए या त्रिशूल लिखे। इस पट्टे के ऊपर कुवाँरी कन्या को स्नानादि करवा कर स्वच्छ वस्त्र पहिना कर बैठा दे। कन्या के सामने तेल का दीपक जलाकर रख दे। स्वयं मन्त्र-पाठ करे और चावलों को कन्या के मस्तक पर मारता रहे। साथ ही प्रश्न करता रहे, तो सही उत्तर मिलेगा। जो प्रश्न पूछोगे, उसका उत्तर प्राप्त हो जायगा। कन्या को यह उत्तर दीपक में देखने से मिलता रहेगा। 'हिसार' या 'आत्म-रक्षा' अवश्य करे।

६. पीर विरहना का मन्त्र प्रयोग

पीर विरहना, फूल विरहना, घुघुं करे। सवा सेर का तोसा खाए, अस्सी कोस का धावा करे। सात सै कुतक आगे चले, सात सै कुतक पीछे चले। छप्पन सै छूरी चले। बावन से वीर चलें, जिनमें गठ गजना का पीर चले। और की ध्वजा उखाड़ता चले, अपनी ध्वजा टेकता चले। सोते को जगावता चले, बैठे को उठाता चले। हाथों में हाथकडी गेरे, पैरों में परे बेडी गेरे। हलाल माही दीठ करे, मुरदार माही पीठ करे। कलवान नवी कूँ याद करे। ॐ ॐ ॐ नमः ठः ठः स्वाहा।

विधि : 'ग्रहण' की रात्रि से प्रयोगारम्भ करे। नित्य १०८ बार जपे। चमेली के पुष्प चढ़ाए। हलवे का सवा सेर भोग लगाए। ४० दिनों में पीर विरहना उपस्थित होगा। उस समय यदि डरे नहीं, तो जो काम उससे कहा जाएगा, वह काम वह कर देगा। आपके समक्ष वह उपस्थित रहेगा। वह आपकी सहायता सदा के लिए करता रहेगा।

विशेष : १ पीर की साधना में पाक-साफ रहना अनिवार्य है।

२ उक्त प्रयोग के बाद दूसरा 'प्रयोग' संरक्षण-सम्वर्धन हेतु दिया गया है। उसमें कुछ शब्द-भेद, पाठ-भेद और विधि - भेद हैं। दोनों में से किसी एक 'प्रयोग' को करे।

३ अशुभ कार्य हेतु उक्त 'प्रयोग' कदापि न करे।

७. विरहना पीर का संरक्षण-मन्त्र

वीर विरहना, फूल विरहना, धुँ धुँ करै। सवा सेर का तोसा खाए, अस्सी कोस का धावा करे। सात से कुतक आगे चले, सात से कुतक पीछे चले, जिसमें गठ गजना का पीर चले और ध्वजा टेकता चले। सोते को जगावता चले, बैठे को उडावता चले। हाथों में हथकडी गेरे, पैरा में बेडी गेरे। माँही पाठ करे, मुरदार माँही पीठ करे। कलाबोन नवी कूँ याद करे। ॐ ॐ ॐ नमः हूँ ठः ठः स्वाहा।

विधि : 'ग्रहण' की रात्रि से प्रयोगारम्भ करे। १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करते-करते चमेली के १०८ फूल चढ़ाए। सवा सेर आटे का शुद्ध घी से बनाए हुए हलुए का भोग लगाए। ऐसा ४० रात्रि करे। ४१ वें दिन फिर से यह साधना करने से विरहना पीर साधक के सामने आकर दर्शन देता है। विरहना पीर को 'प्रणाम' करके इच्छित कार्य बताना चाहिए। उसकी कृपा और प्रसन्नता से साधक अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करता है। पूरा 'प्रयोग' ४१ दिनों का है। निर्भयता-पूर्वक 'प्रयोग' करे। मन्त्र-जप या स्मरण करते रहने से वीर सदैव साधक के आस-पास रहकर उसकी रक्षा भी करता है।

८. सर्व-कार्य-साधक जञ्जीरा

['शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ६, पृष्ठ ३५, ५ (१) पर एक 'जञ्जीरा' छपा है। वही मन्त्र कुछ भिन्न रूप में यहाँ 'संरक्षण' या 'सम्वर्धन' हेतु दिया जा रहा है।]

ॐ नमो, सात समुद्र के बीच शिला, शिला के ऊपर सुलेमान पैगम्बर बैठा। सुलेमान पैगम्बर के चार मवक्किल, तारिया-सारिया-जारिया-जमारिया। एक मवक्किल

पूर्व को धाया, देव-दानव को बांधि लाया। दूसरा मवक्किल पश्चिम को धाया, भूत-प्रेत बाँधि लाया। तीसरा मवक्किल उत्तर को धाया, अयुत पितृ को बाँधि लाया। चौथा मवक्किल दक्षिण को धाया, डाकिनी - शाकिनी को पकड़ि लाया। चारि मवक्किल चहुँ दिशि धावैं। छल-छिद्र कोऊ रहन न पावैं। रोग-दोष को दूर बहावैं। शब्द साचा, पिण्ड काचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : कपड़े के चार पुतले बनाए। चारों पुतलों को अर्ध-रात्रि के समय चार कोनों पर गाड़ दे। बाद में धूप - दीप करके उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। इससे सभी कार्यों में सिद्धि होती है।

विशेष : 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ६, पृष्ठ ३५ - ३६ में क्रमाङ्क ५ का मन्त्र (२) है। उस मन्त्र के स्थान पर भी यही मन्त्र किया जा सकता है। उसकी विधि वहीं दी हुई है। उसके अनुसार ही करे, उसमें कोई परिवर्तन न करे।

६. सर्व-कार्य-साधक जञ्जीरा

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ ३६ में जो 'प्रयोग' प्रकाशित है, उससे भी अच्छा एक और 'प्रयोग' प्राप्त हुआ है। इस 'प्रयोग' की विधि उक्त 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', पृष्ठ ३६ पर प्रकाशित मन्त्र (२) के समान ही है। उड़द के दानों से प्रयोग होता है।]

मन्त्र : ॐ नमो बिस्मिल्लाह् रहिमान रहीम। गजनी सो चला मुहम्मदा पीर। चला-चला सवा सेर का तोसा खाय। असी कोस का धावा जाय। श्वेत घोड़ा, श्वेत पालन चापै। चढ़ै महमुदा ज्वान। नौ सौ कुत्तक आगे चलैं, नौ सौ कुत्तक पीछे चलैं। काँधा पाछे भात डाल ध्याया चलैं। चालि-चालि रे मुहमदा पीर, तेरे सम नहि कोई वीर। हमारे चौर को लयाव। सात समुद्र की खाईं सों लयाव। बह्मा के वेदों से लयाव। काजी की कुरानों से लयाव। अठारह पुरानों से लयाव। जाव-जाव, जहाँ हो, तहाँ से ल्याव। गढ़ सों—पर्वत सों—कोठ सों—किला सों ल्याव, मुहल्ला गली सों ल्याव। कुश्चा

सों–चोहरा सों ल्याव। सेत-खानो सों ल्याव। मोरी पनालो सों ल्याव। बाग-बगीचा सों ल्याव। कुँआ - बावड़ी सों ल्याव। बारह आभूषण, सोलह सिङ्गार सों ल्याव। काजल-काजरोटी सा ल्याव। मण्ढी की मौंठ सौं, रोली मोली सों, हाट-बजार सों ल्याय। खाट सों, पाया सों, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा की घूमती बलाय को ल्याव। हाजिर कर। हाड - हाड, चाम - चाम, नख - सिख, रोम-रोम सों ल्याव रे! ताइया सिलार जिन्द पीर मारतो, पीटतो, तोड़तो, पछाड़तो। हाथ हथकड़ी, पाँव में बेड़ी। गला में तौक उल्टा कब्जा चढ़ाय। मुख बुलाय, सीस खिलाय। कैसे हूँ लाव। लिए बिन मत आव। ॐ नमो आदेश गुरु को।

विधि : गोबर का चौका लगाए। रात्रि के समय धूप-दीप-नैवेद्य सह चन्दन की माला चढ़ाए। सवा सेर मोहन-भोग का भोग लगाए। बाद में उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। जब कोई काम करना हो, तब 'उड़द' के दानों को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके मस्तक के ऊपर रखे। इससे कार्य सिद्ध होंगे।

१०. ऋद्धि-सिद्धि का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ४० में २३ वाँ क्रमाङ्क। यहाँ उसी क्रम में दूसरा मन्त्र दिया जा रहा है।)

मन्त्र : ॐ नमः शङ्ख-वादनी। मम करती धरनी उघर। इन चण्डी सवा पहर होय। हाथ प्रक्षालि, मुख धोऊं। अपनो जो चीतो, सोई फल पाऊँ। पग बन्ध, भुज बन्ध, मुझ समान बन्धन। चार लाडु शिर सिन्दूर। ऋद्धि - सिद्धि देवो। बाबा नन्द को बैठो होय, सोऊ लाय। पास उठाय सो ले आवै। न ल्याव, तो लाज गौरी माय। या मन्त्र को ईश्वर पार्वती जाने, घर बैठी ऋद्धि-सिद्धि जो आने। ईश्वरी मारी चटका धाव, दे गणपति राय। शब्द साचा, पिण्ड काचा। फुर मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : ब्रह्म-भोज करने की सामग्री को एक कमरे में कपड़े से ढंक कर रखे। इस सामग्री में से चार लड्डू लेकर कुएँ पर जाए। साथ में एक कोरा 'कलश' भी ले जाए। 'कलश' में एक लड्डू रखे और उस लड्डू को कुएँ में गिरा दे। फिर एक लड्डू 'कलश' में और रखकर, उसे निकाल कर बाहर लुढ़का दे। इस तरह दो लड्डू कुएँ

के भीतर गिराए और दो लड्डू बाहर लुढ़काए। फिर 'कलश' को कुएँ के जल से भर कर अपने घर ले आए तथा उसे भोजन - सामग्री-वाले कमरे में एक कोने में रखे। कमरे के कोने में 'कलश' स्थापित करके सामग्री में से कुछ नैवेद्य-स्वरूप खाए। शेष सामग्री अलग खूटी पर टाँग दे। बाद में उस टँगी हुई सामग्री के पास बैठकर मन्त्र का 'जप' करे। भोजन बाँटने में नियुक्त व्यक्ति उस सामग्री में से कुछ सामग्री निकाल भोजन-भोज हेतु वितरित करे। इससे सामग्री में कभी कमी नहीं होगी। कमरे में नियुक्त व्यक्ति को ही जाना चाहिए और किसी को नहीं आना-जाना चाहिए।

मन्त्र को 'ग्रहण-काल' में सिद्ध करने के बाद ही 'प्रयोग' करना चाहिए।

पाठ-भेद : ऋद्धि-सिद्धि के उक्त मन्त्र में कुछ पाठ-भेद मिलते हैं। यथा—

१ भुज-बन्ध—भुजग-बन्ध। २ बन्धन—बन्धण। ३ चार—चारि। ४ चटका—चटाका, ५ बाबा नन्द को—बाबा नन्द को पूत। कहीं-कहीं मन्त्र में "न जावै न ल्यावै, तो लाज गौरी माय" है। पाठक बन्धुओं से निवेदन है कि यदि किसी के पास शुद्ध पाठ हो, तो भेज कर सहयोग दें।

११. वीर-सिद्धि का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ ५९-६०, क्रमाङ्क २७ देखिए। उसमें कुछ त्रुटियाँ हैं। निम्न-लिखित मन्त्र आवश्यक सुधार के साथ प्रस्तुत है। शीर्षक भी भिन्न दिया जा रहा है।)

मन्त्र : ॐ नमो देव-लोक दिविख्या देवी, जहाँ बसै इस्माईल योगी। छप्पन भैंरों, हनुमन्त वीर। भूत-प्रेत-दैत्य को मारि भगावें, पराई माया ल्यावें। लाडू, पेंडा, बरफी, सेव, सिघाँडा, पाक बतासा, मिश्री, घेवर, बालूसाई, लौंग, डोडा, इलायची दाना। तले देवी कालिका, ऊपर हनुमन्त गाजैं। ऐवी वस्तु मैं चाही (चाहि) लाव, न तो तेंतीस कोटि देवता लाजैं। मिरची, जावित्री, जायफल, हरडे, जङ्गी हरडे, बदाम, छुहारा, मुकरै रामबीर तो बतावै। वस्ती लक्ष्मण बीर पकडावै। हाथ भूत-प्रेत के चलावै, हाथ हनुमन्त वीर को। सौ

कोऊ जावे, सो कोसाँ की बस्ता लावे। न ल्यावै, तो एक लाख असी हजार पीर पैगम्बर लाजैं। शब्द साचा, पिण्ड काचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : यदि गाँव के बाहर कोई अन्धा कुआँ हो, तो वहाँ जाए। हनुमान जी की एक मूर्ति बनाए। उसके सम्मुख बैठकर धूप-दीप देकर पूजा करे। फिर उक्त मन्त्र का २१ बार 'जप' करे। सवा पाव क़ा रोट, घी - चीनी के साथ श्रीहनुमान जी को भोग लगाए। भोग लगाकर आचमन कराए। बाद में नैवेद्य-स्वरूप उसे स्वयं ग्रहण करे। ऐसा २१ दिन तक करे। आकाश-वाणी होगी, तब आप जो माँगेंगे, वह सब आपको मिलेगा।

विशेष : दोनों में से कोई एक प्रयोग कराए या करे। ऐसे प्रयोगों में अश्रद्धा न करे। प्रयोग की सफलता साधक के इष्ट - बल और भक्ति-योग के बल पर आधारित है।

१२. नाहरसिंह वीर का मन्त्र

मन्त्र : ऊँचा परबत ऊँचे टीले, उस पर गणवीरे के चोले। नाहरसिंह महाबीर के मन्त्र के टीले। बीर आवे, पुष्प सुगन्धित पावे। गुरु गोरखनाथ मछन्दर की दुहाई। मेरी रक्षा करो, बीरों की माई! नाहरसिंह बीर की चली सवारी आई। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र की साधना करने से पहले सुरक्षा हेतु 'रक्षा-प्रयोग' करे। उदाहरणार्थ, 'श्रीहनुमान चालीसा' का १०,००० पाठ करे। इससे हनुमान जी की सिद्धि हो जाएगी। उसके बाद नाहरसिंह बीर का उपर्युक्त 'प्रयोग' करे। 'हनुमान चालीसा' की सिद्धि किए बिना 'प्रयोग' का आरम्भ न करे। यदि ऐसा न हो सके, तो उक्त 'प्रयोग' न करे।

नाहरसिंह वीर की साधना रात्रि के समय में, स्वच्छ होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर करना चाहिए। काले हकीक की माला से 'जप' करे। प्रति-दिन दूध और पेड़े का 'भोग' लगाए। कम-से-कम १२,५००० 'जप' करे।

'साधना-काल' में यदि डरावने दृश्य दिखाई दें, तो डरे नहीं। बिना डरे 'हनुमान चालीसा' का पाठ करे। इससे स्व-सुरक्षा होगी।

मन्त्र-सिद्धि के बाद सभी कष्ट दूर होंगे। मुसीबतें दूर होंगी। रोगों की शान्ति होगी और भूत-प्रेत-बाधा की शान्ति होगी।

उक्त 'साधना' को कुछ लोग जटिल कहते हैं। अनुभवी साधकों के मार्ग-दर्शन में ही यह 'साधना' करनी चाहिए।

१३. श्रीज्वाला-मुखी देवी का मन्त्र

मन्त्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिंहेश्वरी ज्वाला - मुखी, जृम्भिणी, स्तम्भिनी, मोहनी, वशीकरणी, पर-धन-मोहनी, सर्वारिष्ट-निवारणी, शत्रु-गण संहारिणी, सु-बुद्धि-दायिनी। ॐ आं फ्रां ह्रां त्राहि - त्राहि, अक्षोभय-अक्षोभय, अमुकं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : 'दीपावली' की रात्रि से उक्त प्रयोग आरम्भ करे। 'दीपावली'-रात्रि में जितना अधिक 'जप' कर सके करे। चमेली के फूल चढ़ाए। बरफी इत्यादि का भोग लगाए और दशांश 'हवन' प्रचलित द्रव्य से करे। दीपावली - रात्रि के बाद प्रति - दिन 'जप', पूजन करे।

'सिद्धि' होने पर साधक जो-जो इच्छा करेगा, वह सब मिलेगा। देवी की सहायता से कामनाएँ पूर्ण होंगी। मन्त्र में जो-जो कार्य निर्दिष्ट हैं, वे सभी पूर्ण होते हैं।

नित्य १ माला 'जप' अवश्य करे। इससे एक वर्ष में 'ज्वाला-मुखी देवी' सिद्ध हो जाती हैं।

१४. श्रीनील-वर्णी काली का मन्त्र

मन्त्र : ॐ नमो आदेश गुरु को। प्रगटी जोत जब आदि मस्तक ते, हल-चल मच भई उदय-अस्त ते। काँपे तीन लोक, जल - थल सब पर्वत। छूटा ध्यान तबै कैलास पर, चन्द्र - सूरज सब ही डर पावै। ब्रह्म-लोक सब होवै हैरान, यदि कड़की आन रब मण्डन। गर्भ जान के गर्भ गए सब, जब शत्रु पकड़ तै चलावै। किर गगन मध्य अजहूँ लौं न आए। सखत बीज को रुद्र को पान कीओ। सेना समेत तिसे नाश कियो। तेरी है जय—तेरी ही जय। पडी जङ्ग भीतर जब, नमो

नमो अक्षर तैंतीस तब। नमस्ते - नमस्ते करते ध्यावै, मन-वाञ्छित सगले फल पावै। नमो जय, नमो जय, नील-वरनी ऐं नमः।

विधि : 'माघ' मास की संक्रान्ति में मध्याह्न (दोपहर) में उक्त मन्त्र का 'जप' प्रारम्भ करे। नदी के किनारे जपे। प्रति - दिन १ से १० माला जपे। ऐसा ४० दिनों तक करे। देवी का ध्यान कर 'आहुति' भी दे। अन्त में काली माई को एक नारियल 'हवन-कुण्ड' में अर्पित करे। काले वर्ण के बकरे को, जो चारा खाता हो और छोटी उम्र का हो, खरीद कर जङ्गल में छोड़े। अन्तिम दिन 'हवन-सामग्री' के साथ दाहिने हाथ की अनामिका से स्वयं के खून की 'आहुति' भी दे और देवी को उससे 'टीका' भी करे।

४० दिनों में देवी के दर्शन अथवा कृपा की प्राप्ति होती है। बाद में देवी के स्मरण से रोगों की शान्ति, मुसीबतों की समाप्ति और अप्रतिम सिद्धि की प्राप्ति होती है।

१५. श्रीकाली का चेटक मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ७१ और भाग ५, पृष्ठ ११ पर यही मन्त्र भिन्न रूप में प्रकाशित है।)

मन्त्र : ॐ कङ्काली महा-काली केलिक लाभ्या स्वाहा।

विधि : शुभ दिन से ब्रह्मचर्य-व्रत-पूर्वक मन्त्र का 'जप' करे। काले वस्त्र, काला आसन और काले रङ्ग की माला का प्रयोग करे। देवी के चित्र के सामने बैठकर शुद्ध घृत का 'दीपक' जलाए। धूप, सुवासित अगर-बत्ती का प्रयोग करे। अच्छे फूल, फूल-माला चढ़ाए। मिठाई का भोग लगाए। चमेली के १००० फूलों में घृत का मिश्रण यथा-शक्ति करे और मन्त्र बोल कर एक - एक फूल से आहुतियाँ दे। १००० मन्त्र व १००० आहुतियों से मन्त्र-सिद्धि होगी। ऐसा केवल एक बार ही करे। बाद में नित्य १ माला 'जप' करता रहे।

उक्त साधना से साधक को अर्थ - लाभ, आपत्ति या कष्ट की समाप्ति, ग्रह-बाधा शान्ति होती है। 'ब्रह्मचर्य' का पालन आवश्यक है, अन्यथा हानि हो सकती है।

१६. नौकरी या जीविका प्राप्त करने का मन्त्र

मन्त्र : ॐ नमो नगन चीटी महा-बीर, हूं पूरो तोरी आश, तूं पूरो मोरी आश।

विधि : उक्त मन्त्र का 'जप' ४० दिनों तक लगातार करे। प्रातः-काल नित्य-कार्य से मुक्त होकर, जितना 'जप' हो सके। उतना करे। साथ ही प्रति - दिन प्रातः भुने हुए चावल, शर्करा व घृत का यथा - शक्ति मिश्रण करे। उसे चींटी के बिलों के आस - पास डाले। डालते समय मन्त्र का स्मरण भी करे।

उत्तम फल-प्राप्ति के लिए उक्त कार्य पूर्ण श्रद्धा से करे। ऋतु अनुकूल हो न हो, तब भी यह करे। इस प्रकार प्रयोग करने से शुभ मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी, ग्रह - बाधाओं से मुक्ति होगी, बेरोजगार को काम मिलेगा, भाग्योदय होगा और उन्नति भी होगी। अनुभूत प्रयोग है।

१७. व्यापार-वर्धक मन्त्र

भँवरा भँवर करे मन मेरा,
डण्डी खोल—व्यापार बडेरा।
व्यापार बड़ा और कारज कर,
नहीं करे तो काली मैया—
काल कालजो फेंड खावे ठं ठं फट्।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में 'प्रयोग' करे। व्यापार में वृद्धि हेतु, रुके हुए व्यापार को फिर से आरम्भ करने के लिए या मन्द व्यापार को तेज करने के लिए उक्त 'प्रयोग' बहुत उपयोगी है। मन्त्र - सिद्ध कर 'प्रयोग' इस प्रकार करे—'किसी भी शनिवार की रात को ३ मुट्ठी काली मिर्च तथा ३ 'गोमती - चक्र' ले। मिर्च और चक्र को एक लाल वस्त्र के टुकड़े में बाँधकर पोटली बनाए। उसके सामने तेल का 'दीपक' जलाए। उक्त मन्त्र की १ माला 'जप' करे। हो सके, तो अधिक 'माला' जप करे। बाद में रवि-वार को प्रातः दूकान पर जाए। दूकान साफ करे। गङ्गा-जल या गौ-मूत्र का प्रोक्षण करे। 'दीपक' जलाए, गुग्गुल की धूनी करे और

पोटली को दूकान के दरवाजे पर बाँध दे। इस प्रकार करने से व्यापार में वृद्धि होगी। पोटली को सदैव वहीं बँधा रहने दे। यथा-शक्ति मन्त्र का स्मरण भी करता रहे। 'गोमती-चक्र' पूजा - पाठ की सामग्री बेचनेवालों के पास से लिया जा सकता है।

१८. व्यापार-मन्दी को दूर करने का मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीमेव, कुरु कुरु वाञ्छितमेव ह्रीं ह्रीं नमः।

विधि : पहले 'शाबर-प्रयोग-विधि' से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में आवश्यकता पड़ने पर 'प्रयोग' करे। दूकान या पूजा - स्थान में लक्ष्मी देवी के चित्र के सामने धूप, दीप और पुष्प रखकर ४० दिनों तक नित्य १ माला उक्त मन्त्र का जप करे। जप के बाद 'नमस्कार' करके प्रार्थना भी करे। ४० दिनों में कुछ परिवर्तन होगा। बिक्री में परिवर्तन होने पर यथा-शक्ति दान-पुण्य करे। 'कुल - देव' या 'कुल-देवी' की भी पूजा करे। एक बार में लाभ न मिले, तो दुबारा 'प्रयोग' करे। व्यापार में कुछ नई व्यवस्था सोचे व करे। इस तरह करने से व्यापार में वृद्धि होगी। शुभ-वाणी बोले। बड़े लोगों से आशीर्वाद ले। शाप या बद्-दुवा से बचे।

१९. व्यापार के बन्धन को दूर करने का मन्त्र

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ २६-२७ में क्रमाङ्क १, ८ और भाग ५, पृष्ठ ५५ में क्रमाङ्क ८ के अनुरूप यहाँ दूसरा मन्त्र दिया जा रहा है—

ॐ दक्षिण-भैरवाय, भूत-प्रेत-बन्ध तन्त्र-बन्ध निग्रहनी, सर्व-शत्रु-संहारणी, कार्य-सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : कभी यदि ऐसा लगे कि व्यापार को किसी ने बाँध दिया है या किसी ने उसका स्तम्भन कर दिया है, तब यह 'प्रयोग' करने से सभी बन्धन छूट जाएँगे और व्यापार में वृद्धि होगी।

पहले उक्त मन्त्र को शाबर-विधि से सिद्ध करे। बाद में 'प्रयोग' करे। अथवा पहले मन्त्र - सिद्धि हेतु २१ माला जप करे, फिर प्रयोग हेतु 'जप' करे। असली गुलाल, गोरोचन, छार - छबीला पीसकर

मिश्रित कर ले। उसमें कपूर-काचली को मिला दे। इस मिश्रण को सामने रखकर, उसके ऊपर हाथ रखकर १० बार मन्त्र जपे। बाद में व्यापार - स्थान में या दूकान पर मन्त्र का स्मरण करता हुआ जाए और उक्त अभिमन्त्रित मिश्रण को उस स्थान में चारों ओर छिड़के। ऐसा ५ या ७ दिनों तक करे। व्यापार के बन्धन समाप्त होंगे, व्यापार की वृद्धि होगी। श्रद्धा और विश्वास से करे। ग्राहकों के साथ शुभ वाणी से व्यवहार करे। मानवीय कमी या त्रुटियों को दूर करे। बिना घबराहट उक्त 'प्रयोग' करे। प्रमाद न करे। व्यवस्थित आयोजन सहित काम-काज करे तथा यथा-शक्ति परमार्थ करे।

२०. मोहिनी मन्त्र

ॐ मोहिनी - मोहिनी कहाँ चली, हरखु राई कां मचली। फलानी के पास चली। औरों के देखे जल बले, मुझे देखे पाँव पड़े। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। बे माता की आज्ञा।

विधि : किसी भी कृष्ण पक्ष में रविवार के दिन उपवास करे। सन्ध्या समय गुड़ का शरबत साधक स्वयं बनाकर पिए। रात्रि में १० बजे के बाद किसी एकान्त स्थान पर जाए, जहाँ वृक्ष हों। वृक्ष के नीचे बैठकर उक्त मन्त्र की १० मालां जप करे। अथवा, १००० बार जप करे। 'मूंगे की माला' से 'जप' करे। 'जप' के समय धूप-दीप भी रखे।

बाद में जब प्रयोग करने जाए, तब स्नान करके जाए। स्वच्छ वस्त्र पहने। ऊनी आसन पर बैठकर 'जप' करे। लकड़ी के पाटे के ऊपर धूप-दीप रखकर एक पान, एक पेड़ा, ७ लौंग, ७ इलायची और एक अच्छी-बड़ी सुपारी का भोग लगाए। सभी सामग्री सामने रखकर उक्त मन्त्र की १० माला जप करे अथवा १००० जप करे। जप पूर्ण होने पर पेड़ा व पान प्रसाद - स्वरूप स्वयं ग्रहण करे और इलायची-लौंग-सुपारी घर लेकर वापस आए। उनका चूर्ण बनाए। उसके ऊपर पुनः २१ बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे। अभिमन्त्रण के समय— जिस स्त्री का 'मोहन' करना हो, 'फलानी' के स्थान पर उस स्त्री का नाम लेकर मन्त्र-जप करे। ऐसे ही यदि पुरुष का मोहन करना हो,

'फलानी के पास चली' न बोलकर 'फलाने के पास चला' ऐसा परिवर्तन करके मन्त्र जपे। 'फलाने' के स्थान पर 'पुरुष' का नाम लेकर पढ़े। अभिमन्त्रित चूर्ण को 'साध्या' या 'साध्य' को युक्ति से खिलाए या उसके ऊपर फेंके। कुछ दिनों में 'साध्या' अथवा 'साध्य' पास आएगा। उससे जो काम लेना हो, वह पूरा करे। बाद में उसे छोड़ दे। 'प्रयोग' बार-बार न करे। 'मोहन'-विद्या का दुरुपयोग न करे।

२१. मोहिनी तिलक-मन्त्र

ॐ नमो तिलक ईश्वर, तिलक महेश्वर, तिलक जय विजय-कार। तिलक काठी मैं निकलूँ घर से, मोहे सकल संसार। शब्द साचा, पिण्ड काचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : शाबर-विधि से ग्रहण-काल में उक्त मन्त्र का १००० बार जप करने से मन्त्र - सिद्धि होती है। बाद में चन्दन, केसर, कस्तूरी, गोरोचन और कपूर के मिश्रण में स्वच्छ जल या गुलाब-जल या गङ्गा-जल डालकर चन्दन की तरह घोटे और १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। इस तरह करने से उक्त वस्तुओं का अभिमन्त्रण हो जाएगा। जब घर से बाहर जाए, तब उसी से 'तिलक' करके जाए। 'तिलक' देखनेवालों का 'मोहन' होगा। सबके साथ सद् - व्यवहार व सद्-वाणी करे। इससे चारों ओर मान मिलेगा, बातें मान्य होंगी, सब लोग खुश रहेंगे। 'मोहन' का असर अल्प समयावधि तक होता है। फिर भी सतर्क होकर सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए।

२२. तेल से मोहन या वशीकरण

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ५, पृष्ठ २१-२२, क्रमाङ्क ३ देखिए। यहाँ उक्त मन्त्र कुछ भिन्न पाठ - भेद सहित दूसरी विधि के साथ प्रस्तुत है।)

तेल सों मैं तेल, राजा-परिजा मेलि। अछक पानी, मसक ल्याय। छसै योनि मेरे पाय नगाय। हाथ खड्ग, फूलों की माला। जानि बिजानै, गोरख जानै। मेरी गति

को कहै न कोय। हाथ पछानो, मुख धोऊँ। सुमिरों निरञ्जन देव, हनुमन्त यति। हमारी यति राखै। मोहिनी-दोहनी दोनों बहिन, आव मोहिनी रावल चालै। मुख बोले, तो जिह्वा में हूँ। आस मोहूँ, पास मोहूँ। सब संसार में निसरूँ, टीका देय लिलाट। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा। फुरा मन्त्र, ईश्वर उवाच छु।

विधि : शाबर-विधि से ग्रहण-काल में उक्त मन्त्र का १००० बार जप करे, इससे मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध करने के बाद 'प्रयोग' करे। 'दीपावली' की रात को तिल का तेल लाए। उसी तेल के ऊपर उक्त मन्त्र का २१ बार जप करे और फूंक दे। इस अभिमन्त्रित तेल का, मन्त्र - स्मरण सहित बिन्दु लगाकर घर से बाहर जाए। टीका देखनेवाले लोग वशीभूत होते हैं। दुरुपयोग से बचे।

२३. गुड़ से मोहन या आकर्षण

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ ४७, क्रमाङ्क २ देखिए। यहाँ वही मन्त्र पाठ-भेद और भिन्न विधि सहित प्रस्तुत है।)

ॐ नमो गुड़-गुड़, रे तू गुड़-गुड़। तामडा मशान केलि करन्ता जा। उसका देग उमा सब हर्ष। हमारी आस खसम को देखे। जलै-बलै हमको देवै। सकि रुचलै। चालि-चालि रे कालिका के पूत, जोगी-जङ्गम और अवधूत। सोती होय जगाय लाव, बैठी होय उठाय लाव। न लावै, तो माता कालिका की शय्या पर पाँव धरै। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश गुरु का।

विधि : अर्कवार (रविवार) के दिन एक पैसा भर गुड़ श्मशान में लेकर जाए। साथ में तेल और 'बाकला' ले। भैरव का पूजन करे। साध्य को गुड़ खिलाए।

२४. लौंग से मोहन और वशीकरण

ॐ नमो आदेश गुरु। कामरू देश, कामाख्या देवी। जहाँ बसे इस्माइल योगी। इस्माइल योगी ने दीन्हीं एक लौंग राती-माती। दूजी लौंग दिखावे राती। तीजी लौंग रहे थहराय। चौथी लौंग मिलावे आय। नहिं आवे तो कुआँ बावडी धार फिरे रण्डी, कुआँ बावडी छिटक मरे। ॐ नमो आदेश गुरु को। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : 'ग्रहण' की रात में, चार लौंग चार दिशाओं में रखे। बीच में चौ-मुखा 'दीपक' जलाए। अच्छी 'धूप' करे। सुगन्धित फूलों की माला चढ़ाए। यथा-शक्ति भोग लगाए। उक्त मन्त्र का १० माला 'जप' करे। बाद में ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके लौंग साध्य को खिलाए।

२५. सुपारी द्वारा वशीकरण

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ ४१ में क्रम ४ और पृष्ठ ५४ में क्रम १७ की तरह यह प्रयोग है।)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय त्रिपुर-वाहनाय 'अमुकं' मम वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि : सिद्ध - योग में उक्त मन्त्र की १ से १० माला 'जप' करे। बाद में सुपारी को अभिमन्त्रित करके जिसका वशीकरण करना हो, उसको खिलाए। दुरुपयोग न करे, अन्यथा स्वयं को कष्ट होगा। 'अमुक' के स्थान पर साध्य का नाम ले।

२६. पान द्वारा वशीकरण

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २ में पृष्ठ ३० की भाँति।)

हरे पान, हरयाल पान। चिकनी सुपारी, श्वेत खैर। दाहने कर चना मोही लेह पान। हाथ में दे हाथ रस ले,

ये पेट दे पेट। रस लेह श्रीनारसिंह वीर। थारी शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वर महा-देव की वाचा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को 'शाबर' विधि से सिद्ध करे। बाद में उक्त मन्त्र को पढ़कर अभिमन्त्रित पान खिलाए। दुरुपयोग न करे।

२७. स्व-भोजन द्वारा वशीकरण

ॐ नमो कट-कट-कट घोर-रूपिणी अमुकं मे वशमानय स्वाहा।

विधि : ग्रहण-काल में उक्त मन्त्र को १० माला 'जप' करके सिद्ध करे। बाद में 'प्रयोग' करे। 'रविवार' को जब साधक स्वयं अन्न-भोजन करने को बैठे, तब भोजन-सामग्री को अभिमन्त्रित करके स्वयं भोजन करे। भोजन करते - करते भोजन - समय में उसका नाम लेता जाए, जिसको वश में करना हो। 'अमुक' के स्थान पर नाम जोड़कर अभिमन्त्रित करे। खाते समय भी उसकी स्मृति बार - बार करे, तो वह व्यक्ति अवश्य आएगा। उसका स्वागत करके मन-चाहा कार्य करे। दुरुपयोग न करे, अन्यथा कष्ट होगा।

२८. भूतनाथ का वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भूतनाथ ! [illegible] भुवन-भूतानि साधय हुँ।

विधि : उक्त मन्त्र का १ [illegible] 'जप' करने से श्रीभूतनाथ सिद्ध हो जाते हैं। बाद में उक्त मन्त्र का सङ्कल्प-सहित स्मरण करने से ही आकाश - पाताल और पृथ्वी के चराचर प्राणी वशीभूत होते हैं। 'शिवालय' या किसी देव-मन्दिर में 'जप' करे।

२९. प्रेत-वशीकरण मन्त्र

(निम्न-लिखित 'प्रयोग' प्रेत - वशीकरण का है। ऐसे प्रयोगों को आत्म-रक्षा का प्रबन्ध किए बिना न करे, अन्यथा हानि की सम्भावना रहती है। अन्त - काल में उक्त साधना कष्ट-दायक बनती है। अतः आत्म-रक्षा का विधि-वत् प्रबन्ध करके अथवा गुरु के मार्ग-दर्शन में ही 'प्रयोग' करे।)

ॐ श्रीं वं वं भूतेश्वरि ! मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि : मूल-नक्षत्र में, बबूल के वृक्ष के नीचे बैठकर तीन दिन उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करे । प्रेत प्रगट होकर कहेगा—"माँग-माँग ।" तब साधक को उससे वचन लेना चाहिए और मन में जो इच्छा हो, उसे माँगना चाहिए । मन-चाहा मिल जाता है ।

३०. खाने-पीने की वस्तुओं से वशीकरण

क्लीं ऐं सौं ह्रीं श्रीं ग्लौं हुम् । सकल जगन्मोहिनी मदनोन्मादिनी, क्लीं एहि-एहि क्लीं-क्लीं सम्मोहय । बुद्धि नाशय-नाशय, नाशय जीव-मोहिनी, लागो मोह जिनु-जिनु जावे मकरे । तो मोह, आदि-शक्ति को आस, राज-मन्मथ की आन फुरो । आगम मल्यो, मेरो भक्ति, गुरु की शक्ति । ईश्वर तेरी वाचा ।

विधि : शाबर-मन्त्र की विधि से उक्त मन्त्र का १ हजार 'जप' करे । अथवा अन्य विधि से १० हजार 'जप' करे । मन्त्र-विधि के बाद खाने - पीने की वस्तुओं को २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे । बाद में उन वस्तुओं को साध्य या साध्या को खिलाए-पिलाए । इस मन्त्र द्वारा एक व्यक्ति एवं जन-समूह का वशीकरण होता है ।

३१. विवाह के प्रयोग

प्रत्येक माता-पिता को सन्तान के विवाह की चिन्ता रहती है । विवाह में विलम्ब से बचने के लिए यहाँ कुछ सरल प्रयोग दिए जा रहे हैं । साथ-साथ निम्न-लिखित बातों पर भी ध्यान देना चाहिए । यथा—(१) कन्या के विवाह में विलम्ब के अनेक कारण होते हैं । कुछ मुख्य कारण इस प्रकार हैं—

(क) 'कन्या' के जन्माङ्क में 'लग्न - योग' नहीं होता । अथवा, 'लग्न-योग' अति निर्बल होता है ।

(ख)'कन्या' को 'मङ्गल का दोष' होता है, जिससे विवाह तो होता है, किन्तु बहुत विलम्ब से होता है ।

(ग) 'कन्या' के जन्माङ्क में 'काल-सर्प' या 'अर्ध काल-सर्प-योग' होता है। यह 'योग' यद्यपि सर्वदा बाधक नहीं होता, तो भी यदि बाधक हो, तो निराकरण कराना चाहिए।

उक्त दोनों का निवारण 'ज्योतिष' एवं 'कर्म - काण्ड' द्वारा होता है। यदि आर्थिक कमी अथवा अन्य कारणों से माता - पिता इनका निवारण नहीं कर सके, तो आगे दिए प्रयोगों से लाभ उठा सकते हैं। श्रद्धा से कोई एक प्रयोग करे। शुभ परिणाम अवश्य मिलेगा।

(क) मनोवाञ्छित पति-प्राप्ति के प्रयोग

(१) शरणागत - दीनार्त - परित्राण - परायणे !
सर्वस्यार्ति-हरे देवि !, नारायणि नमोस्तु ते ॥

विधि : माता जी के चित्र या मूर्ति के सामने एक छोटा - सा लकड़ी का पाटा रखे। उसके ऊपर ५० से २०० ग्राम चावल कुंकुम से मिश्रित करके रखे। चावल के ऊपर घृत का एक दीपक रखे। घृत के दीपक की लौ पर ध्यान केन्द्रित करके कन्या उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करे ¡ प्रति सप्ताह प्रत्येक मङ्गलवार प्रातः - काल करे। कन्या कुंकुम का तिलक स्वयं लगाए और माता जी को भी लगाए। लगातार २७ मङ्गलवार करे। प्रयोग-काल में या उसके बाद विवाह के अच्छे सम्बन्ध अवश्य आएँगे। यदि कभी देरी हो, तो 'प्रयोग' बन्द न करे। उचित समय आने पर लग्न इत्यादि का सारा कार्य पूरा हो जाएगा। मङ्गल के अतिरिक्त अन्य दिनों में भी नित्य १०८ बार 'जप' करता रहे। देवी के मन्दिरों में दर्शन करे। श्रद्धा से प्रार्थना करे। उत्तम पति अवश्य प्राप्त होगा। दीपक जब बुझ जाए, तब चावल को बाहर चबूतरे के ऊपर डाल दे। यह प्रयोग अनुभूत और सत्य है। 'प्रयोग' को यदि विशेष प्रभावी बनाना हो, तो मङ्गल को एक बार भोजन करे। गाय का दूध या फल ले। अथवा, प्रत्येक नङ्गल को थोड़ा - सा गुड़ और १ रोटी गाय माता को खिलाए।

(२) ॐ मातंग्य विद्महे उच्छिष्ट - चाण्डालय धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात।

विधि : 'गायत्री-मन्दिर' या किसी भी 'देवी-मन्दिर' में कन्या स्वयं जाए और प्रति-दिन उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करे। ऐसा

६ मास तक करे। यदि विलम्ब हो, तो भी श्रद्धा न छोड़े। मनो-वाञ्छित पति ही मिलनेवाला है—ऐसा विश्वास रखे। जब सम्बन्ध आए, तब संयोग के अनुसार कार्य करे।

(३) सुनु सियँ ! सत्य असीस हमारी।
पुरवहुँ मनोकामना तु म्हारी॥

विधि : किसी भी शुभ दिन से उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे। प्रति - दिन उक्त मन्त्र का १०८ जप करे। जब तक कन्या को उत्तम पति प्राप्त न हो, तब तक मन्त्र-जप करता रहे। उत्तम प्रयोग है।

(४) ॐ क्लीं कुमाराय स्वाहा।
(अथवा) ॐ क्लीं कुमाराय नमः स्वाहा।

विधि : कन्या अपने निवास-स्थान में, इष्ट-देवी के सामने धूप-दीप सहित उक्त मन्त्र का १० माला 'जप' करे। इससे सुन्दर वर की प्राप्ति होगी। पहले प्रयोग की तरह यह प्रयोग भी अनुभूत है। श्रद्धा से करे। जब तक कार्य पूर्ण न हो, तब तक करे।

(५) ॐ ह्रौं ह्रीं सूर्याय सहस्र-किरणाय मम वाञ्छितं देहि देहि स्वाहा।

विधि : नित्य-कर्म से निवृत्त होकर, स्वच्छ वस्त्र धारण कर, कन्या सूर्य महाराज को पहले नमस्कार करे। फिर चन्दन - मिश्रित चावल और सुगन्धित पुष्प सूर्य-देव को चार बार चढ़ाए। अन्त में नमस्कार करके उक्त मन्त्र का १ माला 'जप' करे अथवा १०८ बार 'जप' करे। गुड़ का नैवेद्य चढ़ाए। 'रविवार' को 'व्रत' रखे। बिना नमक का भोजन करे। शर्करा-युक्त दूध और चावल का भोजन करे। एक मास में कार्य सिद्ध हो जाता है। जब तक कार्य-सिद्धि न हो, तब तक मन्त्र का 'जप' करता रहे।

(६) कात्यायनि महा-माये, महा-योगिन्यधीश्वरि !
नन्द-गोप-स्तुतं देवि, पतिं मे कुरु ते नमः॥

विधि : उक्त मन्त्र अत्यधिक प्रचलित व प्रभावी है। 'देवी-मन्दिर' में अथवा अपने निवास में 'प्रयोग' करे। माता जी को धूप-दीप-पुष्प-नैवेद्य चढ़ाए। नमस्कार करके उक्त मन्त्र की कम-से-कम

१ माला और अधिक-से-अधिक १० माला 'जप' करे। जब तक शुभ परिणाम न मिले, तब तक 'जप' करता रहे।

(७) हे गौरी ! शङ्कर-अर्धाङ्गिनि, यथा त्वं शङ्कर-प्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि, कान्त - कान्ता सुदुर्लभाम् ॥

विधि : प्रति-दिन स्नानादि कर कन्या शिव-मन्दिर में जाए। पार्वती का पूजन करे। बाद में कन्या स्वयं उक्त मन्त्र का १ से ५ माला 'जप' नित्य करे। आस्था से करे। कन्या को उत्तम पति मिलेगा।

(ख) कन्या की शादी में रुकावट को दूर करने का मन्त्र

(८) ॐ शं शङ्कराय, सकल-जन्मार्जित-पाप-विध्वंस-नाय, पुरुषार्थ-चतुष्टय-लाभाय च पतिं मे देहि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : विवाह में विलम्ब को दूर करने के लिए उक्त मन्त्र का जप करे। शिव - पार्वती के चित्र के सामने धूप और दीप रखे। उनके पास मिट्टी का एक कूँड़ा मिट्टी से भरकर रखे। मिट्टी को जल से भिगा दे। उसमें केले का एक छोटा - सा पौधा लगाए। प्रति-दिन उसमें जल छोड़े। ऐसा करने से केले का पौधा बढ़ेगा। लगाए हुए पौधे को ११ बार सूत के कच्चे डोरे से लपेटे और उसका 'पूजन' करे। बाद में उसके सामने बैठकर कन्या उक्त मन्त्र की ३-३ माला 'जप' करे। जप के बाद पौधे की १२ बार 'प्रदक्षिणा' करे। इस तरह नित्य करने से ग्रह-देवों का कु-प्रभाव दूर होगा, बाधाएँ नष्ट होंगी। जब तक शुभ परिणाम न मिले, तब तक करता रहे। साथ-साथ कार्य-सिद्धि के लिए अपने कुटुम्ब के देव - स्थानों से प्रार्थनाएँ भी करे। मानता भी करे। सफलता मिलेगी।

यदि फिर भी रुकावट हो, तो नौ रत्ती का पोखराज या टोपाझ त्रि-धातु की अँगूठी में धारण करना चाहिए। अथवा ७ रत्ती का फिरोजा पत्थर चाँदी की अँगूठी में धारण करना चाहिए। यह सब ज्योतिषियों के परामर्श से धारण चाहिए। किस उँगली में, किस समय धारण करे आदि बातों के बारे में आवश्यक सूचना लेकर करे, अवश्य कार्य सिद्ध होगा।

३२. शत्रु को पछाड़ने के मूठिका मन्त्र

(१) ॐ नमो वीर, तो हनुमन्त वीर ! सूर्य का तेज, शत्रु की काया । अदीठ चक्र-देवी कालिका, चलाया चल रे । बादी न कर, बाद मैं करिहौं । तेरे जीव को घात मैं न डरूँ, तेरे गुरु पीर सूँ, मारूँ ताने एक तीर सों । मेरा मारा ऐसा घूमैं, जैसे भुजग की लहर परे । तोहि गिरता मारूँ बाण, फेरि चलौ तो यती हनुमन्त की आन । शब्द साँचा, पिण्ड काँचा । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि : उक्त मन्त्र को शाबर की विधि से सिद्ध करे । बाद में 'प्रयोग' करे । मन्त्र - सिद्धि के बाद उड़द को १०८ बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करके मारने से शत्रु परास्त होता है । 'प्रयोग' बिना बोले और युक्ति-पूर्वक करे । दुरुपयोग न करे । अपने पक्ष में सत्य हो, तभी 'प्रयोग' करे ।

(२) ॐ नमो वीर, तो हनुमन्त वीर ! भूरी मूठि चलावै, तीर में की रूख नाखी । तोडि लोहू सोखि, मेरा बैरी तेरा भषहि । तोडि कलेजा चराव, सब धर्म की हाथई बजे । धर्म की लाल में बलि तुम्हारे, कहाँ गए भूरे बाल ? उलटि पछाड न पछाडै, तो माता अञ्जनी की आनी । शब्द साँचा, पिण्ड काँचा । स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि : उक्त मन्त्र को शाबर की विधि से सिद्ध करे । अथवा, होली की रात में उक्त मन्त्र से पूजा करके, उक्त मन्त्र की १० माला 'जप' करे । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होगा । बाद में प्रयोग करे । जिस शत्रु को परास्त करना हो, उसे एक मुट्ठी काले उड़दों से मन्त्र पढ़ते हुए मारे । यह बिना बोले युक्ति - पूर्वक करे । पहले 'प्रयोग' में उड़द से मारने का निर्देश है । शरीर के किसी भी अङ्ग पर मार सकते हैं, किन्तु दूसरे प्रयोग में छाती के ऊपर मारने का निर्देश है ।

अतएव यह अच्छी तरह सोच - समझ कर करे। अन्यथा 'प्रयोग' न करे।

(३) ॐ ह्रों हूँ फट्।

विधि : पहले तो उक्त मन्त्र को शाबर या अन्य विधि से सिद्ध करे। बाद में 'प्रयोग' करे। सर्व-प्रथम जहाँ पर गधा लेटता हो, उस स्थान की धूल लाए। धूल को सामने रखकर उक्त मन्त्र १०८ बार जपे और गुग्गल की धूनी दे। बाद में धूल को शत्रु के मस्तक के ऊपर या उसके घर में या शत्रु के आने - जाने के मार्ग में डाले। यह कार्य युक्ति से करे। इससे शत्रु के यहाँ कलह होगा।

(४) बारह सरसों, तेरह राई। पाट को माटी, मसान राकी। छाई पढकर मारूँ, कर-तलवार। अमुक का फुटै न देखे, अमुकी का द्वार। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच। सत्य नाम, आदेश गुरु का।

विधि : १२ दाने सरसों के, १३ दाने राई के, चाक की माटी, मसान की राख तथा खैर की लकड़ी में घी मिलाकर उक्त मन्त्र से 'हवन' करे। जब 'हवन' की अग्नि ठण्डी हो जाए या बुझ जाए, तब 'हवन' की भस्म एकत्रित करके रख ले। जब किन्हीं दो शत्रुओं के बीच कलह कराना हो, तब मन्त्र में 'अमुक का' और 'अमुकी का' के स्थान पर दोनों के नाम जोड़कर मन्त्र जपे और भस्म को अभिमन्त्रित करके उनके बीच में युक्ति - पूर्वक डाल दे। इससे दोनों के बीच में कलह हो जाएगा। 'प्रयोग' का दुरुपयोग कदापि न करे। द्वेष-भावना से किसी का बुरा न करे। जब परिस्थितियाँ अत्यन्त विषम हों, तभी 'प्रयोग' करे।

विशेष : 'प्रयोग' करने से पहले मन्त्र को सिद्ध करना चाहिए। मन्त्र-सिद्धि के लिए कोई विधान प्राप्त नहीं है। स्वयं सूझ - बूझ से शाबर-विधि से करे। तब 'प्रयोग' करे।

३३. पानी के ऊपर चलने का मन्त्र

ॐ नमो काला भैरूँ, कालिका-पूत ! पगो खडाऊँ हाथ। ग्ररु जी चलो मन प्रभात। आक तू अग्र सूँ भरा तेरो

न्योतो, मैं जहाँ करूँ पूजौं दिन सात। जो तू मन चीता कार्य कर दे मोहि, कुमकुम-कस्तूरी-केसरी से पूजा करूँ। तुम्हारी कोर मन चीत्यो, मेरा कार्य करहु। गुरु गोरखनाथ की वाचा फुर। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : शनिवार को जब पुष्य नक्षत्र हो, तब श्वेत आक को न्योता दे आए। रविवार के दिन उसकी पूजा करके उसकी जड़ को उखाड़ लाए। उस जड़ से खड़ाऊँ की खूँटी बनाकर पाँव में पहन कर नदी के पानी के ऊपर चले, तो पानी पाँव से न लगे।

विशेष : उक्त मन्त्र को सिद्ध करने की विधि प्राप्त नहीं है। मन्त्र के संरक्षण हेतु यहाँ दिया जा रहा है। किसी बन्धु को यदि जानकारी हो, तो वह उसे प्रकट करे। 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के आगे के भाग में उसे सधन्यवाद प्रकाशित किया जाएगा।

३४. गुरु-दर्शन का मन्त्र

ह्रीं हुँ गुरो ! प्रसीद ह्रीं ॐ।

विधि : जब कभी मङ्गलवार को अमावास्या हो, तब 'प्रयोग' करे। रात्रि को अकेले श्मशान जाए और वहाँ गुरु के चरणों का ध्यान करे। उक्त मन्त्र का १० हजार बार जप करे। मन्त्र सिद्ध होने पर ध्यान में गुरु के साक्षात् दर्शन होंगे। श्मशान जब जाए, तब 'आत्म-सुरक्षा-कवच' अथवा 'ह्रीं-सार' का पाठ करके जाए।

३५. मुकदमों में विजय-प्राप्ति का मन्त्र

ॐ वट वरदाय विजय गणपतये नमः।

विधि : जिस मन्दिर में 'गणपति' स्थापित हों, वहाँ 'प्रयोग' करे। विधि-वत् पूजन करके प्रमोगारम्भ करे। अथवा, निवास-स्थान में गणपति जी की मूर्ति या चित्र के सामने बैठकर 'प्रयोग' करे।

'प्रयोग' किसी भी बुधवार से आरम्भ करे। पाँच दिन में सवा लाख जप करे। यदि ऐसा न हो सके, तो एक-दो दिन और लगातार

'जप' करके गणना पूरी करे। 'जप' के समक्ष पूर्वाभिमुख बैठे। चन्दन की माला, लाल आसन का प्रयोग करे। मूर्ति हो, तो उसको स्नान करवा कर सिन्दूर लगाए। धूप-दीप-नैवेद्य सहित २१ लाल फूल कनेर के चढ़ाए। २१ फूल चढ़ाते समय, जिस कार्य के लिए 'प्रयोग' कर रहे हों, उसका निवेदन करे। जो मनोकामना या कष्ट या आपत्ति हो, उसको कहे। पूर्ण भक्ति-भाव से प्रार्थना करे। पाँच दिन यम-नियम इत्यादि का पालन करे। ५ दिन के बाद ५ कन्याओं को मीठा-भोजन, दान-दक्षिणा सहित कराए।

बाद में जब तक मुकदमा पूरा न हो, तब तक गणपति जी का दर्शन-पूजन करता रहे और नियत संख्या में उक्त मन्त्र का जप यथा-शक्ति करता रहे। नित्य १ माला या ५ माला, जितना हो सके उतना जप करे।

जब कोर्ट-कचहरी जाए, तब उक्त मन्त्र का स्मरण करे। विजय-प्राप्ति के लिए अन्य मानवीय प्रयास में असावधानी न करे। श्रद्धा न छोड़े। ऐसा करने से विजय मिलेगी और जो भी जटिल समस्याएँ होंगी, उनका भी निवारण होगा।

३६. रोग-आपत्ति-निवारक मन्त्र

ॐ शान्ते ! शान्ते ! सर्वारिष्ट-नाशिनी ! स्वाहा।

या, ॐ नमो शान्ते ! प्रशान्ते ! सर्व-क्रोधोपशमनी ! स्वाहा।

विधि : ग्रहण - काल में एक लक्ष जप करने से उक्त मन्त्र की सिद्धि होती है। बाद में जब आपत्ति हो या किसी भी प्रकार का घोर सङ्कट हो, तब १० बार उक्त मन्त्र का स्मरण करने से आपत्ति या सङ्कट का निवारण होता है। रोगों की शान्ति के लिए रोगी को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पीने को देना चाहिए। अथवा, रोगी के अङ्गों पर मन्त्र का स्मरण कर हाथ फेरना चाहिए। जब आपत्ति या रोग का निवारण हो जाए, तब ब्रह्म-भोज करना चाहिए। ऐसा करने से सिद्धि चिर-कालीन रहेगी। श्रद्धा से मन्त्र का स्मरण करने से सभी प्रकार की शान्ति मिलती है।

३७. सर्व-विघ्न-हरण मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ६४ में 'क्रोध - शमन - मन्त्र' प्रकाशित है। वैसा ही प्रस्तुत 'विघ्न-शमन-मन्त्र' है।)

ॐ नमः शान्ते ! प्रशान्ते ! ॐ ह्रीं ह्रां सर्व-क्रोधप-शमनी ! स्वाहा।

विधि : (१) शाबर-विधि से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में प्रति-दिन प्रातः २१ या १०८ बार मन्त्र का स्मरण करे। मन्त्र-स्मरण के बाद मुख-प्रक्षालन करे। इससे शेष दिन शान्ति से व्यतीत होगा और सभी विघ्न दूर होंगे।

(२) प्रति-दिन सायं 'पीपल'-वृक्ष में शरबत डाले। स्वच्छ जल में शर्करा डालकर शरबत बनाए। उक्त मन्त्र का स्मरण कर शरबत पीपल-वृक्ष में डाले। साथ ही पीपल-वृक्ष के नीचे दीपक व अगर-बत्ती भी जलाए। यथा-शक्ति फल-फूल चढ़ाए। यदि यह सब नित्य न कर सके, तो कम-से-कम सप्ताह में एक बार अवश्य करे। इससे प्रयोग-कर्ता को—१ सभी प्रकार की शान्ति का अनुभव होगा। २ सभी प्रकार के विघ्न, बाधाएँ, क्लेश, विपरीत ग्रह-दशा इत्यादि की शान्ति होगी। ३ कुटुम्ब में सभी की सुरक्षा होगी। ४ आरोग्य-लाभ होगा।

जब तक लाभ न हो, तब तक 'प्रयोग' करे। आस - पास के मन्दिर में यदि पीपल का वृक्ष हो, तो वहीं जाए। कई लोगों ने उक्त प्रयोग द्वारा शुभ परिणाम प्राप्त किए हैं।

३८. क्रोध-शान्ति-मन्त्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रोध-प्रशमन ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं सः सः स्वाहा।

विधि : 'ग्रहण - काल' में उक्त मन्त्र का १ से १० माला जप करे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। बाद में उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़कर, पहने हुए वस्त्र में एक कोने में एक गाँठ लगाकर उस पुरुष या स्त्री के पास जाए, जो क्रोधित हो। इस मन्त्र के प्रभाव से क्रोधित व्यक्ति का क्रोध शान्त हो जाता है। क्रोध से बचने के लिए यह 'प्रयोग' उत्तम है।

३९. दैवी-प्रकोप की शान्ति के लिए मन्त्र

ॐ शान्ते ! प्रशान्ते ! सर्व-क्रोधपशमने ! स्वाहा ।

विधि : उक्त मन्त्र को पहले शाबर या अन्य विधि से सिद्ध करे। सिद्ध किए हुए मन्त्र से स्वच्छ जल को २१ बार अभिमन्त्रित करे। इस अभिमन्त्रित जल से मन्त्र-स्मरण के साथ-साथ मुख-प्रक्षालन करे। बाद में देवी-देवताओं के दर्शन करे। ऐसा करने से देव-देवी का कोप शान्त होता है। देव-देवी की प्रसन्नता भी बढ़ेगी। सम्भव हो, तो अष्ट-गन्ध या गोरोचन से देव या देवी को टीका करे। इससे उनकी कृपा-दृष्टि बनी रहेगी।

४०. गृह-बाधा-निवारक मन्त्र

ॐ ह्लीं चामुण्ड-भृकुटि अट्टहासे भीम-दर्शने ! रक्षः रक्षः चौरेभ्य वज्रेभ्यः अग्निभ्यः श्वापदेभ्यः दुष्ट-जनेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः गण्डी ह्लीं ह्लीं ठः ठः ।

विधि : (१) 'ग्रहण - काल' में उक्त मन्त्र का ११ हजार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में उक्त मन्त्र की १ माला जप करके अपने निवास के चारों ओर रेखा खीचे। इससे उस स्थान में रहनेवालों को मलिन दुष्ट आत्माओं, भूत-प्रेत इत्यादि का भय नहीं होता। मकानों की सुरक्षा के लिए उक्त मन्त्र अत्यन्त उपयोगी है। अभिमन्त्रित जल से रेखा खींचे, तो भी सुरक्षा बनी रहेगी।

(२) पहले १० हजार जप करके मन्त्र-सिद्धि करे। बाद में यथा-शक्ति मन्त्र - स्मरण करे। जिस स्थान में मन्त्र का स्मरण होगा, वहाँ मलिन तत्त्वों का प्रवेश बन्द हो जाएगा। वहाँ रहनेवालों को किसी प्रकार की आपत्तियों का कष्ट नहीं होता। रेखा अथवा जल - रेखा खींच देने से वह स्थान भूत-प्रेत आदि से मुक्त हो जाता है।

४१. ग्रह-दोष-निवारक मन्त्र

ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रः ह्रः फट् स्वाहा ।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को विधि-पूर्वक सिद्ध करे। बाद में ग्रह-दोष या ग्रह-दोष-जन्य रोग से ग्रसित व्यक्ति के शरीर के ऊपर

अभिमन्त्रित सरसों मारे या उसके शरीर के ऊपर डाले। इससे ग्रह-दोषों का निवारण होता है। रोगी को शान्ति प्राप्त होती है। इससे मकान व उसमें रहनेवाले व्यक्तियों की सुरक्षा होती है, प्रगति होती है। रोग-शोक की समाप्ति होती है।

४२. सर्व-सुरक्षा-मन्त्र

ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट्।

विधि : उक्त मन्त्र का ५०० बार 'जप' करने से मन्त्र-कर्ता की सभी प्रकार की सुरक्षा होती है। धन-धान्य, पुत्र-मित्र इत्यादि की भी वृद्धि होती है। प्रति-दिन जप करने से मन्त्र - कर्ता को चतुर्दिक् लाभ होता है। सुरक्षा एवं प्रगति के लिए यह एक श्रेष्ट मन्त्र है।

४३. वन-वासी सुरक्षा-मन्त्र

ॐ मचल गुसाई बन-खण्डे। राय चोरन झँके बाघ न लाय। सूते सर्वत घाले घाय। खिण बाँया, खिण दाहिना। फिर-फिर बाया होय अबल गुसाई। सपर्ता मेरी काया नाश न होय। केशोराय सदा सहाय, तीन लोक को माखन खाय। कीडा-काँटा दिया बहाय। अलेख अलेख बजरङ्गी, सदा सतसङ्गी। ॐ स्वाहा।

विधि : भूसा गूगल की २१ गोलियों को उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित करके अग्नि में 'हवन' करे। ऐसा सात रविवार तक करने से मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में उसका उपयोग करे। आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र को तीन बार जपे और अपने आप के ऊपर फूंक मारे। इससे मार्ग में चोर-बाघ-सर्प आदि का भय नहीं रहता।

४४. किए-कराए को उतारने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। ॐ अपर केश विकट भेष। खम्भ प्रति पहलाद राखे, पाताल राखे पाँव। देवीं जङ्घा राखे, कालिका मस्तक रखे। महा-देव ज़ी कोई या पिण्ड प्रान को छोडे-छेडे, तो देवक्षना-भूत-प्रेत-डाकिनी-शाकिनी

गण्ड-ताप-तिजारी-जूड़ी एक पहरुँ—दो पहरुँ साँझ को—सवाँरा को कीया को—कराया को, उल्टा वाहि के पिण्ड पर पड़े। इस पिण्ड की रक्षा श्रीनृसिंह जी करे। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले शाबर-विधि से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में प्रयोग करे। यदि किसी ने जादू - टोना कर दिया हो या आभिचारिक कर्मों से रोग - दोष हो या किसी भी कारण से मन शान्त न हो, तब उक्त मन्त्र को पढ़कर फूंके। ७ बार मन्त्र पढ़े और फूंके। ऐसा करने से किए - कराए के सभी दोष नष्ट हो जाते हैं। पीड़ित व्यक्ति को पहनने के लिए 'ताबीज' भी दिया जा सकता है। भोज-पत्र के ऊपर, अष्ट - गन्ध से अनार की कलम से उक्त मन्त्र लिखकर धारण कराए। इससे शान्ति का अनुभव होगा। अथवा, रोगी को ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर गण्डा बाँध दे। श्रद्धा बनाए रहे।

४५. कु-कृत्या-शान्ति-मन्त्र

ॐ सं सां सिं सीं सुं सूं सें सैं सों सौं सं सः। वं वां विं वीं वुं वूं वें वैं वों वौं वं वः। हसः अमृत-वर्चसे स्वाहा।

विधि : यदि यह शङ्का हो कि कोई दुष्ट या अभिचार - कर्ता कु-कृत्य से कष्ट दे रहा है या रोग-कारक स्थिति पैदा कर रहा है या बुरी नजर करके सभी कार्य बिगाड़ रहा है, तो उक्त मन्त्र जप करके शान्ति प्राप्त की जा सकती है। पहले एक नए घड़े मिट्टी के कलश में स्वच्छ जल भरे। उक्त मन्त्र द्वारा जल को १०८ बार अभिमन्त्रित करे। फिर जल को रोगी को पिलावे। इससे सभी प्रकार की कु-कृत्या से छुटकारा होगा।

'ग्रहण - काल' में उक्त मन्त्र का १० माला 'जप' करके 'प्रयोग' करे। उत्तम फल-प्राप्ति के लिए मन्त्र का नित्य जप करे। नित्य जप करने से उत्तम परिणाम मिलेंगे।

४६. अभिचार-कर्म से मुक्ति-प्राप्ति का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ६१ और भाग ५, पृष्ठ ५४ पर इसके लिए मन्त्र प्रकाशित हुए हैं। यहाँ दूसरा मन्त्र दिया जा रहा है)।

एक ठो सरसों, सोला राई। मोरो पटवल को रोजाई। खाय खाय पडे भार। जे करे, ते मरे। उलट विद्या ताही पे परे। शब्द साँचा, पिण्ड काचा—हनुमान जी का मन्त्र साँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। मेरे गुरु का वचन साँचा।

विधि : पहले शाबर-विधि से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में बाधा-ग्रस्त व्यक्ति को बाधा से छुड़ाने के लिए उसके हाथ में स्वतः थोड़ी राई, थोड़ा सरसों, नमक रखे और उसको ११ बार स्वयं अभि-मन्त्रित करे। फिर मन्त्र का स्मरण करते हुए उसे बाधा-ग्रस्त व्यक्ति के मस्तक के ऊपर से ११ बार घुमाकर अग्नि में डाल दे। इसके लिए अग्नि को पहले से ही तैयार करके रखना चाहिए। इससे सभी प्रकार के अभिचार - कर्मों की समाप्ति होती है। शनि या मङ्गलवार को यह 'प्रयोग' करे। 'प्रयोग' को दोहराने से बाधा या कष्ट की पूर्ण समाप्ति होगी।

४७. रोग-निवारक शाबर-मन्त्र

जै जै गुणवन्ती बीर हनुमान। रोग मिटे और खोलै खिलाब। कारज पुरण करे पवन-सुत। जो न करे, तो मां अञ्जनी की दुहाई। शब्द साचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले शाबर-विधि से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में 'प्रयोग' करे। कार्तिक मास के किसी भी मङ्गल को 'प्रयोग' करने से विशेष सफलता मिलती है। यदि ऐसा न हो, तो किसी भी मङ्गल-वार से यह 'प्रयोग' करे।

ताँबे के एक कलश में या बरतन में स्वच्छ जल रखे, उसमें चिरमी के तीन दाने डाले। उसको सामने रखकर उसके ऊपर हाथ रखकर उक्त मन्त्र १०८ बार जपे। बाद में चिरमी के दानों को निकालकर रोगी के मस्तक के ऊपर फिराकर दानों को दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे। बरतन के जल को रोगी को पिलाए। इस प्रकार प्रत्येक मङ्गलवार को करे। रोगी को शान्ति मिलेगी।

४८. नजर उतारने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ३, पृष्ठ १३, क्रमाङ्क ५ देखिए ! यहाँ उसी प्रकार का एक और प्रयोग दिया जा रहा है।)

ॐ नमो गुरु आदेश। तुझया नाचे भूत पलें, प्रेत पले। खबीस पले, सब पले। अरिष्ट पले, मुरिष्ट पले। न पले, तो तेरे गुरु की, गोरखनाथ की बीदया (विद्या) ही चले। गुरु की सङ्गत, मेरी भगत। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले शाबर - विधि से उक्त मन्त्र १००० बार जपे। बाद में जब कोई नजर-दोष-युक्त व्यक्ति आए, तब भस्म को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करे। भस्म को नजर-ग्रस्त व्यक्ति के शरीर पर लगाए या लगाने को दे। भस्म को लगाने से बुरी नजर का प्रभाव समाप्त होता है। ऐसा ३ या ७ दिन करे। बाद में भस्म को ताबीज में भरकर नजर-ग्रस्त व्यक्ति को पहनने के लिए दे।

४९. नजर बांधने का मन्त्र

ॐ नमो काला भैरूँ घँघरावाला। हाथ खड़ग, फूलों की माला। चौंसठ योगिन सङ्ग में, चोला देखो खोलि नजर का ताला। राजा-परजा ध्यावें तोंहि, सबकी दृष्टि बाँधि दे मोंहि। मैं पूजो तुमको नित ध्याय, राजा - परजा मेरे पाय लगाय। भरी अथाई सुमिरौं तोंहि, तेरा किया सब कुछ होय। देखूँ भैरों, तेरे मन्त्र की शक्ति। चले मन्त्र, ईश्वरो वाचा। शब्द साचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : रविवार के दिन श्मशान में जाए और एक चुटकी भस्म लाए। २१ बार मन्त्र जपे तथा विधि-पूर्वक भैरो जी का पूजन करे। भैरो जी को प्रसन्न करने के उपरान्त भस्म को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और चुटकी से भरी सभा में उड़ाए। इससे सबकी नजर बँध जाएगी।

५०. सर्व-टोना-रोग-निवारक मन्त्र

(टोना झारने के अनेक मन्त्र प्रकाशित हो चुके हैं। यहाँ सभी प्रकार के टोनों या रोगों के निवारण में उपयोगी मन्त्र दिया जा रहा है।)

ॐ बज्र में कोठा, बज्र में ताला। बज्र में बन्ध्या, दस्ते द्वारा (दशे द्वारा)। तहाँ बज्र का लग्या किवाडा। बज्जर में चौखट, बज्जर में कील। जहाँ सूँ आया, तहाँ ही जाय। जा ने भेजा, जाकूँ खाय। हमकूँ फेर न सूरत दिखाय। हाथ कूँ, नाक कूँ, कान कूँ, सिर कूँ, पीठ कूँ, कमर कूँ, छाती कूँ—जो-जो खों पहुँचावे, तो श्री गोरख-नाथ की आज्ञा फुरे। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : ग्रहण या पर्व-काल में यथा-शक्ति उक्त मन्त्र का जप कर उसे सिद्ध करे। बाद में प्रयोग करे।

(१) सात कुओं का जल लाकर उक्त मन्त्र को पढ़ता जाय और रोगी व्यक्ति को स्नान कराता जाय। इस प्रकार स्नान कराने से सभी रोग मिट जाते हैं।

(२) सात कुओं का जल यदि प्राप्त न हो, तो सात आधुनिक जल-स्रोतों या टङ्कियों का जल ले सकते हैं।

५१. जादू-प्रभाव दूर करने के मन्त्र

विशेष : यहाँ प्रकाशित दोनों मन्त्र एक से हैं। मात्र शब्द या पाठ-भेद हैं। दोनों की विधियों में भी कुछ ही अन्तर है। किसी भी एक मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। यदि इन मन्त्रों की कोई सरल विधि किन्हीं के पास हो, तो प्रकाशनार्थ 'चण्डी - कार्यालय' को भेज दें। प्रयोग सुरक्षित रहें, इसी उद्देश्य से जैसे प्राप्त थे, वैसे ही यहाँ दिए गए हैं। 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ ५७ में २४-२५ देखें। उन्हीं के समान ये प्रयोग भी हैं—

ॐ बज्र में कोटा, बज्र में ताला। बज्र में बँध्या दसौ द्वारा। जहां सूँ आयौ, जहाँ ही जाय। जाने भेजा, जाही कूँ खाय। चटपटंति असघान सखिति! तत्र इस पिण्ड की मूठि। टोणा चामण, बीर बैताल, ज्ञान - परिज्ञान जे इस पिण्ड कूँ कूछ करें, तो ईश्वर महा-देव की आज्ञा फुरे। श्री गोरखनाथ की आज्ञा फुरै।

विधि : २१ वृक्षों की पत्ती, २१ कुओं का पानी, तिराहे की धूलि, कच्ची घानी का तेल और सन का चून--इन्हें कोरे घड़े में डाल-कर—पानी भरकर रख दे। फिर मन्त्र का जप करते हुए इसी मन्त्र को कागज या भोज-पत्र के ऊपर लिखकर कण्ठ में बांधे और रात्रि में हवन करे। प्रातः-काल छान की चैत कर नीचे स्नान कराए। तेल, धूल और चून को मिलाकर औटावे तथा १०८ बार अभिमन्त्रित कर सिर पर डाले और अपने नाम का उच्चारण करे, तो दूसरे के चलाए हुए जादू आदि के कारण हुए रोगादि, कामण-टूमण आदि, टोने-टोटके के दोष दूर हो जाते हैं।

(२) **ॐ बज्र में कोटा, बज्र में ताला। बज्र में बंध्या दसौ द्वारा। जहां सूँ आयौ, जहाँ ही जाय। जाने भेजा, जाही कूँ खाय। चटपटंति अस घान सखिति! तत्र इस पिण्ड की मूठि, टोणा - चामण, वीर बैताल, ज्ञान-परि-ज्ञान, जे इस पिण्ड कूँ कुछ करें, तो ईश्वर महा-देव की आज्ञा फुरे।**

विधि : २१ वृक्षों की पत्ती, २१ कुओं का जल, तिराहे की धूलि, कच्ची घानी का तेल और सन का चून लेकर, कोरे घड़े में पानी तथा उपर्युक्त जल और पत्ती डाले। माला बंटकर घड़े के कण्ठ से बाँधकर रात्रि को हवन करे। प्रातः-काल के समय पानी को छानकर, किसी छान के नीचे रोगी को स्नान कराए तथा तेल, धूलि और चून मिलाकर औटावे। फिर उसे १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर रोगी के मस्तक पर डाले अथवा रोगी का नाम ले, तो जादू-टोने टोटके के दोष दूर होकर शरीर निर्मल हो जाता है।

५२. चार कार्यों के लिए एक मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को । जैसे फँले हु रामचन्द्र के बूत, ओईसह कर राघ विनी कबूत पवन - पूत हनुमन्त ! वाड हर-हर रावन फूट निरावन श्रवई, अण्ड से ताहि श्रवई, अण्ड-अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवई । वा जङ्गर्भहि श्रवई, स्त्री पी लहि श्रवहि । शाप हर-हर जम्बीर, हर जम्बीर, हर-हर-हर !

विधि : उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़कर जल को अभिमन्त्रित करे। यह जल चार प्रकार से उपयोगी है—(१) गर्भवती स्त्री को पिलाए, तो दो - तीन महीने का गर्भ गिर जाता है, (२) पुरुष को पिलाए, तो अण्ड - वृद्धि का रोग मिट जाता है, (३) मिट्टी का एक ढेला २१ बार अभिमन्त्रित कर साँप के बिल के ऊपर रख दे और स्वयं दूर होकर देखे, तो वहाँ से साँप निकल जाएगा और (४) मिट्टी के तीन ढेले लेकर प्रत्येक के ऊपर २१-२१ बार मन्त्र जप कर उन्हें अभिमन्त्रित करे। फिर उन्हें खेत के तीन कोनों में, जो तीन - चार दिन का ही बोया हो, फेंक दे। ऐसा करने से उसकी फसल सूख जाएगी।

५३. दश रोगों को झारने के दो मन्त्र

(१) पर्वत-ऊपर पर्वत और पर्वत-ऊपर फटिक-शिला । फटिक - शिला पर अञ्जनी, जिन जाया हनुमन्त । मेहला टेहला काँख की कखराई, पीछे की आदरी । कान की कन-फेर, शल की बद, कण्ठ की कण्ठ-माला । घुटने का डहरु, डाढ़ की डाढ़-शूल । पेट की ताप-तिल्ली किया, इतने को दूर करे भस्मन्त । नातर तुझे माता अञ्जनी का दूध हराम ! मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा । सत नाम, आदेश गुरु का ।

विधि : सात शनिवार को धूप-दीप-नैवेद्य के साथ हनुमान जी का पूजन करे। साथ ही प्रति-दिन उक्त मन्त्र की १-१ माला जप भी करे। ऐसा करने से मन्त्र की सिद्धि होगी। प्रयोग या मन्त्र - काल में ब्रह्मचर्य-व्रत रखकर साधना करे।

मन्त्रानुष्ठान के बाद जब होली, दिवाली या ग्रहण हो, तब मन्त्र का १०८ बार जप कर लिया करे। इस प्रकार करते रहने से मन्त्र की सिद्धि और बढ़ेगी तथा प्रयोग करने से सफलता मिलेगी और यश-वृद्धि होगी। झाड़ने की विधि निम्न प्रकार है—

(१) कखराई, अदीठ, कनफेर, बद, कण्ठ - माला, दाढ़ - शूल को राख से झाड़े।

(२) डहरु को, ताप - तिल्ली को छूरी से झाड़े। (शेष दर्दों के झाड़ने की विधि नहीं बताई है। प्रचलित रीति से--सूझ-बूझ के अनु-सार झाड़े)।

दर्द का आराम हो जाय, तब हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाए और उसे बाँटे।

(२) परबत-ऊपर परबत, परबत-ऊपर फटिक-सिला। फटिक-सिला पर अञ्जनी, जिन जाया हनुमन्त। नेहला, टेहला, काँख की कखलाई, पीठी की अदीठ। कान की कनफेर, रान की बद, कण्ठ की कण्ठ - माला। घुटरने का डहरुँ, हाड की हड-शूल, पेट की ताप - तिल्ली—किया। इनको दूर करे भस्मन्त, नातर तुझे अंजनी माता का दूध पिया हराम! मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत-नाम, आदेश गुरु का।

विधि : शनिवार से आरम्भ कर, प्रति - दिन हनुमान जी का विधि - पूर्वक पूजन कर २१ दिनों तक नित्य १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे, मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। तब उसका उपयोग करे। मन्त्र से रोगी को झाड़ने की विधि निम्न प्रकार है—

(१) आक से डहरु को, (२) छूरी से ताप-तिल्ली को, (३) राख या भस्म से कखलाई, अदीठ, कनफेर, बद तथा कण्ठ - माला को,

(४) नीम की डाली से हड - शूल को झाड़ना चाहिए और (५) शेष रोगों को स्वयं की सूझ से—प्रचलित साधनों से झार दे।

सूचना : (१) मन्त्र - सिद्धि करने के बाद भी, जब होली, दिवाली या ग्रहण हो, तब उक्त मन्त्र की १-१ माला का जप कर उसे चैतन्य करता रहे। इससे अति-प्रभावी परिणाम सदा मिलता रहेगा।

(२) दश रोगों को झाड़ने के लिए उक्त दोनों मन्त्रों को ठीक-ठीक समझ ले। कुछ पाठ-भेद और कुछ विधि-भेद है, उसे जान ले। बाद में आवश्यकता होने पर किसी भी एक से कार्य करे।

५४. डमरु पसली-वायु झारने का मन्त्र

ॐ सत्य-नाम आदेश गुरु को। ॐ खबारी खेबारा कहां गया ? सवा लाख पर्वतों गया। सवा लाख पर्वतों जाय कहा करेगा ? सवा भार कोयला करेगा। सवा भार कोयला कर कहा करेगा ? हनुमत बीर नव-चन्द्र-हास खड्ग गढ़ेगा कहा। नव - चन्द्र - हास खड्ग गढ़ कहा करेगा ? जानवा डोरु पसली वाय काट-कूट खारी समुद्र नाखेगा। जगद-गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : यथा - विधि सिद्ध कर प्रयोग का अनुभव करे। बाद में तिल का तेल व सिन्दूर से झाड़े, तो प्रयोग में कथित रोगों की शान्ति होगी।

५५. जानुवा पसली और डमरु बाई का मन्त्र

ॐ खम्बारी खम्बारा कहा गया ? सवा लाख परवतों गया। सवा लाख परवतों जाय कहा करेगा ? सवा भार कोयला करेगा। सवा भार कोइला कर कहा करेगा ? हनुमन्त वीर का नव-चन्द्र-हास खडग घड़ेगा। नव-चन्द्र-हास खडग घड़ कहा करेगा ? जानुवा डमरी पसली वायु

कूँ काढि-कूढि खारी समुद्र में नाखेगा। जगत-गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : तिल के तेल में सिन्दूर मिलाए। उसे उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। आवश्यकता होने पर सात दिनों तक प्रति-दिन मन्त्र-जप करते-करते आँकने से 'जानुवा पसली' और 'डमरु बाई' का दर्द दूर होता है। रोगी को आराम होगा।

५६. पसली डबका मन्त्र

(१) हं मन्दिर के किनारे सुरहा गाय, सुरहा गाय के पेट में उच्छा। बच्छा के पेट में कलेजा। कलेजा के पेट में डब-डब कर उमर बढ़े। दुहाई लेना, लोना चमारी की!

विधि : दिवाली, होली या ग्रहण-काल में स्नानादि कर स्वच्छ होकर उक्त मन्त्र का १०१ बार जप करे, तो मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र जपते समय अग्नि में लोबान डालता जाय। इस प्रकार जप करते समय लोबान की धूनी चालू रखना आवश्यक है। इसी प्रकार मन्त्र की सिद्धि करे।

आवश्यकता होने पर एक सेर लकड़ी और अँगुली के माप की सात सींके काट ले। उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़ते हुए सींकों से झाड़े, तो 'पसली' का रोग दूर होकर रोगी को आराम हो जायगा।

(२) समन्दर के किनारे सुरह गाय। सुरह गाय के पेट में बच्चा। बचवा के पेट में कलेजा, कलेजा के पेट में डब-डब कटेस खड़े। दुहाई लोना चमारी की!

विधि—होली-दिवाली या ग्रहण-काल में इस मन्त्र का १४४ बार जप करे। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जायगा। मन्त्र जपते समय लोबान की धूनी चालू रखे। जब रोगी को झाड़ना हो, तब 'रायेसर' की लकड़ी और सात 'कोरी सींकें' ले। लकड़ी और सींकों को अँगुली की माप के बराबर काट ले। उनके ऊपर सात बार मन्त्र का जप कर उन दोनों से झारे। झारा देने पर दोनों वस्तुएँ बढ़ जाएंगी। जब रोग मिट जायगा, तब दोनों वस्तुएँ ज्यों-की-त्यों हो जाएँगी।

५७. नहरुवा मिटाने का मन्त्र

भाँमन सेती योगी भया। जनेऊ तेरी नहरुवा किया। न पाकै, न फूटै, न व्यथा करै। विरुपाक्ष की आज्ञा, भीतर ही सरै।

विधि—उक्त मन्त्र को सिद्ध कर प्रयोग करे। यथा—(१) २१ बार मन्त्र के जप से जल को अभिमन्त्रित करे। इसी जल से रोगी को छींटा मारे, तो 'नहरुवा' न रहेगा (२) अभिमन्त्रित जल रोगी (दर्दी) को पिलाए, तो 'नहरुवा' या 'नहरुना' मिट जाएगा।

५८. गठिया अथवा वात-वेदना-निवारण

ॐ मूल नमः, घुक्ष नमः। जाहि जाहि, ध्वाक्ष तमः। प्रकीर्ण अङ्गा प्रस्तार-प्रस्तार, मुश्र-मुश्र।

विधि—पहले पर्व-काल में मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में सन्धि-वात या गठिया - वात या कमर में बाई, वात - वेदनावाले रोगी को मङ्गलवार या रविवार को २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर मोर - पङ्ख से झाड़े। जब तक लाभ न हो, प्रत्येक मङ्गलवार या रविवार को झाड़े। वात की बीमारी दूर होगी। श्रद्धा से करे, प्रयोग निर्दोष है।

५९. शूल-रोग-नाशक मन्त्र

ॐ मीठुष्टम शिव-तमः। शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष, आयुधन्निधाय कृतिं वसान। आचर पिनाकं बिभ्रदागही।

विधि—सर्व-प्रथम 'त्यम्बकं यजामहे' मन्त्र से भगवान् शिव जी का पूजन करे। रोग-निवारण का सङ्कल्प करे। फिर उक्त मन्त्र का १ लाख 'जप' करे। ऐसा न हो सके, तो १ हजार जप करे। शूल-पीड़ा नष्ट होगी। शूल-शान्ति का यह प्रयोग भी निर्दोष है।

६०. सर्व-शूल-नाशक मन्त्र

ॐ नमो भगवते चिन्तामणी हनुमान! अङ्ग - शूल, अति-शूल, कटि-शूल, कुक्षि-शूल, गुद - शूल, मस्तक - शूल, सर्व-शूल निर्मूलय निर्मूलय, कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—पर्व-काल में उक्त मन्त्र का एक माला जप करने से वह सिद्ध हो जाएगा । अधिक जप करने से विशेष प्रभाव होगा । इस प्रकार मन्त्र सिद्ध कर प्रयोग करे । यथा—शूल - ग्रस्त रोगी को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पीने के लिए दे अथवा भस्म को अभिमन्त्रित कर उसे खाने को दे । अथवा नीम्बू मँगवाकर उसे अभिमन्त्रित करे । फिर उसे शरीर के शूल - ग्रस्त भाग के ऊपर फिराए । बाद में उस नीम्बू को कुएँ, नदी या जलाशय में विसर्जित कर दे । इस प्रकार करने से शूल-पीड़ा, शूल-व्याधि नष्ट होगी । निःस्वार्थ भाव से प्रयोग किया जाएगा, तो सफलता विशेष रूप से मिलेगी । शूल-रोग के अच्छा हो जाने पर दान - पुण्य यथा - शक्ति करना चाहिए । प्रयोग करते समय मन्त्र का स्मरण बराबर करता रहे ।

६१. सर्व-ज्वर-नाशक मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ५६ में ८वाँ मन्त्र और भाग ५ के पृष्ठ ५० का ६ ठा मन्त्र देखें । सब प्रकार के ज्वर की शान्ति करने का मन्त्र अधिक उपयोगी होगा—इसलिए उसे यहाँ दिया है ।—प्रेषक)

(१) दोऊ भाई ज्वर-सुरा महाबीर नाम । दिन-रात खटि मरे महादेव के ठाम । फूर छेद से छतिस रूप महूर्त मों धराय । नाराज नामूक के घर दुआर फिराय । ज्वाला-जर, पाला-ज्वर, काला-ज्वर, विशाकी । दाह्-ज्वर, उमा-ज्वर, भूमा-ज्वर, झूमकि । घोड़ा-ज्वर भूया तिजोरी ओ चौथाई । सवत को भङ्ग घोटन शिव ने बुझाई । यह ज्वर-ज्वर सूरा तू कौन ओर तलाब ? शीघ्र अमुक अङ्ग छोड़ तुम जाव यदि अङ्गन में । तू भूलि भटकाय, तो महादेव के लागा खाय । आदेश कामरू-कामाक्षा माई । आज्ञा हाड़ि दासी–चण्डी की दोहाई ।

विधि—शाबर-मन्त्र की विधि से सिद्ध करे । सामान्यतः १० माला जप करने से सिद्धि होती है । बाद में ज्वर दूर करने के लिए

प्रयोग करे। यथा—ज्वर - ग्रस्त या ज्वर के रोगी को उत्तराभिमुख बिठाए। सात बार उक्त मन्त्र का स्मरण करते हुए रोगी को झाड़े। तीन दिनों तक लगातार ऐसा ही करने से सब प्रकार का ज्वर अच्छा हो जाता है। प्रयोग श्रद्धा से करना चाहिए। ज्वर निश्चय ही शान्त हो जायगा।

(२) ॐ नमो भगवते श्रीपरमेश्वराय पक्षि - राजाय एकाहिक (एकादिक) ज्वर, द्वाहिक ज्वर, त्र्याहिक ज्वर, चातुर्थिक ज्वर, अर्ध-मासिक ज्वर, षण्मासिक ज्वर, वात-पित्त-श्लेष्म-सान्निपातिक ज्वर, विषम ज्वर, बरम - ज्वर, रुद्र-ज्वर, सर्व-ज्वरान्निर्मूलय निर्मूलय, कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—ग्रहण-काल में १ से १० माला जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। एक मत से तो मन्त्र-ग्रहण के समय मात्र १०८ बार जप करने से ही मन्त्र-सिद्धि हो जाती है। सिद्धि हो जाने पर ज्वर - ग्रस्त व्यक्ति को स्वच्छ व ताजे जल को ५ या ७ बार जप द्वारा अभिमन्त्रित कर पीने को दे या वैसे ही अभिमन्त्रित की हुई भस्म भी दे। ऐसा ३ से ७ दिन तक करने से ज्वर की समाप्ति हो जायगी। रोग की शान्ति होगी।

६२. भूत-ज्वर-नाशक मन्त्र

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनी कुर्बली स्वाहा।

विधि—शाबर-मन्त्र की विधि से या अन्य प्रकार से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में भूत - बाधा से ज्वर - ग्रस्त दर्दी को ११ बार मन्त्र जपते हुए मोर-पङ्ख से ३ या ७ दिनों तक झाड़े।

भूतादि जैसे ज्वर में दवाइयाँ काम नहीं देतीं। तब यह प्रयोग उपयोगी होगा।

६३. स्वयं ज्वर-ग्रस्त के लिए करने का मन्त्र

श्रीकृष्ण-बलभद्रस्य प्रद्युम्न-अनिरुद्धया, उषा - स्मरण-मात्रेण ज्वर-व्याधि विमुच्यते।

विधि—किसी भी प्रकार का ज्वर हो, उसकी शान्ति के लिए उक्त मन्त्र शुभ परिणाम-दायक है। ज्वर-ग्रस्त व्यक्ति अपने ज्वर की शान्ति के लिए उक्त मन्त्र का स्मरण स्वयं करता रहे, तो उसके ज्वर का शमन हो जाएगा। ज्वर-ग्रस्त व्यक्ति को यह भावना करनी चाहिए कि "जिनका मैं स्मरण कर रहा हूँ, वे ही मेरे ज्वर की शान्ति कर रहे हैं। मेरी श्रद्धा से उनकी कृपा होगी और मेरा ज्वर तुरन्त ही मिटनेवाला है।" ऐसी भावना करने से ज्वर-शान्ति होगी। कितना मन्त्र जपना चाहिए, यह नहीं बताया है। अतः जितना हो सके, उतना जप करे। इस मन्त्र को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं।

६४. ज्वर-निवारण का विशेष मन्त्र

ॐ नमश्चण्ड-वज्र-पाणये महा-सुषेणाधिपतये ॐ ज्वर ! शृणु शृणु, छर्द्द छर्द्द, शिरो मुञ्च मुञ्च, हृदयं मुञ्च मुञ्च, उदरं मुञ्च मुञ्च, कटिं मुञ्च मुञ्च, ऊरुं मुञ्च मुञ्च, हस्तौ मुञ्च मुञ्च, गात्राणि मुञ्च मुञ्च, ॐ हुं हुं हुं फट्। अमुकस्य सर्व-ज्वरं नाशय स्वाहा।

विधि—उक्त मन्त्र का १००८ बार जप करने से वह सिद्ध हो जाता है। बाद में अखण्ड भोज-पत्र के टुकड़े के ऊपर यह मन्त्र केशर-युक्त चन्दन से अनार या अन्य उचित कलम द्वारा लिखे। उसे कुआँरी कन्या के हाथ से काते हुए सूत में लपेट कर रोगी के शिर या दाईं भुजा में बाँध दे, तो ज्वर जाता रहेगा। उक्त प्रकार का सूत या डोरा प्राप्त न हो सके, तो मन्त्र-लिखित उक्त भोज-पत्र को ताँबे के तावीज में भरकर शिर में बाँध दे, तो भी ज्वर की शान्ति हो जाएगी।

विशेष—'अमुकस्य' के स्थान पर रोगी का नाम जोड़कर लिखे।

६५. ज्वर-निवारण के दो विशेष मन्त्र

(१) ह्रीं क्लां ठः ठः, त्रो त्रो, ज्वर ! शृणु शृणु, हन हन, गर्ज गर्ज, एकाहिकं, द्वयाहिकं, त्र्याहिकं, चतुरहिकं, साप्ताहिकं, मासिकं, अर्ध - मासिकं, वार्षिकं, द्वैवार्षिकं मोहू-

र्तिकं, नैमिषिकं झ्रट झ्रट, त्रट त्रट, हुं फट्। अमुकस्य ज्वरं हन हन, मुश्च मुश्च, भूम्या गच्छ स्वाहा।

(२) ह्रीं क्लीं, ठः ठः, भो भो ज्वर! शृणु शृणु, गर्ज गर्ज, एकाहिकं, द्वयाहिकं, त्र्याहिकं, चतुराहिकं, साप्ताहिकं, अर्ध-मासिकं, मासिकं, वार्षिकं, द्वै-वार्षिकं, मोहूर्तिकं, नैमिषिकं झ्रट झ्रट, भट भट, हुं फट्। अमुकस्य ज्वरं हन हन, मुश्च मुश्च, भूम्यां गच्छ स्वाहा।

विधि—उक्त दोनों मन्त्र एक जैसे ही हैं। केवल कुछ पाठ-भेद हैं। पाठक बन्धु दोनों में से किसी भी एक मन्त्र का प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि दोनों की विधि एक ही है। यथा—जिसे ज्वर हो, उस रोगी के नाम से 'नौ मुट्ठी चावल' के चूर्ण में नमक मिलाकर एक पुतली बनाए। उस पुतली पर हल्दी पोतकर पीले कपड़े की चार छोटी ध्वजाएँ बनाकर उस पुतली में गाड़ दे। इस प्रकार तीन दिनों तक रोगी का नाम लेकर पुतली को उत्तर दिशा में विसर्जित करे। 'अमुकस्य' के स्थान में रोगी (ज्वर - ग्रस्त) का नाम जोड़कर प्रयोग करे। ज्वर-शान्ति अवश्य होगी।

[मन्त्र का जप कितना किया जाय, यह नहीं बताया है। अतः कम-से-कम एक या दस माला का जप पहले से ही विधि - वत् कर लेना चाहिए। ध्वजा छोटी (नन्ही) बनाए क्योंकि पुतली भी छोटी ही होगी। सूझ-बूझ से काम करे। प्रयोग में मन्त्र का स्मरण नाम-सहित करे। 'पुतली' को राम-पातर (पत्तल) या मिट्टी के बरतन में रखकर विसर्जन के लिए ले जाए और बिना बोले यह विधि करे। पीछे मुड़-कर न देखे। गाँव के बाहर, उत्तर की ओर विसर्जन के लिए ले जाए, जहाँ कोई मकान न हो। पत्तल में लेकर जाने से सुविधा रहेगी क्योंकि तीन दिनों तक यह विधि करनी है। —प्रेषक]

६६. दन्त-पीड़ा झारने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ६० में मन्त्र ६; भाग ४, पृष्ठ २५ में मन्त्र २० और पृष्ठ ५६ में मन्त्र २१ तथा भाग ६, पृष्ठ ७४ में मन्त्र ६ देखें। वैसा ही एक मन्त्र यहाँ प्रस्तुत है।—प्रेषक)

ॐ नमो आदेश गुरू को। बन में ब्याई अञ्जनी, जिन जाया हनुमन्त। कीड़ा - मकड़ा - माकड़ा—ये तीनों भरमन्त। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—२१,००० जप करने से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। 'शाबर' की विधि से सिद्ध करके प्रयोग करना चाहिए। दन्त - पीड़ा-वाले व्यक्ति को ३ या ७ बार मन्त्र जप कर नीम की डाली से झाड़े। पीड़ा दूर हो जाएगी। कभी-कभी झाड़ने से पीड़ा दूर नहीं होती, तब कटाई के बीजों का धुआँ दाँतों में दे और थोड़ी देर के बाद दर्दी से थूकने को कहे। थूक में यदि कीड़े दिखाई दें, तो समझे कि दर्द की समाप्ति हो गई है। अन्यथा दर्द की समाप्ति तक यह क्रिया करे।

'कटाई के बीज' देशी दवा बेचनेवाली दूकान से प्राप्त करे। धुआँ देने का कार्य व्यवस्थित और उचित ढङ्ग से करे। आँखें बन्द रखकर ही धुआँ लेना चाहिए।

६७. डाढ़ के दर्द का मन्त्र

दन्त-पीड़ा झारने का मन्त्र ही 'डाढ़-दर्द' को भी दूर करता है।

विधि—दीपावली की रात्रि में एक लाख जप करने से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। अथवा 'शाबर' की विधि से सिद्ध करे। उसके बाद डाढ़-पीड़ा-ग्रस्त व्यक्ति को नीम की डाली से मन्त्र स्मरण करते-करते झाड़े, तो डाढ़ की पीड़ा शान्त हो जाएगी। दर्द बन्द न हो, तो ऊपर बताई धुआँ देने की क्रिया करे।

विशेष : दीपावली की एक रात्रि में एक लक्ष जप पूरा न हो, तो बाद के दिनों में जप पूरा कर ले अथवा प्रत्येक दीपावली को मन्त्र जपता रहे। साथ ही प्रयोग भी करता रहे। 'शाबर' की विधि से कार्य करे, तो लाभ ही होगा।

६८. दांत की व्यथा झारने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ५, पृष्ठ ७५ में मन्त्र (ब) देखें। वही मन्त्र सविधि निम्न प्रकार भी प्राप्त है।—प्रेषक)

अग्नि बांधों, अग्निश्वर बांधों। सौ लाल पिवाराल बांधो, सो लोहा-लोहार बाँधो। वज्र के निहाय, वज्र-वन दांत विहाय, तो महादेव की आन!

विधि—'शाबर' की विधि से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में ७ बार मन्त्र का जप कर दुखते हुए दाँतों को फूंके, तो दन्त - व्यथा दूर होगी। यदि नारा उखरा हो, तो हाथ की तर्जनी अँगुली से झारे।

पाठ-भेद—'लोहार' के स्थान पर 'लुहार', 'वज्र - वन' के स्थान पर 'वज्र-धन', 'बिहाय' के स्थान पर 'विहाय'।

विधि-भेद—उक्त पाठ-भेदों के अनुसार परिवर्तित मन्त्र को सिद्ध कर मन्त्र द्वारा तर्जनी उँगली से झाड़े, तो दाँत का दर्द मिट जाता है।

६९. दांतों का दर्द दूर करने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ ५६ में मन्त्र २० देखें। वैसा ही यह मन्त्र है।—प्रेषक)

हम इक सर, तुम हो बतीस। हमरी तुम्हरी कौन-सी रीस॥ हम कमाय, तुम बैठे खावो। मरती बिरीया, सङ्गहि जावो॥

विधि—उक्त मन्त्र को 'शाबर' की विधि से सिद्ध करे। बाद में दाँतों में दर्द होता हो, तो मुँह धोने के समय सात बार मन्त्र पढ़कर कुल्ला करे। दन्त-पीड़ा दूर हो जाएगी।

७०. डाढ़ की पीड़ा का मन्त्र

(१) ॐ नमो आदेश गुरु को। नौ लख कांवरु एक बार, जहां बैठे ग्वाल - बाल गङ्गा-जमुना-सरस्वती। जहाँ बैठे गोरख जती, गौतम ऋषि। सिखर परवत ते आई काम-धेनु, छत्तीस रोग टलें। आधा दीना पृथ्वी, आधा दीना वायु। भोरां पाही रणटिया, सिगत पासु बठि। याम दौड़ रक्षा करें—श्रीरामचन्द्र, हनुमन्त। पाल भाव, रोग - दोष

जाएँ पराई सीव। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—विधि प्राप्त नहीं है। उक्त मन्त्र की विधि यदि किसी पाठक को ज्ञात हो, तो 'चण्डी-कार्यालय' को या मुझे लिखकर भेजें।

(२) ॐ नमो आदेश गुरू को। नौ लख ओढ़े कामरी, बैठे जहां गोपाल। जमुना-गङ्गा-सरस्वती, तहां ग्वाल अरु बाल। आए गोरख यती जी, गौतम ऋषि के पास। डाढ़ दाँत के दर्द को, आवत होय विनाश। आधो दियो धेनु को, आधो सन्तन माहि। राग-दोष सब ही टरैं, श्रीहनुमन्त सहाहिं। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—तेज छुरी से धरती के ऊपर २१ रेखाएँ खींचे और हाथ से उस दाँत या डाढ़ को, जहाँ दर्द हो रहा हो, साधक पकड़ ले और दबा दे। ऐसा करते समय मन्त्र स्मरण करता रहे। दाँत या डाढ़ का दर्द शान्त हो जाएगा। जो दाँत या डाढ़ दुख रहा हो, उसे अँगूठे से और उसको बगल की अँगुली से पकड़ कर दबाना चाहिए। 'शाबर' की विधि से मन्त्र को सिद्ध करके काम करना चाहिए।

(३) ॐ नमो कामरू देश, कामाक्षी देवी। जहां बसै इस्मायल योगी। इस्मायल योगी ने पाली गाय, नित उठ चरवा वन में जाय। वन में चरै सूखा घास, खाय-पिय के गोबर किया। जाए निपज्या कीडा सात। सूत - सूताला, पूँछ पुछाला। धड़ पीड़ा, मुँह काला। डाढ़ - दांत गालैं, मसुढ़ा गालैं। मसुढ़ै पीडा करै, तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरै। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—सिद्ध किए हुए मन्त्र से आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग करे। उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए लोहे की तीन कीलों को काठ पर ठोंक देने से डाढ़ का दर्द दूर हो जाता है।

७१. नेत्र-रोग-निवारक प्रयोग

('शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग १, पृष्ठ ३८ में मन्त्र ७; भाग ४, पृष्ठ २२ में मन्त्र १६ देखें। भाग २, पृष्ठ ३६ में मन्त्र ८ पर फूला काटने का जो मन्त्र है, वह यहाँ स-विधि दिया जा रहा है। भाग ६, पृष्ठ ७४, मन्त्र ५ में जो प्रयोग दिया गया है, वह यहाँ भिन्न रूप में दिया जा रहा है।—प्रेषक)

(१) आंख का फूला काटने का मन्त्र

उत्तर काल काछ, सुत योग का बाछ। इस्माइल योगी की दो बेटी। एक माथे चूल्हा, एक काटे फूला। दुहाई लोना चमारी की। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। फुरो न्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—पहले शाबर-मन्त्र की विधि से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में जब आवश्यकता हो, तब लोहे की कील को २१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पृथ्वी में ठोंके। ऐसा तीन या सात दिनों तक करे, फूला कट जाएगा। जब तक लाभ न हो, तब तक करे।

पाठ-भेद—'उत्तर काल बाछ, सुत योग का बाछ' के स्थान पर 'उत्तर का काछ, सुन योगी का बाछ' भी कर सकते हैं।

(२) उठी आंख झारने का मन्त्र

ॐ बने बिआई बानरी, जहां-जहां हनुमन्त। आखि पीडा कषाबारी गिहिया थनैलाई, चारिउ जाई भस्मन्त। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—पहले मन्त्र सिद्ध करे। बाद में उठी आँख पर हाथ फेरे और ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंके। व्यथा और पीड़ा मिट जाएगी।

पाठ-भेद—'कषाबारी'—'कषारी', 'थनैलाई'—'थनेलाह'।

(३) नेत्र-पीड़ा-हारक मन्त्र

सातों रीदा, सातों भाई। सातों मिल के आंख बराई। दुहाई सातों देव की। इन आंखिन पीडा करे, तो

धोबी की नाद, चमार के चूल्हे परे। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत - नाम, आदेश गुरु की।

विधि—उक्त मन्त्र का 'जप' 'होली' या 'दिवाली' के दिन से प्रारम्भ करे। इक्कीस दिन नित्य १ माला 'जप' करे। इस प्रकार २१ दिनों में २१ माला 'जप' करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। 'जप' प्रारम्भ करने से पहले १ जोड़ा पान, २१ लौंग, थोड़ा-सा सिन्दूर और धूप - दीप सहित नैवेद्य चढ़ाए। बाद में २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंके। नेत्र-पीड़ा में लाभ होगा। ऐसा ३ से ७ दिनों तक करे।

पाठ - भेद—'चूल्हे' के स्थान पर 'चूहे', 'परे' के स्थान पर 'परै'।

विधि-भेद—(१) होली या दिवाली से प्रारम्भ करे। २१ दिनों तक नित्य एक-एक माला जप करने से मन्त्र-सिद्धि होगी। मन्त्र को सदैव सजीव-जाग्रत रखने के लिए जब-जब होली या दिवाली आए, तब-तब इस मन्त्र की १-१ माला जप अवश्य करे। अन्यथा सिद्धि समाप्त हो जायगी।

(४) नेत्र-पीड़ा-निवारक मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ३८ में मन्त्र ७; पृष्ठ ५ में ३; भाग २, पृष्ठ २८, भाग ४, पृष्ठ २२ में मन्त्र १६ और भाग ६, पृष्ठ ७४ में मन्त्र ५ देखें। कुछ अन्य मन्त्र यहाँ प्रस्तुत हैं। —प्रेषक)

(१) ॐ नमो रामजी धनी, लक्ष्मण के बाण। आंख दर्द करे, तो लक्ष्मण कुवर की आन। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत नाम, आदेश गुरू का।

विधि—श्रीलक्ष्मण जी का मानस - पूजन करे। धूप, दीप, नैवेद्य, फल-फूल इत्यादि रखकर रवि या गुरु-पुष्यामृत या अमृत-सिद्धि योग के समय उक्त मन्त्र का १००० से लेकर १०,००० जप करने से मन्त्र-सिद्धि होगी। शुभ योग में अधिकाधिक मन्त्र-जप से प्रयोग का प्रभाव बढ़ेगा। अथवा 'शाबर' की विधि से मन्त्र सिद्ध करे। बाद में

कोई भी रोग या पीड़ा—जो नेत्र-सम्बन्धी है, उसका निवारण करे। २७ या १०८ बार मन्त्र जप करते-करते नेत्र-रोगी की आँख के ऊपर झाड़े, तो आँख का दर्द शान्त हो जायगा। जब तक आराम न हो, तब तक यह क्रम करता रहे। नीम की टहनी से झाड़ना चाहिए। नीम को पीड़ा-हारक और आरोग्य-दायक माना गया है।

अथवा दीपावली की रात्रि में १४४ बार मन्त्र-जप करे, तो मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में आवश्यकता होने पर १४४ बार पुनः मन्त्र जपे और तीर से झारे, तो नेत्र-रोग दूर हो जाता है।

विशेष : लक्ष्मण जी का मानस - पूजन करने की बात पहली बार प्राप्त हुई है। वैसी ही 'तीर से झारने' की बात भी है। 'शाबर'-मन्त्रों में व्यक्ति-वैविध्य और वस्तु - वैविध्य विपुल प्रमाण में । यही 'शाबर' की सबसे बड़ी विशेषता है।

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ २२ में मन्त्र १६ देखें। वही मन्त्र निम्न दो रूपों में भी प्राप्त है।—प्रेषक)

(२) ॐ नमो झलमल जहर - भरी तलाई, अस्ताचल पर्वत ते आई। तहाँ बैठा हनुमन्ता जाई। फुटे न पाकै, करे न पीडा। यति हनुमन्त राखै हीडा। शब्द साचा, पिण्ड काचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—सिद्ध करने के बाद नीम्बू की डाली से ३ दिनों तक सात-सात बार झाड़े।

(३) ॐ नमो झलमल जहर - भरी तलाई, जहाँ बैठा हनुमन्ता जाई। फुटँ न चालै, करै न पीडा। जती हनुमन्त राखे हीड़ा॥

विधि—शाबर की विधि से सिद्ध कर ले। बाद में दुखती आँखों को झारने के लिए हाथ में विभूति लेकर २१ बार मन्त्र का जप कर आँखों को २१ बार झारना या चाकना चाहिए। आराम हो जायगा।

(४) ॐ नमो आदेश गुरू को, समुद्र-समुद्र खाई। इस मर्द की आँख आई, पाकै न फूटै पीड़ा करै। गुरू गोरखनाथ

जी की आज्ञा फरे। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—सिद्ध करने के बाद नमक की ७ कङ्कड़ियों से चाकै, तो आँख अच्छी हो जायगी। ३ या ७ दिनों तक यह क्रम चालू रखे। आँख की पीड़ा का शमन होगा। उक्त मन्त्र निम्न रूप में भी प्राप्त होता है—

(५) ॐ नमो समुद्र, समुद्र में खाई। इस मरद की आँख आई, पाके न फूटे, न पीडा करै। गोरख जती की आज्ञा फुरै। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि—उक्त मन्त्र का स्मरण करते हुए नमक की कङ्कड़ी द्वारा सात बार आँकने से नेत्र-पीड़ा दूर होती है।

७२. मस्तक-पीड़ा-निवारक मन्त्र

(१) सहस्त्र घर चाले, एक घर खाए। नागे चले, तो पीछे जाए। मन्त्र साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि—पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में प्रयोग करे। प्रयोग करते समय मन्त्र पढ़कर अपनी हथेली के ऊपर फूंके और हथेली को अपने मस्तक के ऊपर फिराए। मस्तक की पीड़ा दूर होगी। यदि किसी अन्य की मस्तक - पीड़ा का निवारण करना हो, तो रोगी के मस्तक के ऊपर फूंके या अपनी हथेली के ऊपर फूंके और उसे मस्तक के ऊपर फिराए। हाथ फिराते समय ७ बार मन्त्र जपे और फूंक देते समय भी ७ बार मन्त्र जपे। ऐसा ३ से ७ दिनों तक करे।

विशेष—ऊपर दिया हुआ मन्त्र भिन्न रूप में भी प्राप्त है। नीचे उक्त मन्त्र का भिन्न रूप विधि-सहित दिया जा रहा है—

(२) हजार घर घाले, एक घर खाए। आगे चले, तो पीछे जाए। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि—शाबर-विधि से उक्त मन्त्र का १००० जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में शिर-वेदना-ग्रस्त व्यक्ति को सामने बैठा-कर उसके मस्तक के ऊपर अपना हाथ फेरे। हाथ फेरते समय उक्त मन्त्र का ७ बार जप करे और ७ बार फूंके। शिर-दर्द, मस्तक - पीड़ा का शमन होगा।

७३. शिर-शूल-निवारक मन्त्र

निसु नीह रोई बन्द कर, मेघ गरजहि निसु। न दीपक हलु-घर, फुफु निबेर कूनि डमरु न बजै। निसुनहि कलह निन्न, पुट्ठ काच मई।

विधि—दीवाली की रात में २१ माला जप कर मन्त्र को सिद्ध करे। स्वच्छ आसन पर बैठकर—पवित्र स्थान में धूप - दीप कर जप करे। बाद में शिर - शूल से ग्रस्त व्यक्ति के मस्तक के ऊपर २१ बार मन्त्र का जप करते हुए उतनी ही बार फूंक देने से रोग की शान्ति हो जायगी— शिर-शूल दूर हो जायगा।

७४. आधा-शीशी का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ५, पृष्ठ ७२, मन्त्र २ देखें। अन्य भागों में भी ऐसे ही मन्त्र आए हैं, लेकिन कुछ-न-कुछ पाठ व विधि-भेद के साथ यहाँ कुछ और मन्त्र प्रस्तुत हैं।—प्रेषक)

(१) ॐ नमो। बन में ब्यानी बानरी, उछर वृक्ष पर जाय। कूदि-कूदि शाखान पै, काचा बन फल खाय। आधा तोड़े, आधा फोड़े, आधा देय गिराय। हुङ्कारत हनुमान जी, आधा शीशी जाय। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—शाबर की विधि से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में प्रयोग करे। दर्दी को सामने बिठाकर मन्त्र का स्मरण करते - करते धरती के ऊपर चाकू से सात रेखाएँ सीधी और उन पर सात रेखाएँ आड़ी खींचते हुए उन्हें काटता जाय। ऐसा तीन या सात बार करने से 'आधा-शीशी' की पीड़ा मिट जायगी।

(२) ॐ नमो आदेश गुरू को। काली चिड़ी चिग चिग करै, घोली आवै, वासै हरै। यदि हनुमन्त हांक मारै, मथ-वाई अरु आधा शीशी हरै। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—सिद्ध किए हुए मन्त्र से प्रयोग करे। २१ बार मन्त्र का जप करे और चाकू से चाके, तो दर्द नहीं रहेगा। अथवा मन्त्र जपते हुए सात सीधी रेखाओं को काटे, तो 'आधा-शीशी' मिट जाती है।

(३) ॐ नमो दुघटा तो बन में बसे, तिपटो बसे कवाय। शीश पकडि करि चलिए, आधा शीशी जाए। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।।

विधि—रविवार के दिन सूर्योदय के पहले एक गिलास में जल लेकर उस जल को २१ बार सिद्ध मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। बाद में मन्त्रोच्चार के साथ पीड़ा-ग्रस्त मस्तक को उक्त जल के छींटे मारे, तो 'आधा-शीशी' दूर होगी।

(४) ॐ नमो आधा शीशी। हूँ हुङ्कारी, पहर पचारो। मुख मूँद, पाटलै डरी। अमुका रे शीश रहै। मुख माहेश्वरी की आज्ञा फुरे। ॐ ठं ठं स्वाहा।

विधि—सिद्ध मन्त्र को २१ बार पढ़ते हुए मस्तक के ऊपर अँगुली फेरे, तो 'आधा-शीशी' दूर होगी।

विशेष—(१) पाठ-भेद—अमुकारे = अमुक का रे।

(२) 'आधा-शीशी' से पीड़ित व्यक्ति का नाम जोड़कर प्रयोग करे।

(५) ॐ अचल गुसाईं, वन खड़े। राय चोरन झंकेवा धन, कच्चे वन - फल खाए। हाँक मारी हनुमन्त ने, इस पण्डित की (पीड़ित की) आधा शीशी उतर जाए। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।।

विधि—उक्त मन्त्र से सात बार झाड़कर दर्दवाले स्थान को पकड़ने से 'आधा-शीशी' का रोग दूर होता है। झाड़ते हुए मस्तक को पकड़े रहे। यह क्रिया तीन से सात दिन तक आवश्यकतानुसार करे।

(६) बन में जाई बान्दरी, जो आधा फल खाए।
खड़े मुहम्मद हाँक दे, आधा शीशी जाए॥

विधि—शुक्ल पक्ष में पहले वृहस्पति को १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करने से सिद्ध हो जाता है। बाद में रोगी के मस्तक के ऊपर ३ बार मन्त्र पढ़कर फूँकने से—'आधा-शीशी' का दर्द दूर होता है।

(७) ॐ कामरू देश कामाक्षी देवी, तहाँ बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी के तीन पुत्री, एक रौले, एक पकौले, एक ताप तिजारी। इकतरा मथवा आधा शीशी टरै। उतरो तो उतारौ, चढ़ै तो मारौ। ना उतरे, तो गरुड़ मौर हङ्कारे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि—उक्त मन्त्र को दीपावली के पर्व में 'शाबर' की विधि से सिद्ध करे। मन्त्र का १००० जप कर सिद्ध करे। जप के पूर्व धूप, दीप, फूल, मिठाई और जल को यथा-स्थान रख ले। बाद में आवश्यकता होने पर ताम्बे के पात्र में स्वच्छ जल भरे। उसे २७ या १०८ बार मन्त्र-जप द्वारा अभिमन्त्रित करे। उस जल का अधिकांश भाग रोगी को पिला दे और शेष थोड़ा जल रोगी के दर्द-वाले स्थान में या स्थान के ऊपर लगाए। ऐसा ३ या ७ दिन करने से 'शिर - दर्द' या 'आधा-शीशी-दर्द' (आधा - शीशी) इत्यादि अच्छा हो जाता है और रोग मिट जाता है।

७५. अध-कपारी-नाशक मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ४०, क्रमाङ्क २ में प्रकाशित दो मन्त्र तथा भाग ६, पृष्ठ ४६, क्रम ४ व पृष्ठ ६०, क्रम २१ में प्रकाशित मन्त्र देखें। यहाँ इसी तरह का एक अन्य प्रयोग दिया जा रहा है।—प्रेषक)

(१) ॐ नमो वन में बसी बानरी, उछल पेड़ पर जाय। कूद-कूद डालन पर कच्चे फल खाय। आधी तोड़े-फोड़े, आधा शीशी जाय ॥

विधि—'शाबर' की विधि से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में निम्न प्रकार प्रयोग करे—

(१) रविवार या मङ्गलवार से प्रारम्भ कर ३ या ७ दिनों तक पीड़ित व्यक्ति को झाड़े। इससे रोग की शान्ति होगी।

(२) मन्त्र जपते हुए पृथ्वी के ऊपर चप्पू या चाकू से एक सीधी रेखा खींचे। उस रेखा के ऊपर आड़ी रेखाएँ खींचकर काटता जाय। सातवीं बार काटने के पहले चप्पू या चाकू को दर्दी के माथे पर फिरा कर काटे। प्रक्रिया करते समय मन्त्र का स्मरण अवश्य करे। ऐसा करने से 'अध - कपारी' दूर होगी। इस प्रकार ३ या ७ दिनों तक करना चाहिए।

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ५६, क्रमाङ्क १ की भाँति एक दूसरा प्रयोग निम्न-लिखित प्रकार है—

(२) शङ्कर - शङ्कर खोज जाई। शङ्कर बैठे जङ्गल जाई। भूत-वैताल-योगिनी नचाय। सब देवन की जय-जय मनाय। ब्रह्मा - विष्णु पूजे जाय। अध - कपारी पीड़ा-दर्द जाए ॥

विधि—दशहरे में उक्त मन्त्र की २१ माला जप लेने से मन्त्र सिद्ध हो जायगा। बाद में प्रयोग करे। यथा—ताम्बे के कलश में स्वच्छ जल रखकर उसे ७ बार अभिमन्त्रित करे। इस अभिमन्त्रित जल को दर्द-वाले स्थान के ऊपर बार-बार लगाए और हाथ से मसल दे या स्पर्श करे। जब थोड़ा जल शेष रहे, तब जल को लगाने का कार्य बन्द करे। शेष जल को उसी समय घर से बाहर निकालकर चौराहे पर डाल आए। ऐसा क्रम ३ से ७ दिनों तक करने से—'अध-कपारी' शान्त हो जाएगी।

७६. कर्ण-पीड़ा निवारण मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ४१, क्रमाङ्क ४; भाग २, पृष्ठ ३८; भाग ३, पृष्ठ ६३ देखें। नीचे इसी प्रकार के कुछ भिन्न ३ मन्त्र दिए जा रहे हैं। जिस प्रकार का दर्द हो, वैसे मन्त्र का प्रयोग करे।)

(क) कर्ण-मूल-पीड़ा-निवारण

वनाह गठि बनरी, तो डाँटे हनुमान। कण्टा बिलारी बाँधी, थनैली कर्ण-मूल सब जाय। रामचन्द्र का वचन—पानीपथ हो जाय।

विधि : मन्त्र को 'शाबर - विधि' से सिद्ध करे। आवश्यकता होने पर भस्म को अभिमन्त्रित कर पीड़ित व्यक्ति को झारे। कर्ण-मूल की पीड़ा दूर होगी। जब तक लाभ न हो, तब तक झारने की क्रिया को करता रहे।

(ख) कर्ण-पीड़ा-निवारण

(१) ॐ कनक प्रहार, धन्धर धार प्रवेश कर। डार-डार पास और झार-झार, मार-मार। हुङ्कार शब्द साँचा, पिण्ड काचा। ॐ क्री क्री।

विधि : 'शाबर'-मन्त्र की विधि से सिद्ध करे। बाद में साँप की बाँबी की मिट्टी लेकर उसे मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करे। फिर मन्त्र-स्मरण के साथ थोड़ी-थोड़ी मिट्टी से पीड़ित व्यक्ति को झाड़े। बाद में वही मिट्टी एकत्र कर उसमें थोड़ा जल मिला दे और उसे कान के आस-पास लगा दे (लेप कर दे)। ऐसा करने से कर्ण - पीड़ा शान्त होगी। ३ से ७ दिन तक यह क्रिया करने से पीड़ा समाप्त हो जाएगी।

विधि-विकल्प : यदि साँप की बाँबी की मिट्टी न मिल सके, तो कान की ओर मन्त्र जपते हुए फूंक मारता जाय, तो भी कर्ण-पीड़ा मिट जाएगी, लेकिन धीरे-धीरे मिटेगी क्योंकि मिट्टी का उपयोग नहीं किया है। कथित मिट्टी ही लेनी चाहिए।

(२) ॐ कनक-पर्वत पहाड़ धन्धुआर । धार घुत डार-डार, पात - पात, झार - झार । हुं हुङ्कार, ॐ क्लीं क्रीं स्वाहा ।

विधि : सिद्ध किए हुए मन्त्र का प्रयोग करे। सर्प की बाँबी की मिट्टी ले। उसमें थोड़ा जल मिलाए और मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित कर कान के ऊपर—उसके आस - पास उसे लगा दे। पीड़ा शान्त होगी।

७७. कण्ठ-वेल या कण्ट-बेल या कण्ठ-माला-निवारण मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ५६, क्रमाङ्क ४ देखें। निम्न मन्त्र (१) में कुछ पाठ-भेद और विधि - भेद हैं, अतः यहाँ दिया जा रहा है। क्रमाङ्क (२) और (३) सम्भवतः पहली बार छप रहा है, उस पर भी ध्यान जाना चाहिए।

(१) ॐ नमो कण्ठ - बेल, तू द्रुम द्रुमाली । सिर पर जकड़ो, वज्र की ताली । गोरख राय गाजता आया। बढती बेलि को तुरत घटाया । जो कुछ बची, ताही मुरझाया । घटि गई बेल, बढ़ै नहिं पावै । बैठि तहाँ, उठन नहिं पावै । कुटै पीड़ा करै, तो गुरू गोरखनाथ की दुहाई फिरै ।

विधि : सर्व-प्रथम 'शाबर-विधि' से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में जब आवश्यकता हो, तब ७ दिन मोर - पङ्ख से झाड़े। दर्द शान्त होगा। २१ बार उक्त मन्त्र का स्मरण कर झाड़ना चाहिए।

(२) ॐ कण्ठ-बेल तु द्रम - दुनाली । सिर पर जडी, बज्र की ताली । गोरखराय जागता आया । बढ़ती बेल कूं तुरत घटाया । घटी गई, बढ़ै ना रोग । पाचै कुटै पीड़ा करै, तो गुरू गोरखनाथ की दुहाई-फिरै ।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को 'शाबर-विधि' से सिद्ध करे। बाद में प्रयोग करे। उक्त मन्त्र का २१ बार उच्चारण कर विभूतियों से झारे। ऐसा २१ दिन तक करे। दर्द दूर होगा।

(३) ॐ ह्रीं नमो नारसिंह । हार गुरू आदेश का । घाई कराई का चक्र चलता । दहन करता बज्र छन्दन । भवन ॐ क्षः क्षः (छः छः) । शब्द साँचा, पिण्ड काँचा । स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि : पहले पर्व-काल में उक्त मन्त्र का १० माला 'जप' कर सिद्ध करे । फिर सोमवार को जब 'पुष्य'-नक्षत्र हो, तब बन में जाए । उत्तराभिमुख होकर एक हाथ से कुश उखाड़ लाए । ११ बार उक्त मन्त्र से कुशा को अभिमन्त्रित कर कण्ठ - माला के स्थान पर झाड़े । बाद में अभिमन्त्रित कुशा को पीस कर दर्द के स्थान पर लगा दे । लाभ होगा ।

७८. कखलाई-निवारक मन्त्र

('शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ३, पृष्ठ ४८, मन्त्र ५ विधि-सहित उत्तम रूप में प्रकाशित हुआ है । धन्यवाद । निम्न मन्त्र कदाचित् उसी का लघु स्वरूप है ।—लेखक)

ॐ नमो कखलाई भरी तलाई । जहँ बैठे हनुमन्ता आई । पचै न फुटै, चले न नाल । रक्षा करे, गुरू गोरख बाल ।

विधि : सिद्ध करने के बाद मन्त्र का २१ बार उच्चारण करते हुए नीम की टहनी से रोगी को झारे । 'कखलाई' मिट जाएगी ।

अथवा श्वेत मिट्टी ले । उसमें 'जल' और थोड़ा 'नमक' मिलाए । तब उसे गरम करे । गुनगुना रहे, तब 'कखलाई' पर उसका लेप करे । एक ही रात में भीना-सूखा हो, ऐसे क्रम से लगातार करे । प्रातः तक ठीक हो जायगा । मिट्टी ठण्डी हो जाय, तो फिर गरम कर ले, लेकिन कम ही गरम करे, अन्यथा सहन नहीं होगा । दिन भर लगाए, तो रात में अच्छा हो जायगा । सिद्ध प्रयोग है । बिना मन्त्र भी कर सकते हैं, लेकिन यदि यह आशङ्का हो कि दर्द बारम्बार होता है, तो 'मन्त्र' के साथ यह क्रिया करे । ऐसा करने से दर्द पुनः नहीं होगा ।

७९. कमर-पीडा-निवारक मन्त्र

(१) चलता आवे उछता जाय, भस्म करता उह-उह जाए। सिद्ध गुरू की आन। मन्त्र साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को 'शाबर-विधि' से सिद्ध करे। बाद में शुक्ल पक्ष में किसी कुमारी कन्या के हाथ से काते हुए सूत के १०१ धागे ले। इन धागों को कमर की नाप से थोड़ा बड़ा रखे। धागों को ११ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे। धागों के ऊपर फूंक भी लगाए। इन धागों को कमर-दर्दवाले रोगी को बांधे। कमर - पीड़ा दूर होगी।

(२) चलता आवे, उछलता जाए। भस्म करता रह-रह जाय। सिद्ध गुरू की आन। मन्त्र साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र का २१ दिन तक नित्य १ माला 'जप' करने से सिद्धि होती है। 'जप' के पहले धूप-दीप कर नैवेद्य चढ़ाए। बाद में 'जप' करे। 'जप' रात्रि में करे। आवश्यकता पड़ने पर कमर के माप से थोड़ा बड़ा काला धागा ले। काले धागे को ११ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ११ गाँठ दे। मन्त्र-स्मरण कर फूंके भी। धागे को रोगी की कमर में बाँधने को दे। इससे कमर-पीड़ा दूर होगी।

विशेष : (१) नित्य १००० 'जप' करे। २१ दिन तक १००० 'जप' करने से मन्त्र की प्रबल-सिद्धि होती है।

(२) रोगी यदि स्वयं 'जप' करे, तो अच्छे परिणाम शीघ्र दिखाई देंगे। जब तक आराम न हो, तब तक 'जप' करे। किसी प्रकार की हानि नहीं होगी।

८०. पीलिया या सुखड़ा रोग निवारण मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ४२ व ५६; भाग २, पृष्ठ ५२ व ७६; भाग ७, पृष्ठ ४२ देखें। कुछ पाठ-भेद एवं विधि - भेद के साथ यहाँ इसी प्रकार के चार मन्त्र दिए जा रहे हैं।)

(१) ॐ नमो वीर वैताल असुराल नाहरसिंह देव जी। खादी (स्वादी) तुखादी (तुषादि-तुपादि) सुभाल तुभाल। पीलिया को काढ़े, झारे पीलिया। रहे न नेक निशान, जो रह जाय, तो हनुमान की आन। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : (१) पहले 'शाबर -विधि' से सिद्ध करे। फिर एक 'कास्य-पात्र' में सरसों का तेल रखकर उसको यथा-मति अभिमन्त्रित करे। इस अभिमन्त्रित तेल को रोगी के मस्तक के ऊपर या कपाल के ऊपर मले। ऐसा १७ दिनों तक करे। पीलिया का कष्ट कम हो जाएगा। रोगी धीरे-धीरे स्वस्थ हो जाएगा।

(२) किसी बच्चे को यदि सूखा रोग हुआ है ऐसा लगे, तो साधक मकोय के पत्ते अपने मुँह में चबाकर, रोगी - बच्चे की पीठ के ऊपर पहनाए हुए वस्त्र को हटाकर पीठ के ऊपर थूक दे और अपने हाथ से मसल दे। थोड़ी देर के बाद रोगी बच्चे की पीठ में भूरे रङ्ग के छोटे-छोटे कीड़े देखने में आते हैं, उन्हें निकाल दे। यह प्रयोग रवि और मङ्गल को करे।

(२) ॐ नमो वीर वैताल असराल नारसिंह देव। खादी तुषादी सुभाल तुभाल पीलिया। भेद तो काटै झारै, पीलिया रहे न नेक निशान। जो रह जाय, तो यति हनु-मन्त की आन। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

(३) ॐ नमो वीर वैताल असराल नाहरसिंह। देव-पादा तुषादी तु पीलिया भेद नास्तु-नास्तु। पीलिया नास्तु।

पाठ-भेद : 'सुभाल' के स्थान पर 'सुलभ' पाठ-भेद है।

विधि : मन्त्र (२) व (३) की विधि एक ही है। यथा—एक कटोरे में सरसों का तेल लेकर रोगी के मस्तक के ऊपर रखे। उक्त मन्त्र पढ़ते हुए दूब से तेल को चलाए मन्त्र पढ़ता जाए। तेल पीला

हो जाने पर कटोरे को मस्तक से नीचे उतार ले। ऐसा दो-तीन दिन करे, रोग दूर हो जाएगा।

(४) ॐ नमो आदेश गुरू को। रामचन्द्र सिर साधा, लक्ष्मण साधा बाण। काला पीला राता, नीला थोथा पीला-पीला-पीला चारों झड़। जो रामचन्द्र जी थाँ के नाम। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले मन्त्र को 'शाबर-विधि' से सिद्ध करे। बाद में पीतल की कटोरी में पानी भरकर सुई से ७ दिन तक झारे। प्रतिदिन २१ बार अथवा २७ बार मन्त्र का पाठ करे।

८१. शिशु-रोग-निवारक मन्त्र

(क) पेट की बीमारी के लिए

ॐ नमो सरस्वती। सक निकली, चोली चली। अग नमो परा। चली मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। चलो ईश्वरी वाचा।

विधि : कुछ बच्चों के पेट में प्रायः पीड़ा होती है। ऐसे बच्चों के लिए सिद्ध किए हुए उक्त मन्त्र के द्वारा ७ बार भस्म अभिमन्त्रित करे और उस भस्म को बच्चे के पेट के ऊपर मसल दे। ऐसा तीन या सात दिन तक करे। लाभ होगा।

(ख) ज्वर, दस्त और खाँसी के लिए

ऐं ह्रीं क्लीं बाल-ग्रहादि। भूतानां बालानां शान्ति-कारकं। सङ्घात-भेदे च नृणां, मैत्री - करणमुत्तमम्। क्लीं ह्रीं ऐं।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में मन्त्र पढ़ते हुए बच्चे के पेट के ऊपर अपना हाथ फिराए अथवा कुश से जल छिड़के। इससे सभी प्रकार के ज्वर भी शान्त होते हैं। दस्त अथवा खाँसी की बीमारी भी दूर होती है।

८२. नकसीर रोकने का मन्त्र

(१) ॐ नमो आदेश गुरू को। च्यार आटी, च्यार घाटि। निख-निख है, चौरासी बाटी। बहै नीर, भाजै चीर नाथ। पैर थाँभि हौ श्री नरसिंह वीर। न थांभे, तो अपनी माता का दूध पिया हराम करैं। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र पढ़ते हुए रूई के फाहे को नाक के अन्दर ७ बार चलाए। नाक से बहनेवाला खून रुक जाता है।

(२) ॐ नमो आदेश गुरु को। सार-सार, महा-सार। बाँधूँ सात बार, अणी बाँधूँ तीन बार। लोही की सार बाँधूँ। तीर बाँधे हनुमन्त बीर। पाके न फूटे, तुरत सूखे। शब्द साँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र को विभूति के ऊपर ७ बार पढ़े। उस विभूति से झाड़ने पर नकसीर रुक जाती है।

(३) ॐ नमो आदेश गुरू को। सार-सार महा-सार बाँधूँ। सात बार आठी बाँधूँ, तीन बार लोहे की सार बांधूँ। सीर बाँधे हनुमन्त बीर। पाके न फूटे, तुरत सूखे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : क्रमाङ्क (२) की तरह। ध्यान रहे कि मन्त्रों को 'शाबर - विधि' से पहले सिद्ध कर लेना चाहिए, तब प्रयोग करना चाहिए। मन्त्र के प्रभाव को प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक 'जप' उपयोगी होता है।

८३. दाद झारने का मन्त्र

(१) हाथ वेगे चलाई, आदि-नाथ पवन-पूत हनुमन्त। कर मोरकत—मेरु चाल, मन्दिर चाल, नव - ग्रह चाल,

दोष चाल, दिनाई चाल, डोरी चाल, इन्द्रहि चाल। चाल-चाल हनुमन्त बिना, सह-काल उठि विषि तरु-वर चाल। हम हनुमन्ते मुगरे, लिङ्गडा परोरे वर्ध छले। तरुयरी घानपरि हि यष अष्टोत्तर - शत व्याधि लावरे विशालाव अहरो विष आह।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। फिर ताँबे के कलश में जल भर कर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर उसको अभिमन्त्रित करे। तब अभिमन्त्रित जल को दादवाले व्यक्ति को पीने को दे। जब तक लाभ न हो, तब तक करे।

(२) ॐ गुरुभ्यो नमः। देव देव-पुरी, मेरु-नाथ, दल-क्षना भरे विशाहतो राजा वैर धिन आज्ञा। राजा वासुकी के आन, हाथ वेगे चलाव।

(३) विष के यापरि विष के यानि। विषै करिय भादि जानि। एक मजाई दाहु करिअ अयुका अन्तेकस कण्डु दादु दिनाई क छेद। करि सिद्धि, गुरु की पाव शरण।

विधि : क्रमाङ्क (२) और (३) की विधि अज्ञात है। यदि किसी को ज्ञात हो, तो सूचित करेंगे। तब तक क्रमाङ्क १ की विधि का अनुसरण किया जा सकता है।

पाठ-भेद : 'विषै'—'निषै'। 'भादि'—'सादि'। 'मजाई'—'मजाह'। 'अयुका'—'अयुया'। 'दिनाई'—'दिनाह'।

८४. ममरषी झारने का मन्त्र

राजा अजैपाल, सागर खतवारा। बट बाँधा, घाट उतर। ममरषी पानी पिड, सात-राती मोही। पीपर-पात गुङ्गी बारा, डोमिनी चण्डालनी ! तू है नीकी ममरषी। तिल एक रथ ठाठि, कण्ठ-झारी ममरषी क्रोध कर।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। फिर सिद्ध किए हुए मन्त्र का स-स्वर जप करते हुए फूंके। ऐसा २१ बार करे, लाभ होगा।

८५. पेट के दर्द को मिटाने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। श्याम गुरु-पर्वत, श्याम गुरु-पर्वत में बड, बड में कूवा, कूवा में तीन सूवा, कौन-कौन सूवा—वाय सूवा, जहर सूवा, पीड सूवा। भाज भजवे जहर, आइगा जती हनुमन्त। मार करेगा भस्मन्त। फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

विधि : पहले 'शाबर-विधि' से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। फिर एक पात्र में स्वच्छ जल ले। जल को उक्त मन्त्र पढ़कर ७ बार अभिमन्त्रित करे। इस अभिमन्त्रित जल को रोगी को ७ दिन तक पिलाए। पेट का दर्द दूर हो जाएगा!

८६. घाव की पीड़ा मिटाने का मन्त्र

सार-सार विजैं, सार बाँधूँ सात बार। फूटे अन न ऊपजे घाव। सीर राखे श्रीगोरखनाथ।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में उक्त मन्त्र को पढ़कर घाव पर ७ बार फूंके।

८७. अदीठ का मन्त्र

ॐ नमो शिर-कटा, नख-कटा, विष-कटा, अस्थि-मेद-मज्जा-गत, फोड़ा-फुन्सी, अदीठ दुम्बल दुखानो रत्यावरोग रींघण वाय जाय। चौंसठ योगिनी, बावन वीर, छप्पन भैरौ रक्षा कीजो आय। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि : पहले 'शाबर-विधि' से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में रोगी को सामने बिठाए। चुटकी में विभूति ले। ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर विभूति को अभिमन्त्रित करे। फिर विभूति को फोड़े के चारों तरफ लगा देने से रोग की शान्ति होती है।

८८. 'वाला' अथवा 'बाला' का मन्त्र

ॐ नमो वारा रे, तू सदा बलवन्ता। बाला ने खोदे हनुमन्ता। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि : पहले मन्त्र सिद्ध करे। फिर साँभर नमक के ढेले से जहाँ 'बाला' हो, वहाँ ३ दिन तक झारे। अथवा साँभर नमक की कङ्कड़ी को उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर अभिमन्त्रित करे। बाद में जहाँ 'बाला' हो, वहाँ उक्त मन्त्र २१ बार जप कर तीन दिन तक झाड़े। पीड़ा समाप्त हो जाएगी।

८९. निनाई का मन्त्र

ॐ नमो तडम उतड भड तेल करे, दीजे बाती तैल बरै। गलत-सलत तू बाई रोग निनाई रहै, तो यति हनुमन्त की दुहाई फिरै। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि : सिद्ध किए हुए उक्त मन्त्र से विभूति से झाड़े, तो निनाई नष्ट होती है।

९०. रतौंधी झारने का मन्त्र

भाट - भाटिनी निसरी चली, कहाँ जाइब—'जाइब जावेऊँ समुद्र पर'—भाटिन कहा। बिआ बेउँ—उसकी छाली बिआ बेउँ, उपस माछी कर मुडा अण्डा धोसो हिल - तारा सोहिल तारा। राजा अजेपाल ऊतरत रहे, राजा अजेपाल कर कन्दार पानी भरत रहे। उन्हें देखे पावा बालाउ, गोडिया मेला उजाड तैकै मैं अधो-मुखी ईश्वर महा-देव के (की) दुहाई। यह मेरी धरी उतर जाय।

विधि : सिद्ध किए हुए उक्त मन्त्र से रतौंधी को झारे। मन्त्र पढ़कर फूंके, तो लाभ होगा।

पाठ-भेद : 'भाटिनी'—'भटिन'। 'घोंसो हिल तारा'—'घोसो हि उतारा'।

६१. थनैली झारने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ५, पृष्ठ ४५ देखें। साथ-साथ पृष्ठ ५० भी देखें। भाग ७, पृष्ठ ४१ क्रमाङ्क १२ भी देखें। यहाँ उसी प्रकार का एक मन्त्र दिया जा रहा है।)

कम्प बिलारी, बध्ध थनेला। पाँच बान, मेहि भरा दैल। कम्प बिलारी, बध थनेला। डावा पलटी, जाहु घर। अपने राजा मनेरी की दुहाई। गुरु की दोहाई है।

विधि : अज्ञात है। जब तक विधि उपलब्ध नहीं है, तब तक 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ५ के प्रयोगों की विधि अपनाई जा सकती है।

६२. रजो-दोष-निवारक मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ ७५, क्रमाङ्क ७ को देखें। वहाँ प्रकाशित दोनों 'प्रयोग' श्रेष्ठ हैं। फिर निम्न-लिखित दो 'प्रयोगों' को देखें। पहले 'प्रयोग' में पाठ-भेद है और दूसरा प्रयोग नवीन है।)

(१) ॐ नमो आदेश दुर्गा माई। बडी - बडी अदरख, पतली रेश। बडे विष के जल फाँस दे शेष। गुरु का वचन न जाय खाली, पिया पञ्च-मुण्ड के वाम ठेली। विष-हरी राई की दुहाई फिरे।

विधि : पर्व-काल में उक्त मन्त्र की १० माला जप करे। फिर 'प्रयोग' करे। रजो - धर्म प्रारम्भ होने के एक सप्ताह पूर्व प्रयोग आरम्भ करे। अदरक के ३ या ७ टुकड़ों को उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित करे। अदरक के टुकड़ों को रोगी स्त्री को खाने के लिए दे। सभी प्रकार की पीड़ा नष्ट होगी। यदि रजो - धर्म प्रारम्भ हो गया हो, तो अदरक नहीं खिलाना चाहिए। इस तरह से ४-५ मास अदरक को अभिमन्त्रित कर खिलाने से रजो - दोष के समय होनेवाली पीड़ा नष्ट होती है।

(२) ॐ रिं जय चामुण्डा! घूम राम रमा तरु-वर चढि जाय। यह देखत अमुक के सब रोग पराय। ॐ शिलं हुं फट् स्वाहा, अमुक को रजो-दोष नाशय।

विधि : पहले पूर्वोक्त विधि से मन्त्र सिद्ध करे। बाद में एक केले को ३ या ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे, फिर केला रोगी स्त्री को खिलाए या खाने को दे। ऐसा २१ दिन तक करे। रजो-धर्म सम्बन्धी सभी दोष दूर हो जाते हैं। 'गर्भ-धारण' करने के लिए भी उक्त प्रयोग उपयोगी है। 'अमुक' के स्थान पर स्त्री का नाम लेकर केले को अभिमन्त्रित करना चाहिए।

६३. सिया का मन्त्र

ॐ नमो कामरु-देस, कमस्या देवी—जहाँ बसै इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी के तीन पुत्री। एक तोड़े, एक पिछाडे, एक तोते-जरी तोड़े।

विधि : रोगी को अपने सम्मुख खड़ा करे। रोगी के शरीर में जिस स्थान पर ठण्ड लगे, वहाँ हाथ से स्पर्श कर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंके। सिया-रोग दूर हो जाएगा।

६४. बवासीर मिटाने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ३१ और ६० देखें। भाग २, पृष्ठ ३८ देखें। यहाँ उसी क्रम में कुछ और प्रयोग सामान्य पाठ - भेद एवं विधि-भेद सहित दिए जा रहे हैं।)

(१) ॐ नमो आदेश कामरू - कामाक्षा देवी को। भीतर-बाहर में बोलूँ, सून देकर मन तूँ। काहे जलावत केहि कारण, रसहित पर तू डगर में विख्यात। रहे ना ऊपर अमुक के गत, नरसिंह देव तुमसे बोले वाणी। आज्ञा हाड़ी दासी की---फुरो मन्त्र, चण्डी उवाच।

विधि : पहले 'शाबर-विधि' से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। फिर बवासीर के रोगी को प्रातः-सायं ७-७ बार उक्त मन्त्र से झाड़े। थोड़े दिनों में लाभ होगा।

(२) ईसा-ईसा-ईसा, काच कपूर चोर के सीसा। यह अच्छर जाने नहीं कोई, खूनी - बादी एक न होई। दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।

विधि : पहले से सिद्ध किए हुए मन्त्र से काम ले। जल को उक्त मन्त्र से ३ बार अभिमन्त्रित करके उससे शौच करे। फिर हाथ को पानी से धोकर, मस्से को हाथ से पकड़ कर अभिमन्त्रित जल को मस्से पर लगाए। ऐसा बार - बार करे। थोड़े ही दिनों में खूनी-बादी—दोनों तरह की मस्से की बीमारी ठीक हो जाएगी।

(३) खुरासान की टेनी-शाह, खूनी-बादी दोनों जाय। उमती-उमती चल-चल स्वाहा।

विधि : उपर्युक्त मन्त्र तीन बार पढ़कर शौच करे। बाद में एक लाल सूत में मन्त्र का स्मरण कर ३ गाँठें लगाए। सूत को २१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पाँव के अँगूठे में बाँधे। ऐसा करने से आन्तरिक या बाह्य, खूनी या बादी दोनों प्रकार की बवासीर मिट जायगी।

६५. मृगी का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ २३, क्रमाङ्क २२ देखिए। वही मन्त्र पाठ-भेद सहित यहाँ दिया जा रहा है।)

(१) हाल हल सरगत मण्डिका पुडीया। श्रीराम फूँक मृगी वायु सूखे। ॐ ठः ठः स्वाहा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में जब किसी को मृगी आए अथवा मृगी का दौरा पड़े, तब उक्त मन्त्र को एक कागज के ऊपर लिखकर उसके गले में बाँध दे। इससे लाभ हो जाएगा। उसके बाद उत्तम योग में, भोज-पत्र के ऊपर, अष्ट-गन्ध की स्याही व अनार की कलम से उक्त मन्त्र लिखकर उसे ताबोज में रख-कर रोगी के गले में रक्त-वर्ण-धागे में पिरोकर धारण कराए। रोगी धीरे-धीरे ठीक हो जाएगा। प्रयोग के साथ - साथ निम्न टोटकों का उपयोग भी करे। यथा—

(१) जायफल की माला गूँथ कर रोगी के गले में पहनाए।

(२) तीन भाग हल्दी चूर्ण, एक भाग सेंधा नमक का मिश्रण कर एक शीशे की बोतल में भर कर रखे। प्रातः - काल १ छोटा चम्मच रोगी को खिलाए। इससे मृगी के दौरों में कमी होगी। धीरे-धीरे रोग मिट जाएगा।

विशेष : इस रोग में कुछ समय के बाद ही लाभ मिलता है। प्रयत्न करके रोगी को चिन्ता - मुक्त रखना चाहिए। यदि रोगी स्त्री हो, तो उसके रजो-दर्शन की बीमारी को दूर कराना चाहिए। यदि रोगी पुरुष हो, तो पुरुष को ऊर्ध्व-रेतस् न बनने देना चाहिए। कुछ समय के बाद रोग मिट जाता है। यदि बड़ी उम्र तक रोग न मिटे, तो यह समझे कि रोग असाध्य है।

(२) **ॐ नमो श्रीराम ! उठि-उठि धनुष चढ़ाव। मृग मार-मार, ॐ ठः ठः स्वाहा।**

विधि : उक्त मन्त्र द्वारा तीर से २१ बार झाड़ने से मृगी का रोगी ठीक हो जाता है।

९६. मद्य वाय का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को। बाल में कपाल, कपाल में भेजी। भेजी में कीडा, कीडा न करे पीडा। सोना का सलाबा, रूपा का हथोडा। ईश्वर गोडे, गोर्या तोडे। इनको शाप श्रीमहा-देव तोडे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र का 'शाबर-विधि' से १ हजार बार 'जप' करके सिद्ध करे। बाद में विभूति से ७ बार अभिमन्त्रित करके झाड़े। रोग शान्त होगा।

९७. रोधन वाय का मन्त्र

ॐ नमो कामरू-देश कामाक्षी देवी, जहाँ बसै इस्मायल योगी। इस्मायल योगी को तीन पुत्री। एक तोड, एक पिछौडे,

एक बारी, धनि बाय तोडे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में मङ्गल या शनिवार को झाड़े। रोग-शान्ति होगी।

९८. हूक झारने का मन्त्र

(१) ॐ सुमेरु पर्वत पर लोना चमारी। सोने की राँची, सोने की सुतारी। हूक चक बाँह बिलारी, धरणी नाली काटि, फूटी समुद्र खारी बहावौ। लोना चमारी क दुहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।

विधि : पहले से सिद्ध किए हुए उक्त मन्त्र से २१ बार झाड़े।

(२) ॐ नमो सार की छुरी, धारका बान हुक न चले रे। मुहम्मदा ज्वान की आन। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि : पहले मन्त्र को २१ बार पढ़कर पृथ्वी के ऊपर छुरी से लकीर खींचे। हूक बन्द हो जाएगी।

पाठ-भेद : 'आन' के स्थान पर 'शान' पाठ भी है।

९९. सब प्रकार के जहर को उतारने का मन्त्र

गङ्गा गोरी, दोनों रानी। टाकण मारी, करो विष पानी। गङ्गा बाँटि, गौरा खाय। अठारा मार, विष निर्विष हो जाय। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि : पहले ग्रहण या पर्व-काल में मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में रविवार के दिन ७ बार उक्त मन्त्र को पढ़कर फूंके।

१००. सर्प का विष उतारने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ४१, भाग २, पृष्ठ ६३, भाग ५, पृष्ठ २५, भाग ६, पृष्ठ १७ देखें। यहाँ एक दूसरा प्रयोग दिया जा रहा है।)

(१) ॐ नमो सर्पा रे! तू थूल मथुला। मुख तेरा बना कमल का फूला—रे! सर्प्पा बांधूँ तेरी दादी बूवा, जिसने तोको गोद खिलायो। सर्पा रे सर्पा बांधूँ, तेरा रतन कटोरा। जा मैं तोकूँ दुध पिलाय। सर्पा बीज, कोलनी बीज। पान मेरा कीला करे जो घाव, तेरी दाड़ भस्म हो जाय। गुरू गोरखनाथ भी जाय जलाय। ॐ नमो आदेश गुरू को। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : शिव-रात्रि में उक्त मन्त्र का 'जप' प्रारम्भ करे। दूसरे दिन सूर्यास्त तक एक ही आसन में बिना गिनती के जितना जप सके, जपे। यदि एक आसन से प्रयोग करने में असमर्थ हो, तो यह साधना न करे। ऊपर कथित समय में मन्त्र सिद्धि होगी। बाद में ३ बार उक्त मन्त्र पढ़कर जिस किसी को सर्प ने काटा हो, उसे सर्प द्वारा काटे हुए स्थान पर बाहर से झाड़े। सर्प का विष उतर जाएगा और व्यक्ति ठीक हो जाएगा।

(२) ॐ नमो सर्प्पा रे, तू थल मथल। मुख बना तेरा कमल का फूल। सर्प्पा बांधू, तेरी भूपा दादो, जिन तुहि गोद खिलाया। सर्प्पा बांध तेरा रतन कटोरा, जामें तोकूँ दूध पिलाया। बीज किलनी, बीज पाग। मेरा कीला करे जु घाव, तो तेरा डाढ़ भस्म हो जाय। गुरू गोरख भी जाय लजाय। ॐ नमो आदेश गुरू को। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि : 'शिव-रात्रि' से प्रयोगारम्भ कर, एक वर्ष तक प्रति-दिन सवा प्रहर तक उक्त मन्त्र का जप करे, तो मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में, जब आवश्यकता हो, तब इस मन्त्र का उपयोग करे। यथा—'आरने कण्डों' (जङ्गली उपलों) की राख पर ७ बार मन्त्र पढ़कर 'सर्प' के ऊपर डालने से उसका कीलन हो जाएगा अथवा दूसरे शब्दों में उसका मुख बन्द हो जाता है। इस प्रकार उसकी डँसने (काटने) की शक्ति नष्ट होगी।

१०१. सर्प खोलने का मन्त्र

(१) ॐ नमो कीलन भईक, कीलनी वासा भया कुवास। जाहू सर्प घर अपने, गै फिर चारों मास। शब्द सांचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

(२) पहर भगाए कापडे, कर मर्दाना भेष। बँधी बँधी-पन छुटाई, फिरि आचारो देश। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच।

विधि : किसी भी एक मन्त्र को 'शाबर - विधि' से सिद्ध कर ले। आवश्यकता होने पर मन्त्र को पढ़कर कङ्कड़ से मारे, तो कीला हुआ साँप छूट जाता है।

१०२. सर्प को भगाने का मन्त्र

ॐ प्लः सर्प - कुलाय स्वाहा। अशेष-कुल-सर्प-कुलाय स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित मृत्तिका को घर में बिखेर दे, तो घर से सब प्रकार के सर्प भाग जाते हैं। मन्त्र को पहले सिद्ध कर ले।

१०३. सर्प-विष को झारने का मन्त्र

उतर दिशि कारी बादरी, तेहि मध्य ठाढ़ काल-पुरुष। एक हाथ चक्र, एक हाथ गदा। चक्र मारो शत - खण्ड जाई, गदा मारे सातों पाताल जाई। ॐ हर-हर निर्विष शिवाज्ञा।

विधि : ग्रहण या पर्व-काल में मन्त्र को सिद्ध कर ले। सिद्ध मन्त्र को पढ़-पढ़ कर फूंकने या झारने से विष नष्ट हो जाता है। सर्प-विष उतारने के लिए झाड़-फूंक का यह उत्तम मन्त्र है।

१०४. बिच्छू काटे का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ६२, क्रमाङ्क ५; भाग २, पृष्ठ ३९, क्रमाङ्क २०; भाग ३, पृष्ठ १८, क्रमाङ्क ११, पृष्ठ ५८, क्रमाङ्क

२०; भाग ४, पृष्ठ ४३, क्रमाङ्क ७, पृष्ठ ५६, क्रमाङ्क २२; भाग ६, पृष्ठ २५-२६ देखें। वैसा ही एक मन्त्र यहाँ प्रस्तुत है।)

ऊँचा खेड़ा, दहा - कारक केरा, जहां बसे निर्गुण का चेला। लाल बिच्छू, काला बिच्छू, पीला, मटियाला, धोला, पहाड़ी हरी बिच्छू—घरी चूप। सोने की माला, ईश्वर मिले। गोरा नहाय, मेरा बन्ध निरबस हो जाय। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : ग्रहण के समय उक्त मन्त्र कम-से-कम २१ माला जप करे, तो मन्त्र सिद्ध होता है। अधिक माला हो सके, तो और अधिक प्रभाव होगा। मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद भी जब - जब ग्रहण पड़े, तब-तब पुनः जप कर ले।

बिच्छू-काटे के काटने के स्थान के ऊपर के भाग में 'मौली' को २१ बार अभिमन्त्रित कर मन्त्र का स्मरण करते हुए 'मौली' की गाँठ कस कर लगा दे। 'मौली' के अभाव में 'भस्म' को अभिमन्त्रित करके 'काट' के ऊपर अच्छी तरह से लगा दे। 'काट' की पीड़ा समाप्त होगी और विष उतर जाएगा।

१०५. बिच्छू झाड़ने के मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ६२, क्रमाङ्क ५; भाग ४, पृष्ठ ३६ क्रमाङ्क २०; भाग ३, पृष्ठ ५८, क्रमाङ्क २०; भाग ४, पृष्ठ ४३, क्रमाङ्क ७ देखें। इसी प्रकार के अन्य वृश्चिक-विष-निवारक मन्त्र कुछ पाठ-भेद व विधि-भेद सहित यहाँ प्रस्तुत हैं।)

(१) ॐ नमो सत्य नाम, आदेश गुरु को। वश्चिक-दंश पीड़ा हरो, जहर उतारो। न उतारो, तो गुरु गोरखनाथ की आन। दुहाई कालो कङ्कालनी की। दंश - पीडा बन्ध-बन्ध। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में जब दंश-युक्त व्यक्ति आए, तब २१ बार उक्त मन्त्र 'जप' कर झाड़े। दंश - पीड़ा समाप्त होगी और जहर भी उतर जाएगा।

(२) ॐ सुमेर पर्वत, नोना चमारी। सोने राई, सोन के सुनारी। हुक बुक, बान विआरी। धारिणी नला, कारी-कारी। समुद्र पार बहायो, दोहाई नोना चमारी की। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

(३) ॐ नमो,गुरह गाय,-परवत पर जाय। हरी दूब खाती फिरे, ताल-तलैया,पानी पिए। गुरह गाय ने गोबर किया, जिसमें उपजे बिच्छू सात। काले, पीले, भूरे (धोले), लाल, रङ्ग-बिरङ्गे और हराल। उतर रे उतर जहर— बिच्छू का जाया, नहिं (तो) गरुड जी उड़ के आया (नहिं गरुड़ उड़कर आया)। सत्य नाम, आदेश गुरु को। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : (१) पहले मन्त्र सिद्ध करे। फिर उक्त मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर दंश - युक्त व्यक्ति को पिलाए। विष का प्रभाव नष्ट होगा।

(२) दीपावली की रात में उक्त मन्त्र की १० माला 'जप' करे। इस प्रकार १००० 'जप' करने से मन्त्र-सिद्धि होगी। बाद में दंश-युक्त व्यक्ति को ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पिलाए, तो विष या जहर उतर जाएगा।

१०६. बिच्छू झारने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ३६, क्रमाङ्क २०; भाग ३, पृष्ठ १४, क्रमाङ्क १०; भाग ४, पृष्ठ ४३, क्रमाङ्क ७; भाग ५, पृष्ठ २३, क्रमाङ्क १ और भाग ६, पृष्ठ २५, क्रमाङ्क ७ देखें। यहां कुछ अन्य अप्रकाशित मन्त्र दिए जा रहे हैं।)

(१) सुरहि कारी गाय, गाय को चमरी पूछी। तेकरे गोबर, बिछा बिअतीइ बिछी। तोर के जाती, गौरा वर्ण अठारह जाती। छः कारी, छः पीअरी, छः भूमा-धारी, छः

रत्न-पवारी, छः क्षः। कुँटुँ कुँटुँ छारि उतारी बिच्छी। हाड-हाड, पोर-पोर, कस मार। लील कण्ठ गर मोर, महा-देव की दोहाई। गौरा-पार्वती की दुहाई। अनी - तबे हरि शण्डार, मन छाई उतरहि बीछी। हनुमन्त आज्ञा, दुहाई हनुमन्त की।

(२) पर्वत ऊपर सुरहि गाई, तेकरे गोबरे बिछी बिआई। छः कारी, छः गोरी। छः का जोता उतारि कै, बिछा बिछिठा। वहि आ आठ-गाठि, नव पारे बीछी करे-- अजोइ बलि चलु चलाई कर वाइ। ईश्वर महा-देव की दुहाई। जहाँ गुरु के पांव सरके, तहँहि गुरु के कुश कजुरी। तर्हाहि विष्णु पुरी निर्मा जाइके। दुहाई महा-देव गुरु के। ठार्वाहि ठाव, बीछी पार्वती।

(३) बीछी - बीछी, तोर के जाति ? छः कारी, छः पीयरी, छः परवारी। बीछी पपाना पस स्वपाउ, तोरि विषि तइमे ना हिठाउ। ऊपर जा तिगछै पाऊ, शिव वचन शिव नारी। हनुमान के आन, महा-देव कै आन, गोरा-पार्वती के आन। नोना चमारिन के उतरि आउ, उतरि आउ।

(४) ॐ नमो समुद्र ! समुद्र में कमल, कमल में विष-हर बिछू उपजावे। कहूँ तेरी जाति—गरुड कहे मेरी अठा-रह जाति। छः कारी, छः काबरी, छः कँ कँ वान। उतर रे उतर, नहीं तो गरुड पङ्ख हङ्कारु आन। सर्वत्र विष न मिलई, उतर रे बिछू ! उतर। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच।

विधि : उक्त पहले तीन मन्त्रों की विधियाँ प्राप्त नहीं हैं। किसी को ज्ञात हों, तो कृपया 'चण्डी-कार्यालय' को लिखकर भेजें।

क्रम (४) की विधि इस प्रकार है—सबसे पहले 'शाबर - विधि' से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में मन्त्र को पढ़ते हुए बिच्छू द्वारा मारे गए डङ्क के स्थान के ऊपर के भाग पर अपना हाथ फिराए। दंश - युक्त व्यक्ति को लाभ होगा।

१०७. पागल कुत्ते का विष झारने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ८० क्रमाङ्क २५, भाग ३, पृष्ठ ५८, क्रमाङ्क २२, पृष्ठ ६४ और भाग ५, पृष्ठ २६, क्रमाङ्क ८ देखें। यहाँ कुछ अन्य प्रयोग दिए जा रहे हैं।)

(१) **ॐ नमो कामरू देश, कामाक्षी देवी। जहां बसै इस्मायल योगी। इस्मायल-योगी ने पाली कुत्ती। दश काली, दश काबरी, दश पीली, दश लाल। रङ्ग-बिरङ्गी दश खड़ी, दश टीको दै भाल। इनका विष हनुमन्त हरै, रक्षा करे गोरख-बाल। सत्य-नाम आदेश-गुरु को।**

विधि : पहले ग्रहण के समय उक्त मन्त्र को 'शाबर-विधि' से सिद्ध करे। 'जप' करते समय इष्ट-देव के पास तेल का दिया जलाए। लड्डुओं का भोग लगाए। बाद में जब किसी को पागल कुत्ते ने काटा हो, तो उसके घाव के चारों ओर उपलों की भस्म को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर ३ दिन तक लगाए। विष का निवारण होगा। जब तक लाभ न हो, तब तक करे।

(२) **कारी कुत्ती विविलारी। घौना कुत्ता, कलोर फलाला काटा। कुकुर वायु धप ल्यायु।**

(३) **शींगी भौरी मेवताशी, भोरे-भोरे दुर्गा दाशी। जेथाल सना ता पोखरा, गौरा पैठी नहाहि। महा-देव पठि फङ्कही। विष निर्विष हो जाय।**

विधि : क्रम २ और ३ की विधि इस प्रकार है—कुम्हार के चाक की मिट्टी को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर कुत्ते द्वारा काटे हुए

स्थान पर बार-बार फेरे। मन्त्र-जप करता रहे। जब घाव के स्थान पर कुत्ते के बाल दिखाई देते हैं, तब रोगी को लाभ हो जाता है।

(४) ॐ गान्धारी स्वाहा।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में विभूति को २१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और मन्त्र-स्मरण करते हुए पागल कुत्ते द्वारा काटे हुए स्थान के ऊपर लगा दे। विष दूर हो जाएगा।

(५) अकट कूकरा, विकट वान। विष कूँ झाडूँ, वारूँ वार। कोरा करवा, इब्रत नइया। गोरे ठोले, ईश्वर न्हाय। कुत्ता को विष उतर जाय। दुहाई महादेव-पार्वती की। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : कुम्हार के चाक की मिट्टी लाए। उसकी ७ गोलियाँ बनाए। गोलियों के ऊपर ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। बाद में उन गोलियों से ७ बार मन्त्र पढ़कर झारे। ३ गोली रोगी को दे तथा ४ अपने पास रखे। रोगी व साधक गोलियों के टुकड़े - टुकड़े कर बिखेर दे। उन्हें बिखेरते समय गौरा-पार्वती की दोहाई बोलता रहे। फिर कुचला और ताँबे के पैसे को घाव के ऊपर रखकर घाव को पट्टी से बाँध दे। अथवा गौरा-पार्वती की दुहाई पढ़कर ताँबे के दो पैसे और कुचला को पागल कुत्ते द्वारा काटे हुए स्थान पर रखकर पट्टी बाँधे। विष-निवारण होगा।

१०८. भूत-प्रेतादिक को दूर करने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ ४८ से ५०; भाग २, पृष्ठ ४८, ४६, ५१; भाग ३, पृष्ठ ३७, भाग ५, पृष्ठ १२, १३, २४, ४८ और भाग ६, पृष्ठ २७ देखें। यहाँ कुछ दूसरे प्रयोग दिए जा रहे हैं।)

(१) ॐ नमो आदेश गुरु को। आदेश, ईश्वर को आदेश। पवन-पूत बलवान हनुमन्ता। अपने सेवक के कार्य करन्ता। जहाँ सुमरे, तहाँ तू पहुँचता। श्रीरामचन्द्र की आन मान कर चले। श्रीलक्ष्मण की आन मान कर चले। माता सीता की आन मान कर चले। पिता केशरी की

आन मानकर चले। कहाँ को चले ? छाया को पकड़ने को चले। जिन्न - भूत को पकड़ने को चले। जिन्न-भूत-प्रेत-राक्षस-दैत्य को पकड़ने को चले। चले देव-दानव हर परी— इनको पकड़ने को चले। पकड़ कर लावै, बेग-बेग हाजिर करे। जो न पकड़ कर लावे, तो श्रीरामचन्द्र जी की दुहाई। ते माता सीता की दुहाई। पिता केशरी की दुहाई। माता अञ्जनी की दुहाई। राजा सुग्रीव की दुहाई। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : ४० दिन का प्रयोग है। एकान्त कमरे में हनुमान जी की मूर्ति या चित्र रखे। चित्र के सामने बैठे। प्रति - दिन ३-४ घण्टे जितना 'जप' हो सके, उतना करे। गिनती की आवश्यकता नहीं। जितना मन्त्र जपे, स्वस्थ चित्त से और अखण्ड ध्यान के साथ करे। सायं या रात 'जप' का समय एक रखे। प्रति-दिन नियत समय में ही 'जप' करे। पूजा में धूप, दीप, नैवेद्य, मौसमी फूल, नारियल, जल से भरा पात्र, सिन्दूर, लौंग और इलायची यथा - शक्ति रखे। पूजा में चढ़ाई हुई सभी वस्तुएँ प्रातः-काल नदी में बहा दे। दूसरे दिन सभी वस्तुएँ नवीन रखे। दीप के लिए मिट्टी की दियाली, धूप के लिए मिट्टी की धूप-दानी और जल भरने के लिए मिट्टी का कलश रखें, तो इससे नदी में बहाने में सुगमता रहेगी।

'नैवेद्य' में एक बड़ा लड्डू शुद्ध घी का बनाकर रखे, जिसे पूजन के बाद प्रसाद-स्वरूप ग्रहण करे। मङ्गलवार का आजीवन व्रत रखे। प्रयोग के समय भूत - प्रेत - ग्रस्त व्यक्ति को अपने सामने बिठाकर ११ बार उक्त मन्त्र पढ़कर झाड़े। भूत-प्रेत उतर जाएगा। पीड़ित व्यक्तियों की भलाई के लिए प्रयोग करे। यदि १ दिन में न हो, तो ३ या ७ दिन तक झाड़े।

(२) ॐ नमो काली कपाली देहि देहि स्वाहा।

विधि : पहले 'शाबर - विधि' से उक्त मन्त्र सिद्ध करे। अथवा पर्व-काल में १० हजार बार उक्त मन्त्र का विधि - सहित 'जप' करे।

मन्त्र - सिद्धि के बाद मन्त्र - जप का स्मरण करता रहे। आवश्यकता पड़ने पर 'प्रयोग' करे। जब बाधा-ग्रस्त व्यक्ति आए, तब खाद्य तैल या अन्य शुद्ध तेल मँगाए। तेल उसके सामने रखकर, उसके ऊपर ध्यान केन्द्रित कर तेल को १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। तेल को शरीर के ऊपर मसलने के लिए उसे दे। अथवा स्वयं ३ या ७ दिन बाधा-ग्रस्त को तेल लगाए। तेल लगाते समय मन्त्र का स्मरण करता रहे। कुछ दिनों में ही भूत - प्रेत की पीड़ा से छुटकारा हो जाएगा। दर्दी स्वयं भी मन्त्र का जप करे, तो ठीक रहेगा।

(३) सूत (सुत) बनावे बन बीच, आनन्द-कन्द रघुवीर।
लिए सिय सन्मुख महँ, होय धरि (धीर) मति-धीर ॥

तेही समय लखण तहँ आए।
पूछहि राम लखण बुलाए।
बोले हरि 'कवन (कथन) कारण तुम भाई ?
इत आवत बहु विलम्ब लगाई ॥'
लखण बोले 'गयउँ दूरि पहारा।
देखेउँ तहाँ भूत - दल झारा ॥
तहे एको मानुष न दिखाए।
निज आश्रम को छोड़ पराए' ॥
इतना सुन हरि बान चलायउ (चलावे)।
आगे भूत आनन्द गिरि भयउ (भवे) ॥
'अमुक' के अङ्ग नहीं भूत-भार।
राम के नाम से भट्ट (भई) समुद्र वार (समुद्र पार) ॥
आदेश श्री श्रीराम सीता की दोहाई।

(४) उत्तर बिराजे केदारनाथ के राजा।
हादिक शश-पीर पुकारे किए पूजा ॥

शश-शीर (शश-पीर) मक्का-मदीना के पीर।
काहे आए हिन्दु के मन्दिर।
अपना नाम रखो, अमुक को जली (जल्दी) छोड़ ॥

विधि : (१) मन्त्र (३) और (४) की विधि एक है। 'जप' इस प्रकार से प्रारम्भ करे कि 'विजय - दशमी' को 'जप' का २० वाँ दिन पूरा हो। तिथि-हानि या तिथि-वृद्धि कुछ भी हो, विजया - दशमी को मन्त्रानुष्ठान का बीसवाँ दिन होना चाहिए। २० दिन १ से १० माला मन्त्र जप करे। २० पूर्ण होने पर मन्त्र की सिद्धि होगी। 'अमुक' के या 'अमुक को' के स्थान पर बाधा-ग्रस्त व्यक्ति का नाम ले। ७ बार या ३ बार उक्त मन्त्र पढ़कर झाड़े या फूंके। भूत - प्रेत की बाधा का निवारण होगा।

(२) दूसरी विधि इस प्रकार है—पहले 'शाबर - विधि' से मन्त्र सिद्ध करे। सिद्ध किए मन्त्र से प्रेत-ग्रस्त को ३ बार मन्त्र पढ़कर फूंके अथवा झारे। ऐसा ३ दिन करे।

विशेष : मन्त्र (३) में राजा रामचन्द्र का चित्र रखना आवश्यक है।

१०८. प्रेतिनी या चुड़ैल भगाने का मन्त्र

(१) **बैर-बैर चुड़ैल पिशाचिनी बैर निवासी।**
कहूँ तुझे सुनु सर्व-नासी मेरी गाँसी (माँसी) ॥
पर वैल करे तू कितना गुमान।
काहे नहीं छोडती यह जान स्थान ॥
यदि चाहै तूँ रखना अपना (आपन) मान।
पल में भाग कैलाश लै अपनो प्रान ॥
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आदेश हाँडी दासी चण्डी की दुहाई ॥

(२) ॐ नमो आदेश गुरु का। कवला छरी, बावन वीर। कलू बैठनो जल के तीर। तीन पान का बीड़ा

खवाऊँ, बैठे-बैठा बतलाऊँ। वाचा चुके, तो कङ्काली की दुहाई। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : 'विजया - दशमी' के दिन या रात को उक्त मन्त्र का कम-से-कम १० माला जप करे। फिर आवश्यकता पड़ने पर उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़कर फूंके, तो प्रेतिनी, चुड़ैल, डाइन या पिशाचिनी आदि चली जाती हैं। 'शाबर - विधि' से मन्त्र कभी भी सिद्ध किया जा सकता है। ३ या ७ दिन तक, ११ या २१ बार मन्त्र पढ़कर झाड़े। अथवा जब तक चुड़ैल-पीड़ा रहे, तब तक झाड़े।

१०६. डायन की नजर झारने का मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ३, पृष्ठ १२, क्रमाङ्क ३ और पृष्ठ १३, क्रमाङ्क ७ देखें। यहाँ डायन की नजर झारने के अन्य मन्त्र दिए जा रहे हैं।)

हरि - हरि सुमरि के, हम मन करूँ स्थिर। चाउर आदि फेक के पाथर आदि वीर, डायन दूतन (दूतिन) दानिवी (दानवी) देवी के आहार। बालक - गण पहिरे हाँड गलाहार। राम-लषण दोनों (दूनो) भाई (भाइ), धनुष लिए हाथ। देखि डायनी भागत (मागत), छोड़ि (छोड़) शिशु माथ। गई पराय सब डायनी (डाइनी) - योगिनी। सात समुन्दर पार में, खावें खारी पानी। आदेश हाडी-दासी चण्डी माई। आदेश नैना योगिनी की दुहाई।

विधि : विजया-दशमी को सायं-काल से मन्त्रानुष्ठान प्रारम्भ करे। १०० माला जप करे। यदि पूरा न हो, तो दूसरे - तीसरे दिन करे। १०० माला जप करने से मन्त्र की सिद्धि होगी। बाद में प्रयोग करे। डाइन आदि की नजर लगे हुए व्यक्ति या बालक को नीम की टहनी या मोर-पङ्ख से झारे। ३ से ७ दिन तक झारने से बुरी नजर से छुटकारा हो जाता है।

(२) जल बांका, थल बांका, अमुक के काया बांका। डायनेर दष्टि पढ़न पानी, सुनो गोमाया अधर कहानी। समन काटि के माता दिहली। बर उज्जान छोडे भाडी। धर धूला बान, धूसर बान, शब्द-भेदी महा - बान। एहि मन्त्र पढ़ेंसे, ॐ श्रीराम हुङ्कारे।

विधि : पहले 'शाबर-विधि' से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में धूल या भस्म या सरसों अभिमन्त्रित करके बाधा-ग्रस्त को मारे, तो लाभ होगा।

११०. डाकिनी साधने का मन्त्र

(१) ॐ नमो चढ़ौ - चढ़ौ सूर - वीर धरती चढ़या। पाताल चढ़ पगा पाली चढ़या। कुण - कुण वीर हनुमन्त वीर चढया। धरती चढ़, पग-पात चढ़ी। एडी चढ़ी, मुरचे चढ़ी। मुरचे चढ़ी, पिण्डी चढ़ी। पिण्डी चढ़ी, गोड चढ़ी। गोंडा चढ़ी, जांघ चढ़ी। जांघ चढ़ी, कटि चढ़ी। कटि चढ़ी, पेट चढ़ी। पेट सूँ धरणी चढ़ी, धरणी सूँ पांसली चढ़ी। पांसली सूँ हिए च्रढ़ी, हिया सूँ छाती चढ़ी। छाती सूँ खम्बा चढ़ी, खम्बा सूँ कण्ठ चढ़ी। कण्ठ सूँ मुख चढ़ी, मुख सूँ जिह्वा चढ़ी। जिह्वा सूँ कान चढ़ी, कान सूँ आंख चढ़ी। आंख सूँ ललाट चढ़ी, ललाट सूँ सीस चढ़ी। सीस सूँ कपाल चढ़ी, कपाल सूँ चोटि चढ़ी। हनुमान नरसिंह चलै, वीर समद वीर, दीठ वीर, आज्ञा वीर, सों सन्ता वीर चढ़े।

विधि : ग्रहण की रात्रि में गोबर का चौका लगाकर घी का दीपक जलाए। एक पैर से खड़ा होकर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। इतने जप से डाकिनी सामने आ जाती है। उसको देखकर

डरे नहीं, तो वह बात करेगी। जिस काम के लिए उसे कहा जायगा, वह उसे अवश्य करेगी।

विशेष : आत्म-रक्षा का प्रबन्ध पहले कर ले, तब जप करे। जल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जल-रेखा बनाए और उसके बीच में बैठकर जप करे। 'हीसार के पाठ' के लिए 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के पिछले भाग देखें।

१११. अग्नि-स्तम्भन-मन्त्र

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ३७, क्रमाङ्क १०-११ और भाग ६, पृष्ठ ६१, क्रमाङ्क ४ देखिए। यहाँ 'शाबर' के कुछ अन्य प्रयोग दिए जा रहे हैं।)

(१) अज्ञान बाँधो, विज्ञान बाँधो, बाँधो घोर घाट। आठ कोटि वैसन्दर बाँधो, अस्त हमारा भाई। आने देखे झझके, मोंहि देखि बुझाई हनुमन्त। बाँधो पानी होइ जाय। अग्नि भपेत के भपे, जस मत्ती हाथी होई। वैसन्दर बाँधो, नारायण साखि। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले सिद्धि हेतु दो लाख जप करे। बाद में जल को अभिमन्त्रित कर मन्त्र - स्मरण कर जल छिड़के। अग्नि का स्तम्भन होगा।

(२) अग्नि बाँधो, बाहन बाँधो। कुल्यहा बाँधो, बांधा बीच की आयु। चाहिहुँ खुंटे, वैसन्दर बांधो। आतस मेरा भाप अधर देखे। उमगे हमहि देखे, शीतल होइ जाई। अग्नि भलि गणे। लकडी बांधो, बहिनी बांधो। शाल हाथ जरे न जिह्वा और अविनेत वीर की आज्ञा फुरे। देखि वायु-वीर हनुमन्त ! तेरी शक्ति, गुरु की भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : एक लाख जप कर 'शाबर - विधि' से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में ग्वार - पाठे (गुवार-पाठे) का रस हाथ पर लगाकर

अग्नि उठा ले, तो अग्नि-दाह नहीं होगा। ग्वार-पाठे का रस बार-बार लगाकर सुखाए, सूख जाने पर अग्नि उठाए, तो जलन नहीं होगी। अग्नि पर चलनेवाले लोग पाँव में ऊँचे तक यह रस लगाकर अग्नि के ऊपर चलते हैं—जलते नहीं। सचेत व सतर्क होकर करे, तभी प्रयोग ठीक रहेगा।

११२. अग्नि को शीतल करने का मन्त्र

ॐ नमो कोरा करुआ, जल सों भरिया, ले गौरा को शिर पर धरिया। ईश्वर ठोले, गौरा न्हाय। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र को सिद्ध करने के लिए एक लाख जप करे। फिर आवश्यकता होने पर अग्नि का शमन करने के लिए मिट्टी का एक कोरा कलश ले। उसमें जल भरकर अभिमन्त्रित करे। बाद में मन्त्र-स्मरण कर जोर-जोर से छीटे मारे। जहाँ-जहाँ छीटे लगेंगे, वहाँ अग्नि - शमन होगा। बाद में मन्त्र से १०८ आहुतियाँ दे और २१ ब्राह्मण को भोजन कराए।

११३. आगिया वैताल का मन्त्र

ॐ नमो अगिया वैताल, वीर वैताल। पैठी सातवें पाताल, लांव अग्नि की जलती झाल। बैठ बह्मा के कपाल, मछली-चील-कागली गूगल हरताल। इन बस्तां लै चोलि न चले, तो माता कालिका की आन। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : होली की रात्रि में उक्त मन्त्र का एक लाख 'जप' करे। चीलह, कागली तथा मछली का भोग लगाए। गुग्गल-हरताल का धूप बनाए और धूप करे। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाने पर २१ कङ्कड़ी को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जहाँ भी डाला जाएगा, वहाँ अग्नि प्रकट होगी।

विशेष : एक ही रात में एक लाख 'जप' करने का यद्यपि विधान है, फिर भी सूझ-बूझ से करे। मूल-देवता की पूजा कर साधना करनी चाहिए।

● ●

प्राचीन हस्त-लिखित पाण्डुलिपियों से प्राप्त :

शाबर-मन्त्र-साधना-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' पं० भूपेन्द्रदत्त शर्मा
१४५ नया बाँस, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)–२५१००२

'साधना'-क्षेत्र में 'शाबर-मन्त्र-साधना' का महत्त्व पहले भी रहा है और आज भी है, किन्तु वर्तमान समय में 'शाबर-मन्त्र-विद्या' के प्रति कुछ भ्रान्तियाँ हैं, जिनका निराकरण आवश्यक है। प्रायः देखा जाता है कि 'सेवड़े - विद्या' को ही अधिकांश लोग 'शाबर-मन्त्र' समझ बैठते हैं। अथवा शाबरी मन्त्रों का आश्रय लेकर बहुधा लोग तामसिक क्रियाएँ करते हैं और विभिन्न प्रकार से प्रचार - प्रसार कर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

ऐसा नहीं कि 'शाबर - मन्त्र - विद्या' असत्य है, किन्तु जो लोग स्वार्थ-वश अनर्गल प्रचार करते हैं, उनके द्वारा 'विद्या' असत्य सिद्ध होती है। कुछ को छोड़कर ऐसे लोग प्रायः धन के वशीभूत होकर कार्य करते हैं। इनके कार्यों में किसी भी प्रकार का उचित भाव प्रकट नहीं होता। ये आसुरी वृत्ति से आसुरी शक्तियों की पूजा करते हैं। ये प्रायः मन्त्र-मूठ (चौकी चढ़ाना, मारण—जिसको शाबरी भाषा में 'घाल' भी कहते हैं), जादू-टोना (वशीकरण) आदि कार्य स्वार्थ - वश करते हैं। झाड़-फूंक, भूत-प्रेत उतारना आदि भी इनके कार्य हैं। ये लोग लोना चमारी, गोगा पीर, कलुवा वीर, इस्माइल जोगी, भूत-प्रेतादि की आसुरी रीतियों से निर्जन स्थान, श्मशान अथवा अपनी सुविधानुसार सिद्धि-पूजा करते हैं।

उक्त आसुरी वृत्तिवाले साधकों के विपरीत यदि आदि-वासियों और बञ्जारों को देखें, तो हमें ज्ञात होता है कि वहाँ 'शाबर - विद्या' पूर्णतया विकसित है। आदि-वासी और बञ्जारे 'शाबर'-मन्त्रों की शक्ति द्वारा कठिन-से-कठिन कार्य सम्पन्न कर लेते हैं। ये किसी प्रकार के प्रचार-प्रसार के चक्कर में नहीं रहते। ये 'शाबर-मन्त्र-विद्या' के सच्चे साधक कहे जा सकते हैं।

शाबर मन्त्रों की सीमा

शाबर-मन्त्रों की शक्ति की भी एक सीमा होती है। यदि इस विद्या से लाभ हैं, तो हानि भी कम नहीं। मान लीजिए, कोई शाबर-मन्त्र साधक किसी व्यक्ति पर 'अभिचार' - प्रयोग, हनुमत वीर के माध्यम से कर रहा है और वह व्यक्ति भगवान् राम का उपासक है, तो यह निश्चित है कि राम-उपासक सुरक्षित रहेगा और प्रयोग-कर्त्ता स्वयं अपने किए हुए प्रयोग से सङ्कट-ग्रस्त हो जाएगा। तभी शाबर मन्त्रों के विषय में यह प्रसिद्ध है कि इनका प्रयोग जितनी सुलभता के साथ किसी पर किया जाता है, उतनी ही सरलता से प्रयोग लौट भी सकता है। शाबर - मन्त्रों के विषय में यह भी प्रसिद्ध है कि शाबर-मन्त्र-साधक को सर्व - प्रथम अपने प्राण - पिण्ड की सुरक्षा का प्रबन्ध अवश्य कर लेना चाहिए।

शास्त्रों में 'शाबर-मन्त्र-साधना' के प्रमाण

'शाबर-मन्त्र' प्राचीन, नवीन व क्षेत्रीय भाषा में तो हैं ही, साथ ही संस्कृत भाषा में भी हैं। 'शाबर - मन्त्र' का प्रसिद्ध ग्रन्थ "शाबर-चिन्तामणि" इसका प्रमाण है, जिसमें कुछ मन्त्रों को छोड़कर शेष सभी मन्त्र संस्कृत भाषा में हैं। यही नहीं, संस्कृत भाषा में रचे गए इन मन्त्रों को भी स्थानीयता प्राप्त है। प्रसिद्ध प्रामाणिक ग्रन्थ "मेरु-तन्त्र" में 'शाबर-मन्त्र' की 'पुरश्चरण'-विधि प्राप्त होती है।

'नाथ-सम्प्रदाय' में शाबर-मन्त्र-साधना-सिद्धि का सर्वाधिक प्रमाण मिलता है। कलि-काल में 'तन्त्र' के अनुचित प्रयोग के कारण भगवान् शङ्कर ने 'तन्त्र' को कीलित कर दिया था। ऐसा मत है कि जन-हित के उद्देश्य से 'नाथ - सम्प्रदाय' के आदि-गुरु मत्स्येन्द्रनाथ जी व गुरु गोरखनाथ जी ने शाबर-मन्त्रों की उत्पत्ति की थी। कहीं - कहीं यह भी कहा जाता है कि शाबर-मन्त्रों की उत्पत्ति शाबरनाथ जी ने की थी और इन्हीं के नाम पर ये मन्त्र 'शाबर - मन्त्र' के नाम से जाने जाते हैं, किन्तु ऐसा नहीं है (इस सम्बन्ध में श्री सुधीरकुमार जी का लेख 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ३३ देखें)। हाँ, यह अवश्य ज्ञात होता है कि सभी सम्प्रदायों में विभिन्न कार्यों के साधन हेतु शाबर-मन्त्रों की रचना हुई है। गोस्वामी तुलसीदास के कथन के पूर्व

शाबर-मन्त्रों की उत्पत्ति का श्रेय 'नाथ-सम्प्रदाय' के आदि-गुरु को ही दिया जाता था।

एक स्पष्टीकरण

प्राचीन शाबर - मन्त्रों के शब्द - समूहों पर दृष्टि डालने से जहाँ आस्था उत्पन्न होती है, वहीं नवीन मन्त्रों के शब्द - समूहों पर दृष्टि डालने से यह संशय उत्पन्न होता है कि क्या ये मन्त्र शक्ति-युक्त हैं या काल्पनिक रचना मात्र ? उदाहरण-स्वरूप, मेरे द्वारा ही प्रस्तुत किए गए मन्त्र ('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ १२३, क्रमाङ्क ४) में 'नम्बर'-शब्द है, जो नया—अंग्रेजी भाषा का है। ऐसे मन्त्रों में संशय उत्पन्न होना स्वाभाविक है। 'शाबर-मन्त्र-साधना' मेरा मार्ग नहीं, किन्तु मुझे कुछ मन्त्र साधकों से प्राप्त हैं और उनके द्वारा अनुभूत भी हैं। लोक-हितार्थ की भावना से ही मैंने ऐसे मन्त्रों को प्रस्तुत किया था। ऐसे मन्त्रों की सफलता साधक के धैर्य और विश्वास पर ही निर्भर रहती है।

'शाबर मन्त्र' जाग्रत करने की विशेष विधि

उक्त विधि मुझे गुरुदेव की कृपा से प्राप्त हुई है। विधि विचित्र है और सरल भी। जब हम 'शाबर' मन्त्र की साधना करते हैं, तो यह विश्वास रहता है कि प्रयोग के समय मन्त्र से सम्बन्धित कर्म अवश्य होगा, किन्तु प्रयोग करने पर जब यह कार्य नहीं होता, तो मन में मन्त्र के प्रति अविश्वास होता है और हम 'मन्त्र - विद्या' को दोष देने लगते हैं। यह उचित नहीं है। पहले साधक को इस 'मन्त्र-साधना' के नियमों को समझ लेना चाहिए (ऐसे नियम डा. एच. एम. तिवारी (दतिया) ने भाग २, पृष्ठ १७, श्री भैरवानन्दनाथ (सागर) ने भाग ५, पृष्ठ ८ पर एवं श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह ने भाग ७, पृष्ठ ५ एवं भाग ६, पृष्ठ ७ पर अपने लेख में दिए हैं)।

उक्त 'विशेष विधि' यह है कि जिस मन्त्र की साधना करनी है, उस मन्त्र को वायु में १०८ बार तीन दिनों तक लिखे। सौम्य मन्त्र को देव-स्थान या नदी-तट पर ब्राह्म-मुहूर्त में सूर्य की ओर (जिस दिशा में सूर्य उदय होता है—ईशान कोण) वायु में लिखे एवं क्रूर मन्त्र को रात्रि में श्मशान में दक्षिण की ओर मुख करके लिखे। यह अदृश्य

लेख सौम्य मन्त्र में अनामिका व क्रूर मन्त्र में तर्जनी से लिखा जाएगा। बड़े मन्त्र को ११ बार लिखा जा सकता है।

इस्लामी मन्त्रों में सौम्य मन्त्र के लिए मस्जिद (मुख भी सामने की ओर, समय पहली नमाज के बाद) में और क्रूर मन्त्र को कब्रि-स्तान के प्रवेश - द्वार पर) समय दोपहर अथवा सायं-काल का हो) वायु में लिखे। इस क्रिया में पूजनादि किसी भी सामग्री की आव-श्यकता नहीं।

अब हस्त-लिखित पाण्डुलिपियों से 'शाबर मन्त्र' व 'यन्त्र' प्रस्तुत हैं। क्रमाङ्क १४ तक के मन्त्रों की विधि और प्रयोग अज्ञात हैं—

१–हनुमान के अखाड़े का वीर मन्त्र : करो का वन चले। नटक व चटक से चले। बारह सौ वीर, चौदह सौ सान चले। न चले, तो हनुमन्त की दुहाई।

२–विद्या-प्राप्ति-मन्त्र : ॐ बागा-बागा वाग-वादनी स्वाहा।

३–कर्णश्वरी मन्त्र : ॐ करन-करन करनेश्वरी।

४–सर्व-कार्य-साधक काली-मन्त्र : काली - काली कलकत्ते-वाली। हरिद्वार में आकर डङ्का बजाओ। अमुक का काम करो, न करो तो दुहाई। दुहाई राजा रामचन्द्र, हनुमान वीर की।

५–डमरु-वादन-मन्त्र : ॐ सकल - धर वाष्टक सिद्धि - वृद्धि नीच कमलाङ्ग। जर सती सुमरो नाथ, भूत लिट कर, कपाट ठोगरी-रोगरी। घात फेबी राज सर सण्ठी जाल, कण्ठी माल भुजे भुजङ्ग प्रताप। सुख भव्य भैरव भो सुरुक ॐ ॐ क्रें क्रें ह्लीं ह्लीं फुः फुः हुं हुं हुं ठे ठे ठे ॐ।

६–कारण अघोर-मन्त्र : ह्लं कपाल का पात्र, मध भरा। देख अघोरी पीने खड़ा। जो पीवै कोई ई अघोरी पात्र, घूमै जा वही, आवै न उसे साँस। ये शब्द साँचा, घोर (अघोर) का वचन साँचा, पिण्ड काचा। दिखा रे अघोरी अपने मन्तर का तमाशा। हूं फट्, अघोर शिव-शङ्कर की दुहाई।

७–भूत-प्रेत-झाड़ा-मन्त्र : ॐ उजियारे देव बल - खण्डिनी भरत जाए, पुत्र वीर नाम धरो। हनुमन्त ताप - तिजारी, तारा बल्लियाँ डङ्कनी-सङ्कनी, भूत - प्रेत, जिन्द, मसान। छत्तीस हू दास, छत्तीस हूँ दास बलाय जाय। चौवटी मूठ उल्टी मारो, सीधी गिरै जर वरे। कर, भस्म बन निवरो, तोम तीन तारो बेल। फुरै जा जरा, ईश्वरा वाचा। मेरे गुरू का मन्त्र साँचा।

८–ज्वर-नाशक मन्त्र : ॐ नमो अजैपाल की दुहाई, जो ज्वर रहे, तो महादेव की दुहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

९–अग्नि - शमन - मन्त्र : ॐ नमो कोरा करावा, जल का भरिया। ले गौरा के शिर पर धरिया। ईश्वर ले गौरा नहाई, जलती अग्नि शीतल हो जाए। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

१०–दूध - वृद्धि - मन्त्र : थन बव्हारो, थन बार बव्हारो। बव्हारो अहीर की नोई, गाय - भैंस का दूध बव्हारो। पाचो पाण्डवो की दुहाई।

११–भूतादि को मारने का मन्त्र : ॐ नमो आदेश गुरू जी को। वीर बली हनुमन्त जी, मुद्गर दाहिने हाथ। मार - मार पछाड़िए पर्वत बाँएँ हाथ। भूत - प्रेत अख, डाकिनी, जिन्द, खईस, मसाण। इनमें बचे न एकहूँ, निरञ्जन निराकार की आन।

१२–गुप्त बात जानने का मन्त्र : गायब का पीर ! अगम की बात बताओ। न बताओ, तो माँ का दूध हराम, बहन के साथ करे हराम।

१३–मन्त्र : श्री विम्ह जी महाराज लिखते हैं कि आपको श्री रामचन्द्र जी की दुहाई है। श्री हनुमान जी की दुहाई है। श्री नृसिंह भगवान् की दुहाई है। श्री भैरो जी की दुहाई है। श्री आदि - शक्ति माता जी की दुहाई है।

१४–मन्त्र : हरि ॐ नमो शिवाय शिव गुरु रामाय।

उक्त चौदह मन्त्रों की साधना-विधि पाण्डुलिपियों में वर्णित नहीं है। पहला मन्त्र, हनुमान के अखाड़े के वीर का; दूसरा मन्त्र, विद्या-प्राप्ति का; तीसरा मन्त्र, एक हस्त-लिखित उर्दू भाषा के ग्रन्थ में है,

जो कर्णेश्वरी मन्त्र है। चौथा सर्व-कार्य-साधन-मन्त्र है, जिसके विषय में ग्रन्थ में चार लाख जप से सिद्धि लिखा है। पाँचवाँ डमरु - वादन मन्त्र है। छठा मन्त्र कारण-अघोर का है, ग्रन्थ में लिखा है कि कारण (मद्य) भरा पात्र साधक अपने सम्मुख रखकर 'जप' करे। 'जप' कैसे करना है और कितना करना है ? यह नहीं लिखा है और न ही प्रयोग के विषय में कुछ लिखा है। सातवाँ भूत-प्रेत का झाड़ा मन्त्र है, किन्तु ग्रन्थ में इस मन्त्र के आगे यह लिखा है कि पशु के पीछे पैर से लेकर मुँह तक डोरा नापकर उसकी छः लड़ करे। फिर मन्त्र पढ़कर दो गाँठ लगाए और पशु के बाँध दे। आठवाँ मन्त्र ज्वर-नाशक मन्त्र है, जिसके विषय में यह लिखा है कि दीपावली पर सिद्ध करके सात बार पढ़े। सिद्ध कैसे करना है और किस प्रकार कितना जप व कैसे प्रयोग करना है, यह लिखित नहीं है। यह 'मन्त्र - मार्तण्ड पञ्चाङ्ग' सम्वत् २०४५ के पृष्ठ ३१ पर दिया है। इसमें भी विधि-प्रयोग नहीं है।

१५—हनुमान का शाबरी मन्त्र—प्रेत - बाधा पर : हनुमन्त बड़े-बड़े, तरवन्त गर्लीमक बफज ले। लङ्का भेजूँ, राम का पढ़ाया, पान-फूल सौत खाया, अञ्जनी का जाया। हनुमन्त ! आवेश-आवेश।

विधि—किसी भी पर्व की रात्रि में भगवान् राम का स्मरण कर नदी या तालाब में नाभि तक पानी में खड़े होकर उक्त मन्त्र का पाँच हजार जप करे। तब पीली सरसों या साबूत उड़द के दानों को मन्त्र से अभिमन्त्रित कर प्रेत-बाधा से पीड़ित व्यक्ति पर मारे, तो प्रेत उस व्यक्ति को छोड़ देगा और भविष्य में भी वह व्यक्ति प्रेत-बाधा से पीड़ित नहीं होगा।

१६—शत्रु को पीड़ित करना : आर बाँधूँ-पार बाँधूँ, बाँधूँ मन माई। उसके नाम का हमजाद बाँधूँ, बाँधूँ हक दुहाई।

विधि—शनिवार या मङ्गल की रात्रि में कौओं के पङ्ख और मछली के जाल का तार लेकर एक जाल बनाए। उस जाल पर शत्रु का प्रतीक मानकर एक नीबू रखे। उस नीबू पर शत्रु का नाम काली स्याही से कौए के पङ्ख की नोक से लिख ले और नीबू में शत्रु के प्राणों की भावना कर, एक सुई अथवा कील घोंस दे। फिर जाल को

इस प्रकार इकट्ठा कर ले, जिससे नींबू उसमें उलझ जाए। इसके बाद पाँच हजार जप प्रत्येक रात्रि को एक सप्ताह तक करे। इससे शत्रु के प्राण सङ्कट में पड़ जाएँगे। यह प्रयोग निर्जन व सुरक्षित स्थान में करे। मन्त्र-जप करते समय अपना मुख शत्रु के घर की दिशा की ओर रखे और शत्रु का ध्यान करता रहे। दिन में शत्रु के प्राणों को हरने के लिए किसी भी स्थान पर कौओं को दानादि दे।

१७–कठिन कार्य पूरा करने के लिए : हन हार इबलीस हार !

विधि—पश्चिम दिशा में मुख करे। आसन नीला ले। गुग्गुल की धूनी देकर इस्लामी मन्त्र - साधना की रीति से एक माला जप चालीस दिनों तक रात्रि में करे। असम्भव कार्य पूरा होगा। मन्त्र-जप किसी भी दिन से आरम्भ करे।

१८–अङ्क-आकर्षण मन्त्र : (१) अस्सी मन चिन्ता। अस्सी सौ मन चिन्ता।

विधि—रात्रि में चारपाई पर सोते समय पाँच हजार जप करे। लाटरी-सट्टे का अङ्क स्वप्न में ज्ञात होगा। जप एक ही रात्रि में करना है।

(२) काला कलुवा, काला केश। काला भैरो, भुजला भेष। चलो गुरु, रामनारायण का आदेश।

विधि—किसी भी रात्रि में, अलग कक्ष में, भैरव जी के चित्र के सामने सरसों के तेल का चौमुखा दीपक जलाकर, काले कम्बल के आसन पर बैठकर, दो मिट्टी के पात्रों में मद्य भर कर रखे। रुद्राक्ष की माला से २१ माला जप २१ रात्रि तक करे। जप करने के बाद वहीं सो जाए। यह प्रयोग रात्रि में ही करना है। दिन में अपने दैनिक आवश्यक कार्य कर सकते हैं। यदि पात्र में मद्य बचा रहे, तो वह मद्य किसी बड़े पात्र में संग्रह करता जाए। २१ दिन के बाद उस मद्य को किसी सूखे स्थान में उड़ेल देना चाहिए। अनुष्ठान की अवधि में स्वप्न में सट्टे आदि के अङ्क ज्ञात होते रहेंगे।

(३) कामच्छा देवी ! जहाँ बसे इस्माइल जोगी, लोना चमारी वहाँ बसे। इस्माइल जोगी ने घड़ियाँ बनाई। जहाँ जाएँ, वहीं घड़ियाँ

खुलाएँ। नम्बर मेरे पास आए। दुहाई लोना चमारी की, दुहाई हज-रत सुलेमान पैगम्बर की।

विधि ज्ञात नहीं।

१६–शत्रु-मारण मन्त्र : बज्जर कोल्हू, बज्जर लाट। फलाने पे भैंरो चढ़ गए तीन सौ साठ।

विधि—रात्रि में भैरव-मन्दिर या श्मशान में जाकर यथोपचारों से भैरव जी का पूजन करे। उक्त मन्त्र का ११ हजार जप करे। तब गुड़ की बलि दे व मद्य चढ़ाए। ऐसा २१ दिनों तक करे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा।

जब प्रयोग करना हो, तो रात्रि में गुड़ व मद्य लेकर श्मशान में जाए। मन्त्र पढ़कर जलती चिता में ('फलाने' के स्थान पर शत्रु का नाम ले) गुड़ की बलि दे। एक जलता कोयला उठाए और उसे मद्य से बुझाकर उसका चूर्ण बना ले। इस चूर्ण को लेकर नदी के किनारे जाए और शत्रु का ध्यान करते हुए, मन्त्र पढ़कर, सात चुटकियों में वह चर्ण नदी में डाल दे। नदी में प्रत्येक चुटकी डालते समय मन्त्र पढ़ता रहे। ध्यान रहे कि हवा के कारण यह चूर्ण अपने ऊपर न गिर जाए। अतः जिस दिशा की हवा हो, उस दिशा में खड़े होकर (या अपने ज्ञान से सावधानी रखकर) यह प्रयोग करे। इस प्रयोग से शत्रु शीघ्र ही काल का ग्रास बन जाएगा।

२०–जोड़-तोड़ का शाबरी मन्त्र : गर्संत - गर्संत गर्संति गर्सा। हर शहरु गर लखन गर तन्त, गर मन्त, गर आँखें। गर्जन-गर्जन बहरु झण्डार, सुनोगी बरुन बन हरुन-हरुन, बस्सी घरुन तू लागू करतार। खेड़े या मोती उजगड़ पड़े, मुझ बुढ़िया दुनियादार। मारु डङ्का, उतरे डङ्का, मत कर लङ्का, करूँगा गुरु का सबक साँचा। बैठी मुनादई रानी, तू लाढ़ करे बसी पानी। पानी प्याऊँ चुल्लू तीन। काया रखूँ बस्सी को, छीन मगरी का पानी। औलादी चले ये मन्त्र मेरा बैग चले। किशन सुरूपी बन पहरुन निरबस घर जाऊँ। अरे देवता छेतरी! तू जन्नो अमावस की रात में, बावन तेरे बाप का, तू मेरा बाका राई, तू दान मत में मेरा, मैं वचन ना सेऊँ तेरा, काल का डाँट पड़े। बोल का साथी कोन? चन्द्रमा। देवता दीन के साथी होते

हैं, दिन के नहीं। काल का डाँट पड़े। बोल का साथी कोन ? सूर्य देवता। काल का डाँट पड़े। बोल का साथी कोन ? धरती माता। धरती माता बोल दे, बुलाए दे, बोल देती नहीं। राजा बासक की बैठी कचहड़ी। कोन-कोन बैठे हैं ? एक लाख चीहाड़ों में सवा पहर को आप ही बैठे हैं। अरे चीहाड़ो ! बस, कहाँ पाया ? बिस महवा, बिस खम्पा, बिस शिबया, बिस बङ्गाल। किशन सुरूपी बन पहरुन, निरबस घर जाऊँ। यह मन्त्र ईश्वर वाचा, मेरे गुरु का सबक साँचा, हो जावे बस गोबर माई।

विधि—उक्त मन्त्र एक साधक से प्राप्त हुआ। उन्होंने बताया है कि यह मन्त्र सभी प्रकार के अभिचार-प्रयोगों को जोड़ने व तोड़ने की क्षमता रखता है। इसे सिद्ध करने की विधि यह है कि किसी विशेष पर्व की रात्रि में साधक अपने इष्ट - देव की पूजार्चना करे। इसके बाद उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। नित्य-पूजा में इस मन्त्र को ११ या २१ बार अवश्य जप लेना चाहिए। इससे मन्त्र की ऊर्जा बनी रहेगी।

यदि किसी व्यक्ति पर 'अभिचार - प्रयोग' (मन्त्र - मूठ, चौकी, घाल—'शाबर-मन्त्र-प्रयोगों' की विशेष मारण-क्रिया) किया हो, तो उसे इस मन्त्र से तीन दिन तक झाड़ा दे। 'अभिचार-प्रयोग' नष्ट हो जाएगा।

अथवा 'अभिचार-प्रयोग' से पीड़ित व्यक्ति के ऊपर एक नए मिट्टी के बड़े पात्र में सात प्रकार की मिठाई, उड़द की दाल के कुछ भल्ले, एक नीम्बू, एक सुई, दो लौंग व थोड़ी-सी मद्य डालकर, उस सब पर सरसों के तेल का चौमुखा दीपक जलाए—दीपक में थोड़ा सिन्दूर डाल ले और तब मन्त्र पढ़ते हुए सात बार उतारा कर मन्त्रोच्चारण के बाद कहे—

"जैसा आया, वैसा जा। जहाँ से आया, वहाँ जा। जिसने भेजा, उसको जा—खा।"

इसके बाद उक्त 'उतारे' को उसी समय चौराहे पर रखवा दे। इस विधि से अभिचार-प्रयोग-कर्त्ता अपने ही भेजे गए प्रयोग के सङ्कट में पड़ जाएगा। यह कार्य रात्रि में ही करे।

कभी-कभी ईर्ष्या-वश या स्वार्थ-वश किसी को खाने-पीने की वस्तु में अभिचार - प्रयोग करके दे दिया जाता है (जैसे वशीकरण, आकर्षण—अपने वश में करने के लिए या अपनी ओर आकर्षित करने के लिए या फिर मारण - कर्म ही क्यों न हो)। ऐसे पीड़ित व्यक्ति को पानी में दो लौंग मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, पानी में डालकर पीने को दे। इसके बाद मन भरकर पानी पिलाए, तो अभिचार - प्रयोग नष्ट होकर उल्टी के द्वारा शरीर से बाहर आ जाता है।

२१—सर्व - कार्य - सिद्धि हेतु महा - काल भैरव मन्त्र :

ॐ ह्रीं महा-काल-भैरवाय नमः। ॐ ह्रीं महा-विक्राल-भैरवाय नमः।

विधि——सवा मुट्ठी चावल शनिवार की रात्रि में हल्दी व मीठा डालकर बना ले। प्रातः रविवार को इन मीठे चावलों को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर ले और छत पर रख दे। कुछ समय पश्चात् दो कौए आकर चावल खाएँगे। उनमें लड़ाई होगी। लड़ाई के समय इन कौओं में से किसी एक का पङ्ख गिरेगा। उसी समय वह पङ्ख उठा कर सुरक्षित रख ले। यात्रादि व कठिन कार्यों के लिए साथ में ले जाए, तो कार्य सिद्ध होगा। यदि पहले रविवार को इस प्रकार की घटना नहीं होती, तो पुनः विश्वास के साथ प्रयोग करे।

भूत-प्रेत-टोना झारने के मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री अरुणकुमार मिश्र
प्रवक्ता श्री शि. पू. इ. कालेज, मलसा, गाजीपुर (उ. प्र.)

विशेष : निम्न मन्त्रों की सिद्धि हेतु विजया - दशमी अथवा ग्रहण, दीपावली, होली भौमवार-युक्त अमावास्या की रात्रि में शुद्ध होकर घृत या तेल का दीपक जलाए। खीर का भोग लगाए। पूर्वा-भिमुख होकर यथा - निर्दिष्ट संख्या में अथवा संख्या - निर्देशाभाव में १०८ या १००८ बार जपे। जप 'रुद्राक्ष' या 'मिट्टी' की माला से करे। तत्पश्चात् मन्त्र का प्रयोग करे। मन्त्र-जप से पूर्व 'शाबर-सुमेरु-मन्त्र' का जप ७ बार करे और आत्म - रक्षा मन्त्र से आत्म - रक्षा कर मन्त्र द्वारा आसन-स्थान का बन्धन भी करे। 'जप' के समय लोबान का धूप करे। 'जप' के पश्चात् खीर बच्चों को बाँटे।

१. पृथ्वी तथा देह बाँधने का मन्त्र

मन्त्र : जल बाँधो, थल बाँधो। चार खूट की पृथ्वी बाँधो, माई धिया डायन बाँधो। बापा - पूता गुणी दुनिया को गुण बाँधो। दुहाई ईश्वर महा-देव गौरा-पर्वती क। जीरिया बङ्गालीन क छू॥

विधि : उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर चाकू से अपने चारों तरफ रेखा खींचे।

२. आसन बाँधने का मंन्त्र

मन्त्र : आसन बाँधो, पासन बाँधो। दश दुआर राम। सात नौका चरन बाँधो, गुरू बाँधे राम। अगुआर बाँधो, पछूआर बाँधो। बाँधो आपन काया, कान्हे कुण्डल योगिनी बाँधो। किसके दुहाई, गोरखनाथ की दुहाई॥

विधि : उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर अपने ऊपर फूँक मारे।

३. बाधा जानने का मन्त्र

मन्त्र : जन्म-भूमि नासिका नदी, तहाँ भे वीर हनुमन्त। कवने नक्षत्र, कवने वार। भादों महीना, मङ्गलवार। भरनी नक्षत्र, ज्ञान गुरू पटना स्वामी अर्द्ध। रोरी चले, नील चले। अष्ट-कुली नाग चले, नव-

कोटि इच्छा चले। पश्चात् कष्ट कालिका चले, भूत-प्रेत-पिशाच चले। ब्रह्म-राक्षस चले, शाकिनी-डाकिनी चले। न चले, तो माता अञ्जनी के दूध मिथ्या-मिथ्या। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥

विधि : रविवार या मङ्गलवार को रोगी को साफ-सुथरे स्थान पर स्वच्छ कर बैठाए। तत्पश्चात् कागज के सात छोटे टुकड़े कर, उन पर क्रम से — १ भूत, २ पिशाच, ३ ब्रह्म-राक्षस, ४ डाकिनी, ५ कुल-दोष, ६ बाह्य-दोष और ७ दैवी-दोष लिखकर लपेट कर अलग-अलग सात जगह रख दे। फिर रोगी के दोनों हाथों के ऊपर राम-रज मिट्टी लगा दे एवं रोगी के दोनों हथेलियों को जमीन से स्पर्श कराए। उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए राम-रज मिट्टी को रोगी के हाथ पर फेंके। जो दोष होगा, उस दोष के समीप उसका हाथ चला जाएगा।

४. भूत बकराने का मन्त्र

मन्त्र : भज भैरव, गोपाल भज। भैरव गोपाल, काशी के कोतवाल ! रक्षा करो। गौरी जलन सच्चा है, कुरान कोरा। घट-घट मटका गरा सब धवला है। गदाम फनन पड़े पाव आधे। गुरू की मत्री छोड़ी या गोरी क कलेजा काढ़ी। दुहाई ईश्वर महा-देव गौरा-पार्वती क दुहाई।

विधि : उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए धूर या अक्षत रोगी के ऊपर फेंकना चाहिए।

५. भूत बाँधने का मन्त्र

मन्त्र : जहाँ आए जो प्रेता, जो जादो वहाँ उल्टे-उल्टे जाओ। विद्या पलटे जाय ॐ ॐ ॐ। दुहाई कामाक्षा की, मेरी मन्त्र फुर होय। नोना चमारी क दुहाई। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। शति वन्दो गुरू के पाँव, इतनी बेर से जादो न रहे, घीले आवो। मोही दुहाई, ईश्वर महा-देव, गौरा-पार्वती क दुहाई ॥

विधि : उक्त मन्त्र पढ़कर एक हजार बासठ बार झाड़े। कैसा भी भूत होगा, बंध जाएगा।

६. सकल-कष्ट-निवारण-मन्त्र

मन्त्र : चलु-चलु रे बर - खण्डी राय, चोर न मुख से बाघ खाय। अचल गइलचा राम के, अचल राम के बान। चक्र - सुदर्शन

रक्षा करे, चौकी करे हनुमान। सत्य राम का मन्त्र है, सकल कष्ट गिरि जाय। कैसा हु कष्ट, श्वानादि भूतादि नष्ट ॥

विधि : उक्त मन्त्र को पढ़कर २१ बार झाड़े।

७. डायन-भूत-ब्रह्म आदि को झारने का मन्त्र

मन्त्र : इन्द्र रसी जल बान करे, झरा झाटी देवता गन्धेश्वर पलाय। दरवरी महा - धर्म ब्रह्म - भूत खोजे, गर गुड़ी अहङ्कार भूत पलाय। दुर्गे सात वारि बुके भरसाई, मुई फेलिल भवान डाइनेरे। सब डाइन के बोले, कून मालो वा सलाम बठे। जतक जीन जीवे, ततक जा कवरू कमइछा क दुहाई ॥

विधि : उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़कर कुशा से झाड़े। यदि सदैव के लिए लाभ चाहे, तो एक कबूतर (बनैला) लेकर उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़कर सिन्दूर से टीका करे। कामरू - कामाक्षा - स्थान अथवा किसी सिद्ध देवी के स्थान पर उसे छोड़ दे।

८. टोना झारने का मन्त्र

मन्त्र : लोरवा झोरवा, जादू हाक। चल - चल गुरू क वै कराव। जहाँ लगा हो, तहाँ लागो। मोर न विद्या, कवरू कमछाइ नैना जोगिन क सीख। जहाँ-तहाँ छार करे, उलटी वेग जाके परे, वा मती मसान काल-भैरव की दुहाई ॥

विधि : उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़कर कुशा से झाड़े।

९. भगवती काली की कृपा-प्राप्ति का मन्त्र

आश्विन-शुक्ला-प्रतिपदा से नवमी तक देवी का व्रत करे। निम्न मन्त्र का १०८ बार जप करे। यथा—

मन्त्र : काली-काली महा-काली कण्टक-विनाशिनी रोम-रोम रक्षतु सर्वं मे रक्षन्तु ह्रीं ह्रीं छा चारक ॥

विधि : जप के बाद उक्त मन्त्र पढ़कर १०८ बार 'आहुति' दे। घी, धूप, सरल काष्ठ, सावाँ, सरसों, चन्दन भूरा (सफेद), तिल, सुपारी, कमल - गट्टा, जौ (यव), लायची, बदाम, गरी, छुहारा, चिरौंजी, खाड़ मिलाकर साकल्य बनाए। सम्पूर्ण हवन - सामग्री को नई हाड़ी में रखे। भूमि पर शयन करे। समस्त जप-पूजन-हवन रात्रि में ११ से २ बजे के बीच करे। देवी की कृपा-प्राप्ति होगी। ● ●

कुछ अन्य असावरी शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सुधीरकुमार

बरौनी थर्मल पावर स्टेशन, ग्राम-चकिया, पो. बी. टी. पी. एस.,
जिला बेगूसराय (बिहार)–८५१११६

'शाबर-मन्त्र' अत्यन्त सरल भाषा में पाए जाते हैं। इनका कोई अर्थ नहीं होता। ये सभी बोली जानेवाली भाषाओं में पाए जाते हैं। इनका जन्म प्रायः सिद्ध साधकों के द्वारा होता है। यही कारण है कि शाबर मन्त्रों में प्रायः देवताओं को विकट आन दी जाती है। शाबर मन्त्रों को देखकर बाल-सुलभ चञ्चलता का स्मरण हो आता है। जिस प्रकार एक बालक हठ - पूर्वक अनर्गल बातें कहकर अपना काम निकाल लिया करता है, ठीक उसी भाँति स्वयं सिद्ध साधक शाबर मन्त्रों में अपनी समस्या को अपनी ही भाषा में कहते हैं और समस्या की पूर्ति न होने की स्थिति में एक हठी बालक की भाँति अनर्गल-सी आन कहते हैं। यह बात 'शाबर मन्त्रों' से स्पष्ट है। 'शाबर मन्त्र' को ऐसी भाव-पूर्ण बातें ही प्रभावकारी बनाती हैं।

कभी-कभी शास्त्रीय मन्त्रों के प्रभाव की कमी 'शाबर मन्त्र' बड़ी ही सफलता से पूर्ण करते हैं। इस कथन का यह अर्थ नहीं है कि शास्त्रीय मन्त्रों से कार्य नहीं होते। वास्तव में भारत में अनेक विद्याएँ हैं, जो अपने चमत्कार स्वतः सिद्ध करती रहती हैं। चमत्कारी विद्याओं में 'शाबर विद्या' भी है, किन्तु 'शाबर मन्त्र - विद्या' का उपयोग जन - हित के लिए ही करना चाहिए। दुरुपयोग करके सिद्ध 'शाबर मन्त्र - विद्या' की प्रतिष्ठा को हानि नहीं पहुँचानी चाहिए। नीचे कुछ 'असावरी शाबर मन्त्र' प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है कि पाठक-बन्धु इससे लाभ उठाएँगे।

१. गाछ हाँकने का मन्त्र

(१) गुलबरन देवी, लोमा सूर्य वरण देवी। कङ्काली सेर से सरमङ्गी चलल। असमाने चलेय, नाले चल। गाछे

चल, माथे चल। जहाँ चलावे, तहाँ चल। (अमुक स्थान) अमुक लाभी अस्त्रमारीला बान्धा करेजा खाए। रक्त क टोपी देह चिवाए। जाहि मारे, ताहि घर जाए। हाके मन्त्र करे, खोटी गुरु मारि। गुरु-विद्या लेती।

(२) वह छौड़ा रोना-भोना खुर-खुर आवे, खुर - खुर जाए। काढ़ कलेजा खाए। रक्तक टोपी देह चिवाए। जाहि घर मारे, ताहि घर जाए। हाके पर करे खोटी, गुरु-मारि गुरु-विद्या लेती।

विधि : पहले 'शाबर - विधि' से मन्त्र सिद्ध करे। फिर साव-धानी - पूर्वक किसी वृक्ष के निकट जाए और वृक्ष को स्पर्श कर उक्त मन्त्र का कम-से-कम २१ बार जप करे।

२. भूत पकड़ने का असावरी शाबर मन्त्र

गुर्जैर कु काली, हाथ मुरली, मदेन केश काली। चलल देश - विदेश। पैसल जो खोखरले आसार, पेस माराकर फाड़ल पेड़। भूत पकड़ दोहाय। ईश्वर महा-देव, गौरा-पारवती के छी।

विधि : सावधानी - पूर्वक उक्त मन्त्र पढ़कर भूत-बाधा-ग्रस्त व्यक्ति को कुशा से अथवा उसके बाल पकड़कर झाड़े। कम - से - कम २१ बार मन्त्र पढ़कर झाड़े।

शाबर-विद्वेषण मन्त्र

एक दुर्लभ पुस्तक के आधार पर :

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री महावीर पोद्दार
पो. वारा पलासी, दुमका (विहार)

विद्वेषण-मन्त्र

(१) "ॐ नमो कामाक्षाय, ॐ नमो महा - भैरवाय, श्मसान-वासिन्यै, 'अमुकामुक'योर्विद्वेषं कुरु कुरु क्रुं फट् ॥"

विधि : शनिवार के दिन बिल्ली और चूहे की विष्ठा एकत्रित करे। रात में पीपल के पेड़ के नीचे, निर्जन में, दक्षिण दिशा की ओर मुख कर आसन पर बैठे। बिल्ली और चूहे की विष्ठा को एक साथ मिलाकर एक छोटी पुतली बनाकर उक्त मन्त्र से १०८ बार उसे अभिमन्त्रित करे। फिर किसी नीले कपड़े से उस पुतली को ढँक दे और चुपचाप घर चला आए। जिन-जिन व्यक्तियों के नाम मन्त्र के 'अमुकामुक' के स्थान पर उच्चारण करते हुए जप किया जाएगा, उन लोगों में, चाहे वे पिता - पुत्र हों, पति - पत्नी हों, मित्र - मित्र हों अथवा भाई-भाई हों, आपस में महा-विद्वेष फैल जाएगा और जब तक शान्ति - मन्त्र द्वारा शान्त न किया जाएगा, तब तक विद्वेष की आग भड़कती जाएगी।

(२) "गृहीत्वा सिंह-अस्थि च, निखनेद् द्वारतो भुवि।
कलहो जायते नित्यं, विद्वेषं जायते सदा॥"

अर्थात् सिंह की हड्डी जिस शत्रु के घर-आँगन कहीं भी उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर फेंकी जाएगी, उस घर में कलह की आग फैल जाएगी और नित्य वाद-विवाद होने लगेगा।

(३) "गृहीत्वा मयूर-विष्ठां च, सर्प - दन्तं च पेषयेत्।
ललाटे तिलकं कृत्वा, विद्वेषो जायते क्षणात्॥"

अर्थात् १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित मयूर (मोर) की विष्ठा का चन्दन यदि साँप के दाँत से, किसी भी युक्ति से, शत्रुओं के ललाट में लगा दे, तो उनमें महा-विद्वेष फैल जाएगा।

(४) "गृहीत्वा गज-दन्तं च, गृहीत्वा सिंह - दन्तकम् ।
पेषयेन्नवनीतेन, तिलकं द्वेष - कारकम् ॥"

अर्थात् हाथी और सिंह के दाँत के चूर्ण को घी अथवा मक्खन के साथ पीस ले। फिर उसे १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रुओं के ललाट में लगाए। इससे उन लोगों में महा - विद्वेष भड़क उठेगा।

(५) "ॐ नमो कामाक्षाय, नमो कपालिनि वृश्चिकोदराय ! अमुकस्य अमुकेन सह विरोधं कुरु कुरु फट् स्वाहा।"

विधि : (१) पलाशस्य शुष्क - काष्ठं, गृहीत्वा प्रयतः सुधीः। क्रूकचेन चूर्णं कृत्वा, ततो शत्रु - गात्रे निक्षिपेत् ॥ अर्थात् पलाश की सूखी लकड़ी का चूर्ण बनाकर उसे उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर ले। जिन स्त्री - पुरुष के बीच विद्वेष कराना हो, उनके शरीर पर उक्त चूर्ण को छींट दे। तत्क्षण ही दोनों में झगड़ा हो जाएगा।

(२) मङ्गलवार के दिन कुम्हार के घर से एक हँड़िया ले आए। फिर १ खीरा लाकर रात्रि के समय किसी निर्जन स्थान में जाकर, दक्षिण दिशा की ओर मुख कर, आसन पर बैठे। उक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़कर छुरी से खीरे के दो खण्ड कर दे। तब उन दोनों खण्डों की तीनों फाँकों को छुरी से चीर कर अलग-अलग तीन जगह कर दे। इस प्रकार कुल छः फाँकें बन जाएँगी। उन फाँकों में से एक - एक फाँक को सात-सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर क्रमशः हँड़िया में रखता जाए। फिर तीन बार उक्त मन्त्र पढ़कर काले कपड़े से उसे ढँक दे और हँड़िया के चारों ओर चूना, काजल तथा सिन्दूर की लकीरें खींच कर किसी चौबटिया पर डाल दे। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। अब इसके द्वारा पूर्वोक्त विधि से शत्रुओं में विद्वेष उत्पन्न करे।

जिज्ञासाएँ

(१) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ३६ पर 'सन्तोषी माता का मन्त्र' दिया है। 'नव-नाथ-काल' में 'श्रीसन्तोषी माता' का नाम तक नहीं था। फिर यह मन्त्र प्रस्तुत-कर्त्ता को कहाँ से मिला ?

(२) प्रायः सभी देवी-देवता, गण, शक्तियाँ आदि के 'शाबर मन्त्र' मिलते हैं, परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण तथा भगवान् विठ्ठल के नहीं मिलते हैं। क्या कोई बन्धु इस विषय में प्रकाश डाल सकते हैं ?

(३) नाथ-पन्थ में तान्त्रिक पद्धति के न्यास नहीं हैं। फिर 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ५३ पर ऐसे न्यास क्यों दिए गए हैं ?

(४) 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ११३, 'अङ्क आकर्षण मन्त्र' – क्या यह मन्त्र सत्य है ? पूर्व - काल में जुआ अवश्य चलता था। शाबर मन्त्र जब प्रथम प्रस्तुत हुए, तब उनमें उस समय के शब्द आए हुए हैं। यदि जुए का ऐसा मन्त्र हो, तो उसमें 'सट्टा' शब्द के स्थान पर 'द्यूत' - शब्द आना चाहिए था। सट्टा, शुभाङ्क आदि शब्द आज के युग के हैं। साथ ही ऐसे मन्त्रों में 'शकुनी मामा' का उल्लेख भी उचित होता। 'सट्टे का नम्बर आ, नम्बर आने का बता' – ऐसी जो शब्द-योजना है, उसमें 'नम्बर'-शब्द कौन-सी भारतीय भाषा में प्रचलित था ?

(५) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ २५ पर 'शाबर-गुरु-मन्त्र' दिए गए हैं। प्रस्तुत-कर्त्ता सम्भवतः नाथ - पन्थ में दीक्षित नहीं हैं। 'गुरु-मन्त्र' नाथ-पन्थ में साधक के लिए पूर्णतः वैयक्तिक होता है। सब कुछ प्रकाशित हो सकता है, 'गुरु-मन्त्र' कदापि नहीं। दूसरी बात यह है कि 'नाथ-पन्थ' में साधक का स्तर देखकर उसे गुरु-मन्त्र दिया जाता है। प्रत्येक के लिए नाथ-भक्त, नाथ-साधक, सिद्ध-साधक तथा सिद्ध-योगी बीज अलग-अलग होते हैं। पृष्ठ २५ पर दिए गए 'गुरु - मन्त्र' किस प्रकार के साधक के लिए हैं, यदि प्रस्तुत-कर्त्ता प्रकाश डाल सकें, तो बताएँगे।

प्रश्न-कर्त्ता : श्री अनिलगोविन्द बोकील, १८/१ ड, गोंधलेनगर, पुणे

(शेष पृष्ठ १६० पर)

नजर, बुखार में राम-बाण : शावर

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री कृष्णप्रताप सिंह
सहकारिता बैङ्क, वाड्रफनगर, सरगुजा (म. प्र.)

मन्त्र : 'लोहार, लोहरवा की बेटी ! तोर बाप का करत हय ?' 'कोइला काटत हय ।' 'ओ कोइला का करी ?' 'छप्पन छुरा गढ़ी ।' 'ओ छुरा का करी ?' 'डीठ काटी, टोना काटी और काटी टापर ।' दोहाई गुरु धनन्तर की । लोना चमारिन की दोहाई । महा-देव पार्वती की दोहाई । दोहाई महावीर हनुमान की । तेंतीस कोटि देवतन की दोहाई । मेरी भक्ती, गुरु की शक्ती । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि : किसी भी 'एकादशी' को गुड़-घी का होम कर उक्त मन्त्र को सात बार पढ़ने से वह सिद्ध हो जाता है । नजर, बुखार आदि को उतारने की विधि यह है कि 'राई' या 'सरसों' लेकर रोगी के सिर से पैर तक झारे और 'राई' को अग्नि में डाले । एक बार पढ़े और एक चुटकी राई प्रत्येक बार मन्त्र पढ़कर अग्नि में डाले । इस प्रकार सात बार मन्त्र पढ़े और अग्नि में 'राई' छोड़ता जाय । तुरन्त ही नजर, ज्वर आदि का दोष उतर जाता है । बिलकुल 'राम-बाण'-जैसा फल-दायक यह 'शाबर मन्त्र' है ।

(पृष्ठ १५९ का शेष)

(६) 'शाबर - मन्त्र - संग्रह' में प्रायः ५६ कलुवा, ५१ भैरो, ६४ योगिनी, लाँगुरा का उल्लेख होता है । प्रश्न है कि ये कौन हैं ? यदि किन्हीं बन्धु को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी हो, तो कृपया लिखेंगे ।

—श्री श्यामसुन्दर शर्मा, मोती कटरा, आगरा-१ (उ. प्र.)

उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुओं की पोथी	२५.००
वर्ण-बीजाक्षर-साधना	४०.००
भैरवोपदेश	१००.००
अनुभूत साधना	२५.००
बीजात्मक सप्तशती	२५.००
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र	२५.००
दीक्षा-प्रकाश	३५.००
साधना-रहस्य	६०.००
स्वर-विज्ञान	७५.००
मन्त्र-कोष	३००.००
सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	३०.००
श्रीबगला-साधना, पुष्प १	६०.००
नव-ग्रह-साधना	१००.००
महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक	१००.००
महा-पर्व दीपावली-विशेषांक	४५.००
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०.००
श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प १ से ५	२००.००
श्रीयन्त्र-रहस्य	२०.००
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती)	४५.००
सप्तशती के विविध प्रकार	२५.००
श्रीबाला-कल्पतरु	३५.००
श्रीसूक्त-विधान	३५.००
श्रीरमा-पारायण	३५.००
श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प १ से ३	१२०.००
श्रीदुर्गा-साधना, पुष्प १ व २	५५.००
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प १ व २	७०.००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६